

प्रतिबन्धित  
(केवल विभागीय एवं सीमित प्रयोग के हेतु)

# राइफल एवं बैनट



सीतापुर

प्रकाशन विभाग  
महाराष्ट्र पुलिस प्रशिक्षण महाविद्यालय  
सीतापुर

**प्रकाशक**  
**प्रकाशन विभाग**  
**सशस्त्र पुलिस प्रशिक्षण महाविद्यालय**  
सीतापुर  
दूरभाष : 05862-244231

**प्रथम संस्करण** : 1969(1000 प्रतियाँ)  
**द्वितीय संस्करण** : 1971(1000 प्रतियाँ)  
**तृतीय संस्करण** : 2010(1000 प्रतियाँ)  
**चतुर्थ संस्करण** : 2010(10000 प्रतियाँ)  
**पंचम संस्करण** : 2016(45810 प्रतियाँ)  
**षष्ठम संस्करण** : 2018(25000प्रतियाँ)  
**मूल्य** : 31/—( एकतीस रुपये मात्र)

© समस्त अधिकार प्रकाशकाधीन

इस पुस्तक के प्रकाशन में पूर्ण रूप से सावधानी बरती गयी है और किसी भी प्रकार की त्रुटि के लिए प्रकाशक, लेखक एवं मुद्रक जिम्मेदार नहीं होंगे। विवाद के लिए क्षेत्राधिकार जिला सीतापुर होगा।

प्रकाशक

**मुद्रक :**  
श्रीआर्ट प्रिन्टर्स  
190/1286, पी. एल. शर्मा रोड  
मेरठ

**कम्प्यूटर कम्पोजिंग**  
श्रीआर्ट प्रिन्टर्स  
190/1286, पी. एल. शर्मा रोड  
मेरठ

---

**आई0एस0बी0एन0 नं0-978-81-910868-0-5**  
बिक्री का अधिकार सशस्त्र पुलिस प्रशिक्षण महाविद्यालय, सीतापुर  
दूरभाष नं. 05862-244231

राइफल तथा बैनट // 2

## भूमिका

उत्तर प्रदेश पुलिस के विभिन्न रैंक के कर्मचारियों एवं अधिकारियों के लिए प्रशिक्षण साहित्य उपलब्ध कराने में प्रकाशन विभाग, सशस्त्र पुलिस प्रशिक्षण महाविद्यालय, सीतापुर का महत्वपूर्ण योगदान रहा है। 'राइफल तथा बैनट' नामक इस पुस्तक का पहला संस्करण वर्ष 1970 में प्रकाशित हुआ था। इस पुस्तक को तैयार करने में श्री बी.सी. मिश्र तत्कालीन सेनानायक, सशस्त्र प्रशिक्षण केन्द्र, सीतापुर तथा उनके साथ नियुक्त अन्य अधिकारियों का सराहनीय योगदान रहा है जिनका उल्लेख पुस्तक के प्रथम संस्करण में किया गया है। कई वर्षों तक लगातार इस पुस्तक के नये संस्करण प्रकाशित होते रहे। यह पुस्तक की उपयोगिता एवं लोकप्रियता का परिचायक है। प्रकाशन विभाग, सशस्त्र पुलिस प्रशिक्षण महाविद्यालय, सीतापुर में इस पुस्तक का सबसे पुराना द्वितीय संस्करण उपलब्ध है, जिसका प्रकाशन वर्ष 1971 में हुआ था। उस समय इसका मूल्य 2 रुपये मात्र था। बाद के संशोधन होते रहे। इसका अन्तिम संस्करण वर्ष 2010 में प्रकाशित हुआ था। इसी वर्ष पुनः इस पुस्तक के नये संस्करण के प्रकाशन की आवश्यकता पड़ी। छपाई में जाने के पूर्व इस पुस्तक में कुछ आवश्यक संशोधन तथा बहुत सारी त्रुटियों में सुधार प्रतिसार निरीक्षक श्री निरंजन यादव के द्वारा परिश्रमपूर्वक किया गया, इसके लिए श्री निरंजन यादव की सराहना की जाती है।

यद्यपि पुलिस द्वारा आधुनिक राइफलें प्रयोग में लाया जाना शुरू हो चुका है। परन्तु सभी स्तर के पुलिस अधिकारियों एवं कर्मचारियों के आधारभूत प्रशिक्षण में शस्त्र प्रशिक्षण की शुरुआत तथा सशस्त्र ड्रिल की सिखलाई अभी भी .303 बोर की राइफल से ही की जाती है। प्रशिक्षण की दृष्टि से तथा क्षेत्र में कार्यरत पुलिस अधिकारियों के उपयोग के लिए यह पुस्तक अत्यन्त लाभकारी है।

आशा है कि यह पुस्तक प्रशिक्षणार्थियों, प्रशिक्षकों एवं अन्य अधिकारियों के लिए पहले की तरह ही उपयोगी सिद्ध होगी। इस पुस्तक में किसी प्रकार के संशोधन या नई सामग्री जोड़ने हेतु सुझाव का स्वागत किया जायेगा और अगले संस्करणों में उनको शामिल करने पर गम्भीरता से विचार किया जायेगा।



(विजय कुमार)

अपर पुलिस महानिदेशक/प्रधानाचार्य  
सशस्त्र पुलिस प्रशिक्षण महाविद्यालय  
सीतापुर- 261 001(उ०प्र०)

दिनांक : 5 फरवरी, 2016

# भूमिका

(प्रथम संस्करण)

राइफल तथा बैनट (R.B.) प्रशिक्षण की यह संक्षिप्त पुस्तिका प्रशिक्षण में प्रशिक्षकों व प्रशिक्षणार्थियों, दोनों की सहायता के लिए लिखी गयी है। जो प्रशिक्षार्थी सशस्त्र प्रशिक्षण केन्द्र में शिक्षा प्राप्त करने आते हैं उनका समय नोट लिखने में अधिक नष्ट न हो, इसी उद्देश्य से यह पुस्तिका लिखी गई है। हिन्दी का विशेष प्रयोग होने के कारण इस पुस्तिका में दैनिक प्रयोग के हिन्दी के साधारण शब्दों के समावेश का भरसक प्रयत्न किया गया है जिससे भाषा भी रोचक है तथा नये प्रशिक्षणार्थियों को सरलता भी होगी।

हमारे वाह्य प्रशिक्षण विभाग की मदद से उपरोक्त सभी कमियों को दृष्टि में रखकर तथा आधुनिक सिखलाई के आधार पर यह नवीन पुस्तिका लिखी गई है। जिसमें सर्वश्री कशमीर सिंह ने विशेष परिश्रम किया है। साथ ही शस्त्र शिक्षा में उपयोगी चित्र भी संकलित किये गये हैं। जिससे पुस्तिका में विशेष आकर्षण तथा उपयोगिता बढ़ी है। हमें आशा है कि अभी तक चल रही सारी कमियों को यह पुस्तक दूर करेगी और शस्त्र अभ्यास तथा जानकारी के लिए काफी उपयोगी सिद्ध होगी।

किशोरी लाल वत्स  
सेनानायक  
सशस्त्र प्रशिक्षण केन्द्र  
सीतापुर



## विषय-सूची

क्रम सं०	विषय	पृष्ठ सं०
1.	राइफल के हिस्से पुर्जों को खोलना जोड़ना तथा साइट लगाना।	6-8
2.	राइफल का रखरखाव (Care and cleaning)	10-12
3.	भरना और खाली करना (Loading and unloading )	13-17
4.	भर पोजीशन और राइफल की पकड़ (Laying position and hold)	18-22
5.	निशाना बाँधना (प्रथम) aiming। रेंज और फिगर तारगेटों पर।	23-27
6.	ट्रिगर पर काबू पाना।	28-30
7.	गोली फायर करना (firing a shot)	31-35
8.	तान-शस्त्र की पोजीशन लेना व राइफल को कूल्हे में जमा कर फायर करना।	36-39
9.	संगीन घोपना। (The point)	40-44
10.	निशाना बाँधना (द्वितीय) साइटों की बदली करना। (aiming II alteration of sight)	45-47
11.	दो बार संगीन घोपना (Two points)	48-49
12.	बोल्ट चलाना (Bolt manipulation)	50-53
13.	राइफल की और अधिक सफाई (Further cleaning)	54-55
14.	स्नैप शूटिंग। (Snap shooting)	56-58
15.	लगातार स्नैप शूटिंग (Continuous snap shooting)	59-61
16.	ट्रेनिंग स्टिक का प्रयोग। (Training stick)	62-65
17.	निशाना बाँधना (तृतीय)। (Aiming III)	66-69
18.	निशाना बाँधना (चतुर्थ)। (Aiming IV)	70-71
19.	खुले मैदान में दूसरी पोजीशन से फायर करना (Firing from other positions in the open)	72-75
20.	अपना बचाव। (Self Defence)	76-80
21.	नीची आड़ से फायर करना। (Firing from low cover)	81-84
22.	अन्य प्रकार की आड़ों से फायर करना। (Firing from other types of cover)	85-89
23.	हरकत करने वाले तारगेटों पर फायर करना। (Firing at moving target)	90-92
24.	सी0 क्यू0 बी0 फायरिंग। (Close quarter battle firing)	93-97
25.	राइफल की चाल। (Mechanism)	98-100
<b>परिशिष्ट</b>		
क.	राइफल की जीरोइंग।	101-103
ख.	राइफल का निरीक्षण तथा ट्यून अप और उसमें पाये जाने वाले आम नुक्स।	104-108
ग.	साधारण ग्रुप का सिद्धान्त और कोविंग।	109-117
घ.	चांदमारी, अनुशासन, बन्दोबस्त और कार्यवाही।	118-125
च.	चांदमारी की प्रतियोगिताओं में भाग लेना।	126-128

पाठ- 1  
**राइफल तथा बैनट**

---

**“राइफल के हिस्से-पुर्जों को खोलना-जोड़ना तथा साइट लगाना”  
(STRIPPING, ASSEMBLING AND SIGHT SETTING)**

1. **प्रारम्भिक कार्य**— स्क्वाड का निरीक्षण, राइफल पर बैनट चढ़ा हुआ।

2. **प्रबन्ध**— (राइफल नं० 1 मार्क iii और नं० iv मार्क i दोनों होनी चाहिए) राइफलों पर बैनट चढ़े हुए हों। स्क्वाड को लाइन में गिनती कराओ और बयान करो कि सदैव इस बात का विश्वास करना चाहिए कि तुरन्त फायर करने की आवश्यकता के अलावा राइफल भरी तो नहीं है। इसलिए दुर्घटनाओं से बचने के लिए राइफल का निरीक्षण कर लेना आवश्यक है।

3. **तरीका**— (नमूने के साथ नकल) सिखाए हुए तरीके से जाँच शस्त्र कराओ। विश्वास करो कि मैगजीन और चैम्बर खाली है प्रशिक्षक पहले अपनी राइफल का दाहिने वाले जवान से (मैगजीन, चैम्बर और बैरल का) निरीक्षण कराए फिर बोल्ट खुला रखते हुए स्क्वाड के सामने आने के बाद प्रशिक्षक बयान करें—

“जैसे ही मैं पहले जवान की राइफल का निरीक्षण करके तीसरे जवान के पास जाता हूँ तो पहले जवान का कार्य होगा कि वह बोल्ट चला की कार्यवाही करके” बाजू शस्त्र की दशा में आ जाय और सिलिंग ढीली करे। राइफल को दोनों घुटनों से दबाते हुए, पाँच खोलकर ड्रिल कार्टरिज निकाले और दोनों हाथों में इस प्रकार रखे कि उनका पैदा देखने वाले की तरफ हो। प्रशिक्षक अपनी राइफल जमीन पर रखकर अपने ड्रिल कार्टरिज का निरीक्षण दाहिने वाले जवान से कराये और फिर स्क्वाड की राइफलों और ड्रिल कार्टरिज का निरीक्षण करें।

4. **दोहराई**— नं० 1 और नं० 4 राइफल का नाम पूछो।

5. **उद्देश्य**— राइफल की पहचान, पुर्जों का खोलना और जोड़ना तथा साइट लगाना सिखाना है।

6. **सामान**— राइफल नं० I मार्क iii, नं० iv मार्क 1, बैनट और ड्रिल कार्टरिज।

7. **बयान**— राइफल के दुरुस्त रख रखाव के लिये हिस्से पुर्जों को खोलना पड़ता है। इस पाठ में राइफल को बगैर नुकसान पहुँचाये उनका खोलना तथा जोड़ना सिखाया जायेगा। चूँकि राइफल जवान का जातीय शस्त्र है इसलिये हर जवान को राइफल की विशेषतायें तथा अन्य बातें जानना आवश्यक है।

**विशेषतायें—**

- (i) इसकी सिखलाई आसान है जो अन्य शस्त्रों की सिखलाई के लिये अच्छी बुनियाद बनाती है।
- (ii) अच्छे फायर के द्वारा कास्गर रेन्ज के अन्दर किसी भी तारगेट को बर्बाद किया जा सकता है।
- (iii) राइफल से सही निशाना आसानी से लगाया जा सकता है।

(iv) राइफल हल्की व छोटी होने के कारण इसे दूर तक ले जाना आसान है साथ ही इससे अचानक दिशा बदल कर फायर करने में भी आसानी होती है।

(v) हर उस आड़ के पीछे जहाँ जवान अपने बदन को छुपा सकता है इसे भी छुपाया जा सकता है।

(vi) हमले के अन्त में बैनट चढ़ाकर निर्णायक युद्ध में सहायक होती है।

**8. सिखलाई का क्रम—** यह पाठ दो भागों में सिखाया जायेगा।

**9. भाग एक—** पुर्जों को खोलना व जोड़ना —

**पहचान—** (राइफल को हाथ में लेकर) राइफल को खोलने से पहले उसका नम्बर देखो। बोल्ट नाब लीवर के नीचे और बाड़ी पर बांये तरफ एक सा नम्बर होना चाहिए। अलग-अलग राइफलों की पहचान उनकी बाड़ी की लकड़ी के रंग को देखकर या खास चिन्हों को देखकर भी की जा सकती है।

**10. (अ) खोलना—** (नमूने के साथ नकल) राइफल की संगीन झिल के दौरान सीखे हुए तरीके से उतारो और म्यान से अलग करो। (दोनों प्रकार की संगीन उतारने का बयान करो।)

(ब) राइफल से सिलिंग अलग करो। पहले ऊपर से फिर नीचे से।

(स) **बोल्ट—** नम्बर 1 राइफल-बांये हाथ से राइफल को मैगजीन के थोड़ा आगे से पकड़ो। बोल्ट जहाँ तक खोलना सिखाया गया है, खोल दो। कलमें वाली अंगुली का हुक बना कर बोल्ट हेड को ऊपर उठाओ और बोल्ट को पीछे निकाल लो।

**n0 vi** राइफल के बोल्ट को खोलने के लिए लीफ बैक साइट को ऊपर उठाओ। बांये हाथ को मैगजीन के नीचे रखो। बीच की अंगुली रिटर्निंग कैच पर लगी रहे। रिटर्निंग कैच को दबाकर, बोल्ट को पीछे खींचकर बोल्ट हेड को ऊपर उठाओ और बोल्ट पीछे निकाल लो।

कनाडा की बनी हुई n0-4 राइफल का बोल्ट अलग करने के लिये बोल्ट हेड की कटी हुई झिर्श के बराबर बोल्ट को लाकर बोल्ट ऊपर उठाते हुए बाहर निकाल लो।

(द) **मैगजीन—** (दोनों राइफलों की एक जैसी खुलती है) मैगजीन कैच को दबाकर मैगजीन बाहर निकाल दो (मैगजीन का नम्बर पहचानना इस समय बताया जाय) मैगजीन को अंदर साफ करने के लिए मैगजीन स्पिंग को अलग किया जाता है।

(प्रशिक्षक नमूना दें) मैगजीन प्लेटफार्म के चौड़े भाग को दबाकर स्पिंग को बाहर निकाल दो। खास-खास पुर्जों के नाम और उनका काम बताओ।

**11. जोड़ना—** पुर्जों को जोड़ने के लिए खोलने की उल्टी कार्यवाही करो।

(अ) **मैगजीन—** मैगजीन और राइफल का नम्बर एक हो। इसका अगला भाग (यानी पतला भाग) पहले लगाओ और दबाकर पूरी तरह बैठा दो। खींच कर यह विश्वास करो कि मैगजीन पूरी तरह बैठ गयी है या नहीं।

(ब) **बोल्ट—** राइफल में यदि किसी दूसरी राइफल का बोल्ट लगा दिया जाय तो उसके फायर में अन्तर पड़ सकता है। इसलिए बोल्ट को लगाते समय इन बातों पर ध्यान दो।

(i) बोल्ट और राइफल का नम्बर एक हो।

(ii) बोल्ट हेड की चूड़ियाँ पूरी कसी हों और बोल्ट हेड रिब की सीध में हो।

(iii) काकिंग पीस और स्टील लग एक सीध में हो।

(iv) सेफटी कैच आगे हो।

**राइफल तथा बैनट // 7**

(V) यदि नं० IV राइफल मार्क-1 में बोल्ट लगाना हो तो लीफ बैक साइट ऊपर उठी हो।

**राइफल नं० I मार्क III** – ऊपर लिखी बातों को ध्यान में रखते हुये बोल्ट को दाखिल करके आगे बढ़ाओ कि बोल्ट हेड राइफल की बाडी पर बनी हुई खाली जगह के सामने आ जाय। इसके बाद बोल्ट हेड को इतना दबाओ कि क्लिक की एक आवाज सुनायी दे। वोल्ट नाब लीवर को आगे और नीचे की ओर ढकेलो। (ट्रिगर मत दबाओ।)

**राइफल नं० IV**— बाये हाथ से रिटर्निंग कैच को दबाओ और बोल्ट को लगाओ। बोल्ट हेड पूरा नीचे को दबा कर बन्द करो। (ट्रिगर मत दबाओ)

कनाडियन राइफल नम्बर 4— बोल्ट “बोल्टवे” में दाखिल करो। बोल्ट हेड दाहिने नीचे की तरफ घुमाओ। बोल्ट हेड यहाँ तक आगे करो कि वह कटे हुए भाग की सीध में आ जाय।

बोल्ट हेड को नीचे दबाते हुए बोल्ट बन्द करो (ट्रिगर मत दबाओ) ट्रिगर दबाने की पूरी सिखलाई बाद में बताई जाएगी। मगर इस समय अनुभव करो कि ट्रिगर में दो दबाव है। क्लास को दो दबाव का अनुभव कराओ। सेपटी कैच लगाओ।

**स. सिलिंग**— पहले नीचे से पीतल की चौड़ाई के बराबर लगभग दो इन्च रखते हुए लगाओ और ऊपर से मुनासिब ढीला रखते हुए लगा दो।

**द. बैनट और म्यान**— दोनों प्रकार की राइफल के बैनट झिल की सिखलाई के दौरान सीखे हुये तरीके से लगाये जाते हैं।

**12. अभ्यास**— स्क्वाड को दूर भेज कर पुर्जे बदली करो और खोलने जोड़ने का अभ्यास लो।

**13. सेपटी कैच**— (बयान के साथ नमूना) जब सेपटी कैच लगा होता है तो बोल्ट नाव लीवर को ऊपर उठाने से और ट्रिगर दबाने से कोई हरकत नहीं होती है, इससे स्पष्ट है कि सेपटी कैच राइफल में ताले का काम देता है।

**ब. राइफल का हॉफ कॉक होना और उसका उपाय**—

(बयान के साथ नमूना) राइफल के हॉफ कॉक होने के दो कारण हैं—

- (i) बोल्ट नाव लीवर का पूरा दाहिनी तरफ न बैठा होना और ट्रिगर दबा देना, पुनः बोल्ट नाव लीवर को बैठाना।
- (ii) सेपटी कैच का पूरा आगे न होना और ट्रिगर दबा देना, पुनः सेपटी कैच को आगे करना।

**स. राइफल हॉफ कॉक होने की पहचान**—

- (i) ट्रिगर नहीं दबता।
- (ii) बोल्ट नाब लीवर ऊपर नहीं उठता।
- (iii) सेपटी कैच काम नहीं करता।

**द— हाफ काक दूर करने का उपाय**— काकिंग पीस को पूरा पीछे खींचो, बोल्ट को खोलो। विश्वास करो कि चैम्बर और मैगजीन खाली है बोल्ट बन्द करो। यकीन करो कि सेपटी कैच पूरा आगे है और ट्रिगर दबाओ। अगर फायर के दौरान राइफल हाफ काक हो जाय तो पहले की तरह हाफ काक को दूर करने की कार्यवाही करो फिर से भर कर फायर आरम्भ करो।

**14. अभ्यास**— प्रश्न-उत्तर से करो।

**15. भाग दो**— साइट लगाना—



(स्क्वाड प्रशिक्षक के दोनों तरफ)

**अ-राइफल नम्बर 1-** इस पर 200 गज से 2000 गज तक साइट लगाई जा सकती है। राइफल की बैक साइट पर अलग-अलग रेन्जों के लिये गजों के चिन्ह बने होते हैं। स्लाइड की लाइन को लीफ पर बने हुए निशान की सीध में लाकर बैक साइट पर कोई भी रेन्ज लगाया जा सकता है। वर्म व्हील को घड़ी की सुइयों के अनुकूल घुमाने से साइट बढ़ता है और प्रतिकूल घुमाने से साइट कम होता है। (नमूना)

**ब. राइफल नम्बर 4-** के बैक साइट के एडजस्टिंग स्क्रू को घड़ी की सुइयों के अनुकूल घुमाने से साइट बढ़ती है और प्रतिकूल घुमाने से घटती है। (नमूना)

**स. राइफल नम्बर 4-** मार्क-II साइट के कैच को दबाने से स्लाइड नीचे ऊपर हरकत करता है। और लीफ पर कटे हुए निशानों के अनुकूल रेन्ज लगाया जा सकता है (नमूना) इन राइफलों पर 200 गज से 1300 गज साइट लगाया जा सकता है।

**द. राइफल नम्बर 5-** नं० 4 मार्क 1 की तरह ही होती है। इस पर साइट केवल 200 गज से 800 गज तक ही बनी होती है।

**16. अभ्यास** — 500 गज तक साइट लगाने का अभ्यास लो।

**17. संक्षेप-** पाठ की मोटी-मोटी बातें बताओ।

**18. आखिरी काम-** स्क्वाड का निरीक्षण और स्वस्थान।

व व व

## पाठ-2

### राइफल का रख-रखाव (ठिफाजत और सफाई) ¼CARE AND CLEANING½

**1. प्रारम्भिक कार्य—** राइफल व स्क्वाड का निरीक्षण (सवाल राइफल में किन-किन बातों का ध्यान रखना चाहिये)।

**2. प्रबन्ध—** हर एक जवान को सफाई का सामान पहले से ही बाँट दो। तेल की बोतल और पुल थू राइफल के बट में हो।

**3. दोहराई—** राइफल को खोलने और जोड़ने की। अन्त में राइफलें जुड़ी हुई हो।

**4. उद्देश्य—** राइफल की सुरक्षा और सफाई करना सिखाना है।

**5. सामान—** राइफल, तेल, फलालेन की चिन्दी, कच्चा सूत या कपड़ा, चैम्बर स्टिक और पुलथू और आयल बोतल।

**6. बन्दोबस्त—** हर एक जवान को सफाई का सामान पहले से दिया हो।

**7. बयान—** हमला और बचाव करते समय दुश्मन को बर्बाद करने के लिए राइफल ही पुलिस फोर्स का सबसे बड़ा हथियार है। राइफल से काम लेने की योग्यता दो बातों पर निर्भर होती है। एक तो राइफल की अच्छी हालत और दूसरे फायर करने वाले की योग्यता। राइफल की अच्छी हालत का दारोमदार अच्छे रख रखाव पर है। इस पाठ में यही सिखाने का प्रयत्न किया जायेगा।

वैसे तो राइफल इतनी मजबूत बनी होती है कि लड़ाई के दौरान इससे कठिन काम लिया जा सकता है। परन्तु यदि इसके रख-रखाव में लापरवाही बरती गई तो यह ठीक हालत में नहीं रहेगी और लड़ाई के दौरान इससे दुरुस्त काम करने का भरोसा नहीं किया जा सकेगा।

इसलिए आवश्यक है कि जवान राइफल की सफाई और सही रख रखाव को अपनी आदत में शामिल कर ले। जिस प्रकार कि शरीर के विभिन्न अंगों को जीवन भर ठीक रखने के लिये, उनकी नियमित रूप से सफाई और देखभाल आवश्यक है उसी प्रकार राइफल से लड़ाई और चाँदमारी में अच्छे परिणाम हासिल करने के लिए इसकी रोजाना की सफाई और देखभाल आवश्यक है।

**8. सिखलाई का क्रम—** पाठ 2 भागों में सिखाया जायेगा।

**9. भाग एक—** बट ट्रिप का खोलना, पुलथू का बयान और प्रयोग—

**अ. तैयारी—** (बयान के साथ नमूना और नकल)—सीखे हुए तरीके के अनुसार राइफल के हिस्से पुर्जे खुलवाओ। (अपनी राइफल को भी खोलो) बट ट्रिप का खोलना, पुल थू और आयल बोतल निकालना बताओ। बट ट्रिप को किसी राउन्ड या नोकदार चीज़ से खोलो, इसके बाद पुलथू को खोल दो और उसे अँगुलियों के बीच से गुजारो ताकि यदि कुन्डली या गॉट पड़ गई हो या रेत या मैल लग गया हो तो साफ हो जाय।

**ब. पुल-थू—**(बयान करो) पुल-थू में तीन फन्दे होते हैं। वेट की तरफ वाला फन्दा वायर गेज के लिये बीच वाला चिन्दी के लिए और अन्त वाला फन्दा आर्मेसर और तेल की चिन्दी के लिए इस्तेमाल होता है। (नमूना के साथ नकल) 10 सेमी0 लम्बी और 5 सेमी0 चौड़ी (4"X2") चिन्दी का टुकड़ा फाड़ो। उसको दो तह करके पुल-थू के बीच वाले फन्दे में लगाओ।

**स. पुल थू का प्रयोग—** (नमूना के साथ नकल) पुल-थू का पीतल वाला भाग (वेट) बैरल में ब्रीच की तरफ से बोल्ट में से डालो। राइफल की मजल को नोज कैप के जरा नीचे से मजबूती से पकड़ करके टो बट को जमीन पर टिका दो। अब निगाह को मजल पर रखते हुये पुल-थू को इतना



खींचो कि चिन्दी चैम्बर में आ जाय। अब बांये हाथ का अँगूठा मजल पर रख फालतू रस्सी को दाहिने हाथ पर लपेट लो। निगाह को मजल पर और बांये हाथ की हथेली के बराबर रखते हुए एक ही खिंचाव से पुल थू को खींच लो (देखे चित्र 1) यह ध्यान रहे कि रस्सी मजल के किसी भी भाग से रगड़ न खाए। अगर यह सावधानी न बरती गई तो मजल के अन्दर वाली सतह रस्सी की रगड़ से खराब हो जायेगी। जिससे राइफल में कार्ड वियर (Card Wear) हो जाएगा और इससे निशाने की दुरुस्ती में अन्तर आ जायेगा और राइफल में गोलियों का गुप बनाने की क्षमता नहीं रहेगी। (पुल-थू दूसरे व्यक्ति की मदद से कभी न खींचो)



चित्र नं० 1 – पुलथू खींचना

#### **10. भाग दो— रोजाना की सफाई—(नमूना के साथ नकल)**

**अ. बैरल की सफाई—** सीखे हुए तरीके से बैरल साफ करो और जब भी आवश्यक हो तो चिन्दी को बदलो।

#### **ब. चैम्बर की सफाई—(चैम्बर स्टिक का प्रयोग)**

**चैम्बर स्टिक—**चैम्बर को साफ करने के लिये प्रयोग में लाई जाती है इसके कटे हुए भाग में 10 से0मी0 लम्बी और 5से0मी0 चौड़ी अर्थात 4"X 2" चिन्दी लगा कर स्टिक पर लपेटो। इस प्रकार ढकी हुई स्टिक को चैम्बर में दाखिल करो। विश्वास करो कि सेपटी कैच आगे है। अब जिस रूख चिन्दी लपेटी है स्टिक को उसी रूख घुमाओ। आवश्यकता हो तो चिन्दी की बदली करो।

#### **स. बैरल व चैम्बर का निरीक्षण—(नमूना के साथ नकल)**

सफाई के बाद निरीक्षण करो। बैरल का निरीक्षण करने का सबसे अच्छा नियम यह है कि क्रीच वाले सिरे को उस तरफ करो जिधर से प्रकाश आ रहा हो या कोई सफेद वस्तु हो, मजल वाले सिरे को अन्दर से देखते हुए आंख के करीब लाओ। फिर सिर को धीरे-धीरे पीछे करके भली प्रकार देखो कि मुब्जों और

लैन्डों में मैल, मिट्टी या धाती मैल तो नहीं है। निरीक्षण करते समय केवल यह विश्वास कर लेना ही काफी नहीं है कि आर-पार दिखाई देता है। अपितु बैरल की भीतरी सतह का भली प्रकार निरीक्षण करो फिर राइफल को उल्टा करके ब्रीच की ओर से निरीक्षण करो।

**द. बैरल में तेल लगाना**—साफ चिन्दी का 4 इंच लम्बा  $1\frac{1}{2}$  इंच चौड़ा टुकड़ा लो और उसे तेल में भिगो दो। तेल में भिगोने से पहले देख लो कि चिन्दी में कहीं मैल या मिट्टी तो नहीं लगी है। चिन्दी का यह टुकड़ा सूखी चिन्दी के टुकड़े से छोटा रखा गया है ताकि जब इसे बैरल में दाखिल किया जाय तो तेल निचुड़कर बाहर न बह जाय। अब सीखे हुए नियम से तेल में भिगोई हुई चिन्दी को पुल-थू में लगाकर बैरल से गुजारो यह कार्यवाही कम से कम दो बार करो।

**य. बोल्ट-वे में तेल लगाना**— इसके लिये चैम्बर स्टिक का प्रयोग करो।

**राइफल की बाहर से सफाई**— राइफल के बाहरी भाग से तमाम मैल मिट्टी साफ करो। धातु वाले भागों पर हल्का तेल लगाओ। राइफल की तमाम झिर्सी और सुराखों को भली भाँति साफ करो। इसके लिये पाइप क्लीनर या किसी पक्षी का पंख प्रयोग करो।

**ल. बोल्ट**— बोल्ट के तमाम हिस्सों से मैल मिट्टी साफ करो। लॉग केम और शार्ट केम के गुब्बों और एक्सट्रैक्टर के बैठने की जगह का विशेष ध्यान रखो। राइफल के किसी भी भाग को किसी खुरदुरी वस्तु से जैसे रेगमार्क कागज आदि से कभी न साफ किया जाय।

**ब. मैगजीन**— इसको बाहर से साफ करो। सफाई में मामूली तेल लगे कपड़े का प्रयोग करो। साधारणतया मैगजीन को रोज़ाना खोलकर साफ करने की आवश्यकता नहीं है। अगर आवश्यकता हो तो खोल कर भी साफ कर सकते हैं।

**स. बैनेट और उसकी म्यान**— मैल-मिट्टी साफ करो। फल को साफ करने के लिये मामूली तेल लगा कपड़ा प्रयोग करो।

**ह. हिस्से पुर्जों को जोड़ना**— राइफल के हिस्से पुर्जों को खोलने और साफ करने का काम ऊपर लिखे क्रम से ही करना चाहिये। परन्तु उचित होगा कि बोल्ट और मैगजीन को साफ करते ही जोड़ दें। इस तरह साफ किये हुए बोल्ट और मैगजीन में दुबारा मैल मिट्टी नहीं जा सकेगी। (अब राइफल जोड़ दें)

**च. पुल-थू**— (पुल-थू आयल बोतल का बन्द करना।)

पुल-थू की रस्सी को मुट्टी में इस प्रकार पकड़ो कि उसका एक सिरा एक इन्च तक सबसे छोटी अँगुली की तरफ बाहर निकला हो। अब रस्सी को हाथ पर ढीला लपेटो और इस लच्छे को हाथ से उतार कर बाकी रस्सी को उसके चारों ओर कस कर लपेट दो लेकिन रस्सी का इतना हिस्सा अवश्य छोड़ दो कि वजन वाले सिरे को बट ट्रिप में उसके विशेष सुराख में डाला जा सके। अब तेल वाली बोतल को बट ट्रिप में डाल दो। अब पुल-थू का वेट छोटे छेद में डालकर बट ट्रिप को बन्द करो।

**10. अभ्यास**— प्रति दिन की सफाई पर प्रश्नोत्तर।

**11. सुरक्षा का बयान**— बयान करो कि राइफल को कभी किसी मकान दीवार या दरख्त के सहारे खड़ा न करो। यदि राइफल को रखने के लिये खास तौर के बने हुए रैक उपलब्ध न हों तो जमीन पर ऐसे स्थान पर रखना चाहिये जहाँ किसी की टोकर न लगे, और न कोई उसके ऊपर से गुजरे। यदि जमीन साफ न हो तो ऐसे स्थान पर खड़ा करो जहाँ से गिरने का भय न हो।

**12. अभ्यास**— प्रश्नोत्तर द्वारा।

**13. संक्षेप**— पाठ की मुख्य-मुख्य बातें दोहराओ।

**14. आखिरी काम**— क्लास का निरीक्षण व स्वस्थान।

व व व

राइफल तथा बैनेट // 12

**पाठ 3**  
**भरना और खाली करना**  
(LOADING AND UNLOADING)

---

**1. प्रारम्भिक कार्य—** स्क्वाड, राइफल और ड्रिल कार्ट्रिज का निरीक्षण करो।

**2. दोहराई—** सफाई और सुरक्षा पर प्रश्नोत्तर।

**3. उद्देश्य—** एम्युनेशन की सफाई, चार्जर का भरना, राइफल का भरना और खाली करना सिखाना है।

**4. सामान—** राइफल, ड्रिल कार्ट्रिज, साफ कपड़ा व दर्सी।

**5. बयान—** लड़ाई में राइफल को तेज और दुरुस्ती से भरने की योग्यता अति आवश्यक है जिससे समय की बर्बादी रोकी जा सके।

**6. सिखलाई का क्रम—** पाठ 2 भागों में सिखाया जायगा।

**7. भाग एक—** एम्युनेशन की सफाई व चार्जर भरना।

अ. (बयान करो) चार्जरों को जंग से बचाने के लिये उन पर काला तेल लगा होता है, परन्तु तेल के कारण मिट्टी जम जाती है जो एम्युनिशन् में लग कर चैम्बर में पहुँच जाती है। यह गन्दगी चैम्बर में राउन्ड को आसानी से आने-जाने में रुकावट पैदा करती है। तेज फायर करते समय जो रुकावट पड़ती है उनमें से बहुत सी खराबियों का कारण एम्युनेशन का गन्दा होना और चार्जर का ठीक भरा न होना होता है। (नमूना के साथ नकल)।

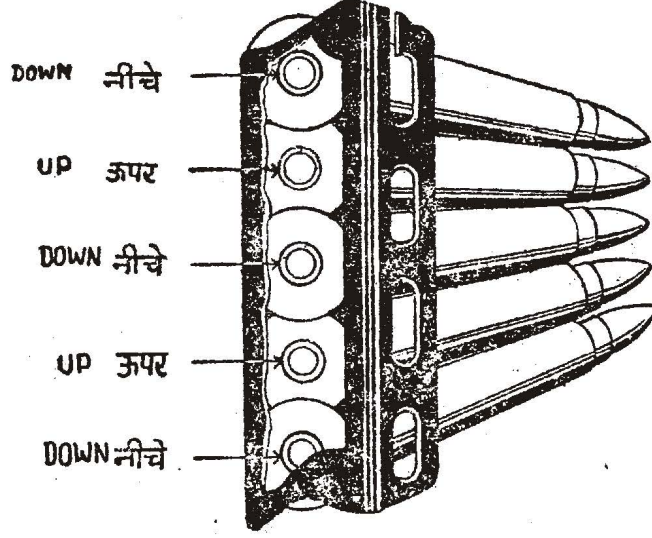
ब. चार्जर से राउण्ड को निकालो। एम्युनेशन का निरीक्षण करो। अगर कोई राउन्ड खराब हो तो उसे इस्तेमाल न करो। हर एक राउन्ड को कपड़े से साफ करो। विशेषतः पेंदे वाले सिरे से लेकर बीच वाले भाग तक। एक राउन्ड के पेंदे पर कपड़ा या चिन्दी लगाओ चार्जर के बीच से गुजारो जब तक वह साफ न हो जाय।

**स. चार्जर भरना—** (नमूना के साथ नकल) चार्जर में कारतूस इस प्रकार भरना चाहिए कि जब राइफल भरने की आवश्यकता पड़े तो राउन्डों को बगैर रुकावट के आसानी से मैगजीन में डाला जा सके।

द. ठीक तौर से चार्जर भरने का कायदा— पहले राउन्ड का पेंदा चार्जर की सतह से मिला हुआ हो दूसरे राउन्ड का पेंदा पहले राउन्ड के पेंदे पर चढ़ा हो और तीसरे राउन्ड का पेंदा नीचे की ओर हो। अर्थात् तीन पेंदे नीचे और दो ऊपर होने चाहिए। (सही भरा हुआ चार्जर जवानों को दिखाओ। देखो चित्र 2) जवानों को दूसरा चार्जर भरने का आदेश दो और दोनों चार्जरों का निरीक्षण करो।

**8. अभ्यास—** जवानों से चार्जर भरने का अभ्यास कराओ और सफाई पर ज्यादा जोर दो।

**9. भाग दो—** “भरने और खाली करने की विभिन्न रीतियाँ”।



चित्र नं0 2 – सही चार्जर भरना

(अ) बयान करो कि भरने में तेजी और दुरुस्तगी आवश्यक है।

**(ब) आरामदेह पोजीशन से भरना व खाली करना—** (नमूना और नकल) स्ववाड को आधे दायरे में बैठाओ। राइफल का बट दोनो पैरों के मध्य में रखो "भर"के आदेश पर बोल्ट खोलो। भरे हुए चार्जर को पोच से निकालो और निरीक्षण करो। निगाह को एक क्षण के लिये चार्जर गाइड पर रखो। भरे हुए चार्जर को ब्रिज चार्जर गाइड में इस प्रकार बैठाओ की राउन्डों का बुलेट वाला भाग आगे की तरफ हो अब दाहिने हाथ के अँगूठे को चार्जर के सबसे ऊपर वाले राउन्ड पर रख कर सफाई से और एक ही हरकत में राउन्डों को चार्जर में नीचे दबाओ। विश्वास करो कि सबसे ऊपर वाला राउन्ड मैगजीन के किनारों के नीचे अन्दर चला गया है। अगर राउन्डों को मैगजीन में जोर से दबाने की जरूरत पड़े तो राइफल के नीचे अँगुलियाँ लगाकर राइफल को मजबूती से थामे रखो। और दाहिने हाथ के अँगूठे से राउन्ड को जोर से दबाओ और सारे राउन्डों को मैगजीन में पहुँच जाने के बाद चार्जर को बाहर निकाल दो (देखो चित्र नं0 3) अब इसी तरह से दूसरे चार्जर को भरो। ब्रीच बन्द करो। विश्वास करो कि राउन्ड चैम्बर में चला गया है अगर चैम्बर में राउन्ड न जाय तो राइफल भरी हुई नहीं मानी जाती (प्रशिक्षक यह काम करके भी दिखायें) अगर चैम्बर में राउन्ड न गया हो तो राउन्डों को एक बार दबाकर तेजी से छोड़ो या बोल्ट को खोलो और मैगजीन के नीचे थपकी लगाओ। बोल्ट बन्द करो ऐसा करने से चैम्बर में राउन्ड चला जायेगा। सेफटी कैच लगाओ। पोच का बटन बन्द करो। "भर" के आदेश पर साधारणतया दस राउन्ड भरे जायेंगे।





चित्र नं0-3 बैठने/आरामदेह पोजीशन से भरना

**स. राइफल को खाली करना—** (नमूना और नकल) सेपटी कैच को आगे करो। बोल्ट खोलो, बोल्ट नाव को बगैर नीचे बैठाये पीछे और आगे उस समय तक हरकत देते जाओ जब तक मैगजीन और चैम्बर खाली न हो जाय। बोल्ट बन्द करो, ट्रिगर दबाओ, सेपटी कैच लगाओ और तेजी से खड़े हो जाओ।

**द. कार्ट्रिज उठाओ—** के आदेश पर राइफल को जमीन पर रखकर सब कार्ट्रिज चुनकर, साफ करके, चार्जर्स में भर कर, पोच में बन्द करके, राइफल उठा कर "विश्राम" की दशा में खड़े हो जाओ।

**10. अभ्यास—** प्रशिक्षक आराम देह पोजीशन से भरने और खाली करने का अभ्यास कराये।

**11. "भर" पोजीशन से भरना और खाली करना—** (स्क्वाड को अपनी दरी के दाहिने और बायें बैठाओ।)

**अ. बयान—** जमीन पर लेटने के लिये बांये पाँव से सामने को लम्बा कदम लो साथ ही राइफल को बांये हाथ में लाकर तौल की जगह पर पकड़ो। अब दाहिने हाथ को जमीन पर टिका कर बांये पाँव को बाईं तरफ लेते हुये तेजी से लेट जाओ। बांये बाजू को आगे करो। टाँगे खुली हुई हों। छाती स्वाभाविक रूप से उठी हो निगाह तारगेट पर हो। आदेश 'भर' पर यही पोजीशन बनाते हुये सीखे हुए तरीके से भरो।

**ब. खाली करना—** राइफल को बताये हुए नियम के अनुसार खाली करो परन्तु विश्वास करो कि मजल जमीन से थोड़ा ऊपर रहे ताकि राउन्ड या खोखा आसानी से दाहिनी तरफ निकल जाए। खाली हो जाने के बाद राइफल को बांये हाथ की मदद से पीछे खींच कर दाहिने कन्धे के नीचे लाओ साथ ही बॉई टॉग इकट्ठा करो और बिना राइफल पर बोझ दिये खड़े हो जाओ। आदेश मिलने पर सीखे हुए तरीके से कारतूस उठाओ (प्रशिक्षक बयान करें) लेटते व उठते समय राइफल पर बोझ न दिया जाए। फिर जब कभी भी “भर” का आदेश मिलेगा तो इसी पोजीशन से “भर” होगा और 10 राउन्ड भरे जायेंगे।

**12. अभ्यास—** “भर” पोजीशन से भरने और खाली करने का।

**13. मैगजीन चार्ज करना—** बयान करो कि ऐसे हालात भी पैदा हो जाते हैं जब कि मैगजीन भरी रखना आवश्यक हो जाता है। परन्तु दुर्घटनाओं से बचने के लिये चैम्बर में राउन्ड नहीं रखा जाता। इस कार्यवाही को चार्ज मैगजीन कहते हैं।

अ. (नमूना और नकल) बैठने के मोर्चे से मैगजीन को चार्ज करने के लिये “भर” की पूरी कार्यवाही करो परन्तु बोल्ट को बन्द करने से पहले सबसे ऊपर वाले राउन्ड को मैगजीन के अन्दर इतना दबाओ कि राउन्ड काफी नीचे दब जाये। इसका सरल नियम है कि राउन्ड को अंगूठे से दबाये रखो और दाहिने हाथ की सबसे छोटी अंगुली से बोल्ट को धीरे-धीरे आगे करो। बोल्ट बन्द करते समय यह विश्वास कर लिया जाय कि चैम्बर में राउन्ड न जाय, ट्रिगर दबाओ और सेफटी कैच लगाओ, पोच का बटन बन्द करो।

**ब. चार्ज मैगजीन से भरना—** (नमूना साथ नकल) बोल्ट खोलो और बन्द करो इस प्रकार राइफल भर जायेगी। (प्रशिक्षक अपनी राइफल भरी छोड़ें)

अब प्रशिक्षक “भर” से चार्ज मैगजीन का केवल बयान करे और जवान साथ साथ काम करे।

**14. अभ्यास—** स्क्वाड से अभ्यास कराओ।

**15. रायफल को खाली करने का दूसरा तरीका—** (नमूना और नकल) बयान करो कि कुछ दशाओं में जैसे अन्धेरे या दलदली या गीली जमीन पर या लम्बी घास में खाली करते समय राउन्ड जमीन पर गिर कर खो जाने का भय रहता है। इससे बचने के लिये दूसरे तरीके से खाली करना पड़ता है।

**तरीका—** राइफल से मैगजीन निकालो और पोच में बन्द करो। बोल्ट को धीरे-धीरे खोलो और चैम्बर वाले राउन्ड को मैगजीन हाउजिंग में से बाये हाथ की हथेली पर गिरा लो।

बोल्ट को बन्द करो। अब मैगजीन में भरे हुए राउन्डों को अँगूठे और अंगुली की सहायता से बारी-बारी निकाल लो, मैगजीन को पुनः राइफल में लगा दो। राउन्डों को चार्जर में भर कर पोच में बन्द करो।



**16. अभ्यास—** (अ) दूसरे प्रकार से खाली करने का।

(ब) जोड़ियों में अभ्यास।

**17. संक्षेप—** पाठ की मोटी-मोटी बातें दोहराओ।

**नोट—** “भर” पोजीशन ड्रिल के तौर पर न कराया जाय।

**18. अंतिम कार्य—** स्क्वाड का निरीक्षण व स्वस्थान।

व व व

## पाठ 4

# भर पोजीशन और राइफल की पकड़ (LAYING POSITION AND HOLD)

**1. प्रारम्भिक कार्य—** राइफल कार्ट्रिज और स्क्वाड का निरीक्षण।

**2. दोहराई—** पिछले पाठों का प्रश्नोत्तर द्वारा तथा भरने और खाली करने का अभ्यास। अन्त में राइफल काक और स्क्वाड की राइफलें उनकी दरी के पास रखवा कर जवानों को अपनी दरी के दोनों तरफ झुकटा करो।

**3. उद्देश्य—** “भर” पोजीशन से राइफल की सही पकड़ प्राप्त करना सिखाना है।

**4. सामान—** राइफल, ड्रिल कार्ट्रिज और 1’X1’ तारगेट 25X पर लगा हो।

**5. बयान—** “भर” पोजीशन ही एक ऐसी अच्छी पोजीशन है जिससे फायरर काफी देर तक राइफल से आसानी से फायर कर सकता है। अच्छे फायर के तीन मुख्य सिद्धान्त हैं—

अ. पकड़ की दुरुस्ती, चट्टान की तरह मजबूती (Holding)

ब. सही सिस्त (Aiming)

स. सही ट्रिगर दबाना (Trigger operation)

यह तीनों मुख्य सिद्धान्त अलग-अलग पाठों में सिखाए जायेंगे। अभी इस पाठ में सबसे पहला सिद्धान्त अर्थात् सही पकड़ प्राप्त करना सिखाया जाएगा।

**6. सिखलाई का क्रम —** पाठ 4 भागों में सिखाया जायेगा।

**7. भाग एक—सही पकड़ का नमूना और आरामदेह पोजीशन—** (पूरी पोजीशन का नमूना दो) ‘भर’ पोजीशन बनाओ और राइफल को कंधे में ले जाओ। जवानों को चारों तरफ से घूम कर देखने का मौका दो और स्क्वाड से इस पोजीशन में जो खास-खास बातें उन्होंने देखी हों उन पर प्रश्न करो। अब राइफल जमीन पर रख दो। (नमूना बयान से) आरामदेह पोजीशन प्राप्त करने के लिये शरीर को लाइन आफ फायर से तिरछा करो, छाती स्वामाविक रूप से जमीन से उठी हुई और टाँगें इतनी खुली हुई हों कि किसी रग पुट्टे में खिंचाव पैदा न हो। अगर बदन के नीचे कोई कंकड़-पत्थर हो तो निकाल दो। एड़ियां अगर जमीन पर बैठाई (बिना जोर दिए) जा सकें तो अच्छा है ऐसा करने में किसी जवान को कष्ट होता हो तो इस पर जोर न दिया जाये। (देखो चित्र 4)



चित्र नं0-4 लेटकर सही पकड़ का नमूना और आराम देह पोजीशन

**8. अभ्यास—** आराम देह पोजीशन का।

**9. भाग दो— त्रिकोण बनाना—** बयान करो कि 'भर' पोजीशन में शरीर के भागों से दो त्रिकोण बनते हैं एक पड़ा त्रिकोण और दूसरा खड़ा त्रिकोण ।

**अ. पड़ा त्रिकोण—**(नमूना बयान से) भर पोजीशन बनाओ अपने हाथों को जोड़कर उन पर अपनी तुड़्डी टिका दो। बाईं कोहनी थोड़ा बांये और आगे, दाहिनी कोहनी थोड़ा दाहिनी तरफ हो। छाती स्वाभाविक रूप से थोड़ा उठी हुई हो। दोनों कोहनियों और वह स्थान जहां से छाती जमीन से अलग होती है इन तीनों बिन्दुओं को जोड़ने से जो त्रिकोण बनेगा वही पड़ा त्रिकोण कहलाता है। इसमें तीनों कोण लगभग बराबर होते हैं। यह फायरर के ऊपर से देखा जाता है।

(प्रशिक्षक खड़िया मिट्टी या किसी और साधन से किसी जवान की सहायता से त्रिकोण बनाकर दिखाए)  
(देखो चित्र 5)



चित्र नं0-5 पड़ा त्रिकोण

**ब. खड़ा त्रिकोण —** बाईं कोहनी को हिलाए बिना राइफल को कंधे में ले जाओ और बताओ की खड़ा त्रिकोण दोनों कोहनियों और जहाँ से दोनों हाथ राइफल को पकड़ते हैं इन तीनों बिन्दुओं को मिलाने से बनता है। दोनों कोहनियां जमीन और बाजू के बीच  $50^\circ$  का कोण आमतौर पर बनाती हैं यह कोण निशान की ऊँचाई और निचाई के अनुसार घटता बढ़ता है। यह फायरर के सामने से देखा जाता है। स्कवाड को करीब 30X आगे भेजकर जमीन पर लिटाकर दिखाओ। बयान करो कि त्रिकोण बन चुकने के बाद बाँई कोहनी नहीं हिलानी चाहिए क्योंकि यह फायर की कुन्जी मानी गई है। यदि किसी कारण

से कोहनी हिलाने की आवश्यकता पड़े तो फायर से पहले दोबारा त्रिकोण दुरुस्त कर लेना चाहिए। (देखो चित्र नं०- 5 (क))



चित्र नं० 5 'क' – खड़ा त्रिकोण

**10. अभ्यास—** पोजीशन बनवाकर दोनों त्रिकोण दुरुस्त करवाओ।

**11. भाग तीन—** शरीर के अलग-अलग भागों का कार्य—

अ. (नमूना बयान से) (क्लास प्रशिक्षक के दोनों तरफ) प्रशिक्षक पोजीशन ले।

**बांये हाथ का काम—** राइफल को तोल बिन्दु पर सहारा देना है। बांये हाथ से कमी भी राइफल को मजबूती से न पकड़ा जाय और न ही पीछे कंधे में खींचने का प्रयत्न करना चाहिए। पकड़ यदि नं०1 राइफल हो तो बैक साइट प्रोटेक्टर के पास हो। यदि नं० 4 राइफल हो तो मैगजीन से आगे हो। पकड़ की असली जगह जवानों के बाजू की लम्बाई के अनुसार कुछ आगे पीछे रखनी पड़ेगी। कलाई को राइफल के नीचे ताकत से लाने का प्रयास न किया जाय। बांया हाथ कलाई से इस प्रकार मुड़ा हुआ हो कि हाथ की पुश्त पकड़ के साथ 45 अंश से ज्यादा का कोण बनाए। इस प्रकार बांये अंगूठे के पोर के करीब का गद्दा बाहर निकल आता है और राइफल को बाईं तरफ से दबाकर उसे दाहिनी तरफ झुका देता है। हाथ के दूसरी तरफ बांये हाथ की पहली अँगुली के दबाव से मदद ली जाती है। इस प्रकार पकड़ का संतुलन कायम रहता है।

**ब. दाहिने हाथ का काम—** फायर में दाहिना हाथ "मास्टर हैंड" का काम करता है क्योंकि समस्त फायर का काम दाहिने हाथ पर ही निर्भर होता है। दाहिने हाथ से 'स्माल ऑफ दि बट' को इस तरह पकड़ो कि तीनों अँगुलियाँ नीचे से ऊपर की ओर, और अँगूठा ऊपर से हो। कलमें वाली अँगुली अगर राइफल जमीन पर हो तो ट्रिगर गार्ड पर और अगर राइफल कन्धे पर हो तो ट्रिगर पर हो। ट्रिगर पर कलमें वाली अँगुली का पहले और दूसरे जोड़ के बीच वाला हिस्सा हो। दाहिने हाथ की पकड़



इतने आगे होनी चाहिये कि कलमें वाली अंगुली ट्रिगर की कार्यवाही कर सके। यही हाथ पकड़ की मजबूती हासिल करने में सहायक होता है। इस हाथ से स्माल ऑफ दी बट को ताकत से ऐसे पकड़ो जैसे कि एक शिकन्जा किसी वस्तु को पकड़ता है और इस हाथ से और अधिक दबाव डालना सम्भव न हो। इस पोजीशन में दाहिने हाथ के रंग पुट्टे खिंचे हुए होने के कारण राइफल को दाहिने कन्धे में दबाये रखने में सहायता मिलेगी। स्माल ऑफ दि बट की ढलवान बनावट के कारण पकड़ आगे रखने से कलमें वाली अंगुली ट्रिगर पर बढ़ाकर रखने में सहायता मिलती है। जब बट और कन्धे का मिलाप हो तो कलमें वाली अंगुली ट्रिगर पर पहला दबाव लिये हुए हो। (अब राइफल को नीचे ले आओ)

**स. दाहिने कन्धे का काम और बट प्लेट की पोजीशन—** दाहिने हाथ से पीछे खींचे हुए राइफल के बट को दाहिने कन्धे से आगे की तरफ इतना दबाओ कि कन्धे की आगे की ओर, और अधिक हरकत मुमकिन न हो। अगर दाहिने हाथ और दाहिने कन्धे के दबाव में संतुलन पैदा हो जायेगा तो नया जवान फायर करते समय झटका खाने की बुरी आदत सीख सकेगा। जहाँ तक सम्भव हो बट प्लेट का सारा भाग कन्धे में जमा हो, परन्तु साधारणतया ऐसा होना कठिन है क्योंकि जवान के कद में अन्तर होता है फिर भी साधारणतया जवान को प्रयास करना चाहिये कि कम से कम आधी बट प्लेट (जिसमें हील बट शामिल हो) कन्धे में अवश्य जम जाय। बट को कभी भी हँसली की हड्डी पर या उसके बराबर वाली खाली जगह में नहीं रखना चाहिये अन्यथा चोट लगने से जवान के हृदय में भय उत्पन्न हो जायेगा और उसमें फायर करते समय डर से आँख झपकाने की बुरी आदत पड़ जायेगी।

**द. सिर का काम—** बताओ की राइफल चारों तरफ से ताकत से पकड़ी हुई है अगर ऊपर से सिर को बट पर रख दिया जाय तो राइफल की पकड़ ऊपर से और अधिक मजबूत हो जायेगी और सिर को भी सहारा मिल जायेगा। इसलिये सिर को बट पर इस प्रकार टिकाओ जैसे सोते हुए तकिये पर टिक जाता है। सिर की पोजीशन जवान के कद और सिर की बनावट पर निर्भर होगी। गर्दन व चेहरे के किसी भी पुट्टे में खिंचाव पैदा न होने पाये। आँखें काकिंग पीस के निकट गरदन को अकड़ाये बिना ले जाओ। यह राइफल नं0 4 और 5 के लिये विशेषतया लागू है राइफल नं0 1 में आँख की पोजीशन से कोई विशेष अन्तर नहीं पड़ता। इसके विपरीत यदि आँख को काकिंग पीस से दूर करने की कोशिश में गर्दन अकड़ा ली गई तो निशाना कायम रखने में मुश्किल पड़ेगी।

**पूरी पोजीशन —** बताओ कि इस प्रकार राइफल अलग नहीं अपितु बदन का एक भाग बन जाती है। बाँया हाथ सिध्दाई देता है। दाहिना हाथ पीछे खींच कर रखता है। कन्धा आगे दबाता है और पीछे जाने से रोकता है और सिर ऊपर से। इस प्रकार राइफल मजबूती से पकड़ी हुई है।

**12. अभ्यास—** पूरी पकड़ का आदेश।

**13. भाग चार—** साँस का नियन्त्रण—

(प्रशिक्षक का नमूना) (प्रशिक्षक पोजीशन ले) राइफल कन्धे में ले जाकर बताये कि ताकत से पकड़ने पर भी राइफल हरकत करती है। क्योंकि मैंने साँस नहीं रोकी है। राइफल जिस तिपाई में जकड़ी हुई है उसकी एक टॉग यानी फायर करने वाले की छाती साँस अन्दर लेने और बाहर निकलने के कारण हिलती रहती है।

राइफल कन्धे में पहुँचते ही जैसे सही पकड़ हासिल हो जाय और शिस्त मिल जाय वैसे ही साँस रोक लेनी चाहिए और उस समय तक रोके रखो जब तक गोली फायर न हो जाय। राइफल पर अधिक देर तक दुरुस्त पकड़ कायम रखना सम्भव नहीं है। इसी प्रकार निशाना लेते समय साँस लेते रहने की भी आदत बुरी है। इससे आँख थक जाती है। ध्यान रहे कि फेफड़ा हवा से एक दम खाली न हो जाय अब 5 सेकन्ड तक साँस रोकने का अभ्यास लो।

**14. राइफल और पोजीशन को दुरुस्त करना**—अगर फायर करने वाले की नाक काक की हुई राइफल के कार्किंग पीस के ज्यादा नज़दीक है तो फायर करने वाले के लिये राइफल का बट ज्यादा छोटा है। इसके विपरीत अगर फायर करने वाले का सिर कार्किंग पीस से अधिक दूर दिखाई दे और गर्दन के पुट्टे में अधिक खिंचाव मालूम होता हो तो बट फायर करने वाले के लिये अधिक लम्बा है इन दोनों हालतों में अन्दाज़ लगाने से पहले यह यकीन करो कि बाया हाथ बैक साइट प्रोटेक्टर के नज़दीक कुदरती तौर पर जमा हुआ हो। बाये हाथ की पोजीशन फायर करने वाले के बदन के लाइन आफ फायर से तिरछेपन पर निर्भर होता है बदन जितना तिरछा होगा बाया हाथ उतना ही आगे होगा। और हाथ जितना पीछे हटाना हो उतना ही बदन लाइन आफ फायर में सीधा करना होगा। ध्यान रहे बाया हाथ मैगजीन से बिल्कुल अलग हो। (प्रशिक्षक ध्यान दे कि बदन की पोजीशन दुरुस्त करने से पहले सामने से यह यकीन करो कि खड़ा त्रिकोण सही है। और दोनों कोहनियाँ जमीन से एक सा कोण बनाती हों)।

#### 15. पोजीशन कैसी दिखाई दे—

फायर करने वाला और राइफल एक दूसरे के भाग मालूम होने चाहिये। बाये हाथ को छोड़कर दाहिना हाथ, सिर और राइफल का बट आपस में जकड़े हुए मालूम होने चाहिए। राइफल चट्टान की तरह स्थिर रहे। इस प्रयास में दाहिने हाथ की मोटी माँसपेशी पर जोर पड़ता मालूम होना चाहिये। पोजीशन का सही इम्तिहान यह है कि जब कोई जिन्दा राउण्ड फायर किया जाय तो फायर का झटका फायर करने वाले पर और राइफल पर एक ही साथ मालूम हो।

#### 16. अभ्यास—(अ) पूरे काम का।

(ब) ग्रुपों में

#### 17. संक्षेप— पाठ की मोटी मोटी बातें दोहराओ।

नोट—1. यदि कोई जवान बाये कन्धे से फायर करने वाला है तो सब कार्यवाही इसके विपरीत करे।

2. बट 3 आकार के होते हैं, लॉर्ज, नार्मल तथा स्मॉल। लॉर्ज बट पर L, नार्मल बट पर 'N' और स्मॉल बट पर 'S' लिखा होता है जिससे आसानी से पहचाना जा सकता है। जो फायरर की साइज हो उसे वही बट दिया जाय।

#### 18. अन्तिम कार्य— निरीक्षण और स्वस्थान।

व व व

राइफल तथा बैनट // 22



## पाठ 5

# निशाना बाँधना “प्रथम”; उपपदह प्द रेन्ज और फिगर तारगेटों पर

**1. प्रबन्ध—** (अ) प्रशिक्षक के लिये दो राइफलें। एक राइफल आर0ए0टी0 (R.A.T.) पर उसकी शिस्त 100 गज दूरी के गुपिंग तारगेट पर लगी हुई, और आर0ए0टी0 के आगे साकेट में 6“X 6” का Representative तारगेट लगाओ, इस बात का विश्वास करो कि जब ये तारगेट निकाल दें तो यह शिस्त 100 गज के गुपिंग तारगेट पर ठीक हो। दूसरी राइफल से 100गज पर फीगर नं0 11 तारगेट पर शिस्त लगाओ।

ब. तारगेट इस प्रकार लगे होने चाहिये—

(i) 100 गज पर 4“X 4” गुपिंग व फिगर नं0 11

(ii) 200 गज “ “ क्लासिफिकेशन

(Classification ) व फिगर नं0 11 व 12

(iii) 300 गज “ “ “

(iv) 400 गज “ “ “

**2. प्रारम्भिक कार्य—** स्क्वाड और राइफलों का निरीक्षण करो और इन बातों पर ध्यान दो—

(अ) बैक साइट में ढीलापन तो नहीं है।

(ब) अपरचर या फोर साइट ब्लेड में कोई कमी तो नहीं है।

(स) साइटों को काला करो।

**3. दोहराई—** साइट लगाने की।

**4. उद्देश्य—** विभिन्न तारगेटों पर सही निशाना बाँधने की सिखलाई देना।

**5. सामान—**उक्त संख्या 1अ और ब के अनुसार, शिस्त का रेखाचित्र, आर0ए0टी0, साइट काला करने का सामान, एमिंग रेस्ट व 2 पत्थर।

**6. बयान—** सही प्रकार से फायर करने के लिये आवश्यक है कि निशाना सही हो। यदि निशाना गलत होगा तो गोली भी गलत जगह पर लगेगी। सही शिस्त तारगेट, फोर साइट व बैक साइट में ठीक मेल मिलाप से प्राप्त होती है। दुरुस्त शिस्त का यह एक मूल सिद्धान्त है जो कभी भी बदली नहीं होता।

**7. सिखलाई का क्रम—** पाठ 3 भागों में सिखाया जायेगा।

**8. भाग एक—** एमिंग रेस्ट का प्रयोग—

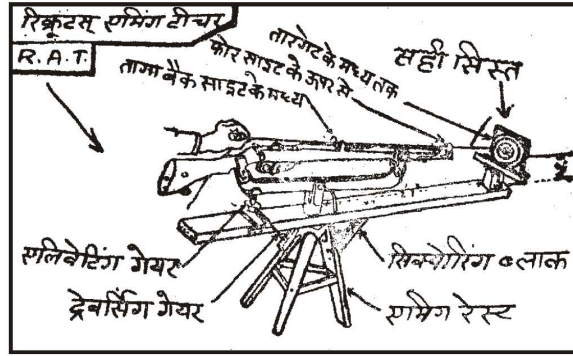
अ. बताओ कि एमिंग रेस्ट की सहायता से रिक्रूटों को निशाना बाँधने का अभ्यास दिया जाता है प्रशिक्षक भली प्रकार से निशाने की जाँच कर सकता है (मुख्य-2 हिस्से पुर्जों के नाम और काम बताओ)

**ब. बयान से नमूना—** अभ्यास एमिंग रेस्ट लगाने का तरीका यह है कि एक टॉंग तारगेट की तरफ और धाती आर्म का लम्बा भाग भी तारगेट की तरफ हो। R.A.T. पर राइफल रखने से पहले काक करो और सिलिंग ढीली करो। यदि नं0 4 राइफल हो तो साइट खड़ी हो। सिलिंग क्लैम्प के विरुद्ध हो ताकि उठाते समय कोई रूकावट न पड़े।

स. अभ्यास—एर्मिंग रेस्ट के लगाने का अभ्यास लो अन्त मे राइफल एर्मिंग रेस्ट पर रहने दो।

**9. भाग दो**—निशाना बांधने का नियम—आर0ए0टी0 प्रयोग करने के उद्देश्य— इसके प्रयोग के दो उद्देश्य है— (1) शिस्त का कायदा अमली तौर पर दिखाना। (2) जवानों को शिस्त की गलती महसूस कराना। (स्क्वाड आर0ए0टी0 के दाहिने और बायें)

अ. बयान करो कि आर0ए0टी0 आरम्भ में जवानों को निशाना बांधने के मूल सिद्धान्तों की सिखलाई देने और उनकी की गई गलती को चेक करके उनसे ठीक करवाने के लिए प्रयोग में लाई जाती है। इसके नीचे 3' X 6" लकड़ी का टुकड़ा लगाकर उसके अगले सिरे पर एक साकित में प्रतिनिधि तारगेट लगा दिया जाता है। इनमें एलीवेशन और डिफ्लेक्शन गियर लगे होते हैं इनसे दाहिने बांये ऊपर—नीचे घुमाया जा सकता है। (देखो चित्र 6)



चित्र नं0-6 आर0 ए0 टी0 का प्रयोग

**ब. निशाना बांधने का नियम—**

**i. राइफल नं0 1:** (1) राइफल को सीधा रखो। (2) तारगेट को देखो और शिस्त की जगह नियुक्त करो। (3) कन्धे के विरुद्ध ऑख बन्द करो। (4) निगाह को फोर साइट पर जमाओ। (5) फोर साइट की नोक बैकसाइट U के मध्य दोनों कन्धों की ऊँचाई के बराबर रखते हुए शिस्त की जगह मिलाओ। रेखा चित्र दिखाओ (देखो चित्र 7)



चित्र नं0-7 शिस्त

**ii. राइफल नं0 4—**(1) राइफल को सीधी रखो। (2) तारगेट को देखो और शिस्त की जगह नियुक्त करो, कन्धे के खिलाफ आँख बन्द करो। (3) अपरचर के बीच से फोर साइट पर नज़र जमाओ (4) फोर साइट की नोक अपरचर के मध्य में रखते हुए शिस्त की जगह मिलाओ। (रिखा चित्र दिखाओ)

स. अब जवानों को निशाना बांधने का नियम बताओ। और दोनों राइफलों से जवानों को निशाना दिखाओ। हर दो जवानों के बाद निशाने का विश्वास करो कि निशाना ठीक है ताकि कोई जवान गलत निशाने का खाका मस्तिष्क में न बैठा ले। अन्त में निशाना बांधने और चेक करवाने का एक नमूना दो।

**10. अभ्यास—** रक्वाड से 100 गज व 200 गज पर लगे हुए तारगेटों पर निशाना बांधने का अभ्यास लो। (प्रशिक्षक इसी बीच में दो राइफलों का बोल्ट निकाल कर एक पर 200 गज और दूसरी पर 1000 गज साइट लगा कर एलिवेशन के लिए तैयार करेगा। अप्लीकेशन तारगेट पर दोनों राइफलों से निशाना बाँधे और दो पत्थर साथ रखे)।

### **11. भाग तीन—** एलिवेशन (ELEVATION)

अ. बताओ कि जमीन में एक गुरुत्वाकर्षण शक्ति होती है जो हर वस्तु को अपनी ओर खींचती है। इसका मुकाबला करने के लिये आवश्यक है कि फायर करते समय राइफल की बैरल निशाने की जगह से ऊँची रखी जाय एलीवेशन की मात्रा तारगेट की दूरी पर निर्भर होती है। तारगेट जितनी दूर होगा उतनी अधिक एलीवेशन की जरूरत होगी।

ब. दो पत्थरों का उदाहरण दो, एक जवान को कशीब व दूसरे को दूर फेंकने का आदेश दो और रक्वाड को कहो कि उनकी ऊँचाई देखें व उन पर प्रश्न करो। बताओ कि यह जो ऊँचाई में अन्तर है इसी को एलीवेशन कहते हैं। इससे स्पष्ट है कि हर वस्तु को दूर पहुँचाने के लिये अधिक एलिवेशन देने की आवश्यकता है।

अब दोनों राइफलों पर दिखलाओ कि दोनों पर लगी हुई साइटों के द्वारा शिस्त में कोई फर्क नहीं होता। मगर बोर में से देखने पर मालूम होगा कि —

200 गज साइट वाली राइफल का बोर तारगेट के बीच में और 1000 गज साइट वाली राइफल का बोर निशाने की जगह से काफी ऊपर है। इससे स्पष्ट है कि गोली दूरी वाले लक्ष्य पर पहुँचाने के लिये राइफल को आवश्यकतानुसार एलीवेशन देने का प्रबन्ध कर दिया गया है। यह एलीवेशन बैक साइट पर साइट लगाने से प्राप्त होता है। इसलिए राइफल पर साइट लगाया गया है।

**12. अभ्यास—**500 गज तक निशाना बांधने का अभ्यास दो।

### **13. संक्षेप—**

अ. पाठ की मोटी-मोटी बातें दोहराओ।

ब. टी0ओ0ई0टी0 (प्रारम्भिक शिक्षा की परीक्षा)— पर्याप्त अभ्यास के पश्चात् परीक्षा ली जायेगी।

**नियम—** 200 गज पर फिगर नं0 11 तारगेट। तीन अवसर दिए जायें। उत्तीर्ण होने के लिए 2 निशाने सही होने चाहिए।

**नोट—** बाई फोकल ग्रुप—(Bi Focal group) जब जवान कभी फोर साइट और कभी तारगेट पर निगाह जमाकर फायर करता है, इससे तारगेट पर जो गोलियों की शक्ल बनती है उसे बाई फोकल ग्रुप कहते हैं। इस गलती से बचना चाहिए।

**(14) शिस्त पर विभिन्न प्रकार की रोशनी का प्रभाव—** निम्नलिखित दो बातें

शिस्त की दुरुस्तगी पर प्रभाव डालती हैं।

(1) दिन के भिन्न समयों की भिन्न प्रकार की रोशनी।

(2) सुबह, सवेरे या तीसरे पहर देर को जब सूरज की किरणें राइफल की साइटों पर तिरछे कोण से पड़ती हैं।

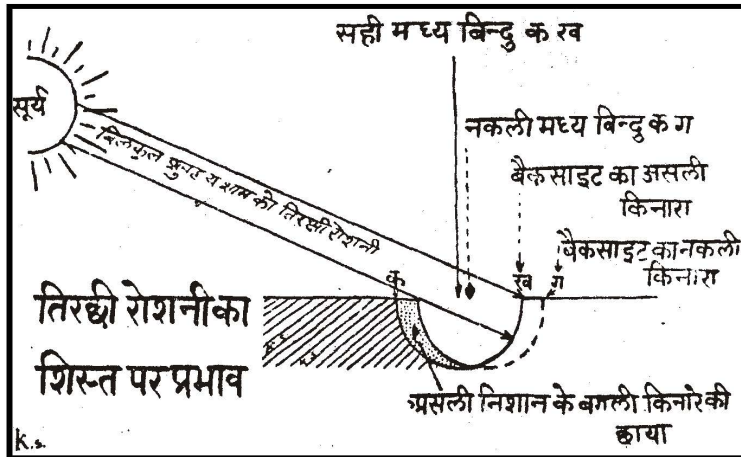
बताओ कि बदली आदि के मौसम में जब रोशनी में जल्दी जल्दी परिवर्तन होता है तो शिस्त अलग-अलग ढंग की दिखलाई देती है। तेज रोशनी में तारगेट साफ और चमकदार नज़र आता है। अतः फायर करने वाले की प्रतिक्रिया फोर-साइट कम देखने की होती है। ऐसा इसलिए होता है कि दिमाग नजर और तारगेट के बीच में आने वाली हर रूकावट को नीचे हटा देना चाहता है। इसके विपरीत जब रोशनी कम हो जाती है तो तारगेट कम दिखाई देता है और फोर साइट अधिक इस हालत में फायर करने वाले जवान का झुकाव मोटी फोरसाइट देखने की तरफ होता है हालाँकि 300 गज तक फायर के लिये शिस्त में बहुत ही मामूली सा फर्क पड़ता है फिर भी निम्नलिखित सिद्धान्त याद रखना जरूरी है—

(i) **(Light up Sight up) लाइट अप-साइट अप—** अर्थात् रोशनी तेज है और मुझे फोरसाइट की नोक का दुरुस्त ध्यान में रखना आवश्यक है।

(ii) **(Light down Sight down) लाइट डाउन-साइट डाउन—** अर्थात् रोशनी कम है और कहीं ऐसा न हो कि मेरी नज़र फोर साइट पर ही न लगी रह जाय और आवश्यकता से अधिक मोटी फोर साइट न देख लूँ।

**तिरछी रोशनी का प्रभाव—**

बयान करो कि सुबह या शाम को फायर करते समय यदि राइफल की बैक साइट चमकदार हो गई हो तो नये जवानों को फोर साइट की नोक को 'यू' के बीचो बीच लाने में मुश्किल पड़ेगी। जिस रूख से सूरज की रोशनी पड़ती है उस तरफ से परछाँई पड़ने के कारण 'यू' प्रकाश के विरुद्ध रूख कुछ खिसका हुआ मालूम होगा। यह प्रभाव दोनों प्रकार की बैक साइटों पर पड़ता है। लेकिन राइफल नं01 ('यू' बैक साइट वाली राइफलों) में अधिक महसूस होता है। (देखो चित्र 8)



चित्र नं0-8 तिरछी रोशनी का प्रभाव



इसलिये आवश्यक है कि फायर कराते समय यह ध्यान रखा जाय कि सुबह तड़के या शाम को देर में चमकदार बैक साइट से फायर करने पर 100 गज पर 3" तक का असर पड़ सकता है। अतः ऐसे समय पर नये जवानों के फायर करते समय यह ध्यान रखा जाय कि बैक साइटें चमकदार न हों। जहाँ तक हो सके ऐसे समय राइफल "जीरो करना वाँछनीय नहीं है।

**15. अंतिम कार्य**— स्क्वाड का निरीक्षण और स्वस्थान।

व व व

## पाठ 6

# ट्रिगर पर काबू पाना

- 1. प्रारम्भिक कार्य—** स्क्वाड और राइफल का निरीक्षण करें।
- 2. दोहराई—** मर पोजीशन से सही पकड़ का अभ्यास।
- 3. उद्देश्य—** शिस्त हिलाए बिना ट्रिगर दबाने की सही कार्यवाही सिखाना।
- 4. सामान—** राइफल, सिक्का और 1'x1' तारगेट।
- 5. बयान—** सही ट्रिगर दबाने की कार्यवाही अच्छे फायर का तीसरा मूल सिद्धान्त है।

इसलिये ट्रिगर दबाने की कार्यवाही इस प्रकार की जाय कि शिस्त और पकड़ में कोई अन्तर न आए।

- 6. सिखलाई का क्रम—** पाठ चार भागों में सिखाया जायेगा।

- 7. भाग एक—** फायर के दौरान ट्रिगर दबाने की कार्यवाही का सही नमूना—  
(स्क्वाड प्रशिक्षक के दाहिने और बाये)

अ. प्रशिक्षक पोजीशन ले। राइफल काक कन्धे में ले जाओ और एक जवान को सिक्का आउटर बेन्ड पर रखने को कहो। (प्रशिक्षक ट्रिगर दबाये और सिक्का नहीं गिरे)। खड़े होकर बयान करो कि—

**ब. दुरुस्त ट्रिगर दबाने की आवश्यकता—** राइफल को कुछ सेकन्डों से ज्यादा देर तक दुरुस्त पकड़ में कायम रखना असम्भव है इसलिये आवश्यक है कि ज्यों ही आँखों को सही शिस्त दिखाई दे कलमे वाली अँगुली द्वारा ट्रिगर दबाने की कार्यवाही अपने आप हो जानी चाहिए। क्योंकि जवान की आँख और बाजू के रंग पुट्टे जल्दी थक जाते हैं। इसलिये इनमें तालमेल पैदा करने के लिये कुछ कसरतें बनाई गई हैं जिनको ट्रिगर अभ्यास या T.O.E. के नाम से पुकारा जाता है।

- 8. भाग दो—** T.O.E. या ट्रिगर अभ्यास (Trigger Operation Exercise)

**अभिप्राय—** फायर करने वाले हाथ के बाकी भाग पर काबू पाते हुए तर्जनी अँगुली को स्वतंत्रता पूर्वक हरकत देना ।

**तरीका—** (नमूना और नकल) आराम से बैठ जाओ। यदि कोई घड़ी पहने हो तो उतार दो। दाहिने हाथ से बाये हाथ की कलाई इस प्रकार बल पूर्वक पकड़ो जैसे स्माल आफ दी बट को पकड़ा जाता है। तर्जनी अँगुली को उसी प्रकार अलग रखो जैसे ट्रिगर पर दूसरा दबाव लेने के लिये। पकड़ इतनी मजबूत हो कि दाहिने हाथ का नाखून सफेद दिखाई देने लगे और आगे दबाव की गुंजाइश न रह जाय। कलमे वाली अँगुली से कलाई पर इस प्रकार दबाव डालो कि हाथ के किसी और पुट्टे की हरकत न हो। फिर ऊपर उठा कर बार-बार यही कार्य करें।

**अभ्यास—T.O.E. :1—** का अपने बाजू पर और फिर प्रशिक्षक के हाथ पर।

- 9. भाग तीन—** ट्रिगर (T.O.E.) 2—

**अभिप्राय—** फायर करने वाले हाथ के रंग पुट्टों पर पूरी तरह नियंत्रण पाना।

**तरीका—** (नमूना और नकल)

दाहिनी कलाई को घुटने या किसी मुनासिब चीज जैसे टेबुल या बेन्च पर रखो। कलमे वाली अँगुली के दूसरे पोर से इस प्रकार हुक बनाओ जैसे अँगुली ट्रिगर पर रखते हैं। कलमे वाली अँगुली के



अतिरिक्त मुट्ठी को बन्द करो। अँगुली को दूसरे पोर से ऊपर एक क्षेत्र में इस प्रकार हरकत दो जैसे ट्रिगर दबाने के लिये दबाई जाती है। ध्यान रहे कि दाहिने हाथ की नसें और पुट्टे न हिलें। शुरू-शुरू में इस अभ्यास में अँगुली की हरकत के विपरीत अँगूठा हरकत करने की कोशिश करेगा मगर प्रयत्न और लगातार अभ्यास से यह कमी दूर की जा सकती है।

**अभ्यास—** ट्रिगर अभ्यास (T.O.E.) :2— का। प्रशिक्षक चेक करे कि नसें और पुट्टे न हिलें।  
(प्रशिक्षक नमूना दे और जवान देखें)

(T.O.E.) 3 का अभिप्राय— फायर करने वाले के दिमाग और कलमें वाली अँगुली में ताल मेल पैदा करना—

**तरीका—** 'भर' पोजीशन बनाओ। राइफल को काक करो। दाहिने हाथ से राइफल को दुरुस्त तरीके से मजबूत पकड़ो। सिर को बांये हाथ पर टिकाओ। दोनों आँख बन्द करो। अब दिमाग पर जोर दो कि वह सही शिस्त का खाका दिमाग में बैठा ले। जैसे ही दिमाग यह मान ले कि सही निशाना मिल गया है तो कलमें वाली अँगुली से ट्रिगर दबाओ। इस कार्यवाही में मदद करने के लिए मुँह से "आन" पुकारो या इसी प्रकार का कोई और संकेत दो।

(प्रशिक्षक पहले सही और फिर दो गलत नमूना और अन्त में फिर एक सही नमूना दे) यह कार्यवाही उस समय तक ठीक नहीं समझी जायेगी जब तक 'आन और ट्रिगर की क्लिक एक साथ न होने लगे। ध्यान रहे कि कलमें वाली अँगुली इस काम में जल्दी करने की कोशिश करती है अतः इसे सदैव दिमाग के अधीन रखना चाहिए।

**ट्रिगर अभ्यास (T.O.E.) 4 का अभिप्राय—**

फायर करने वाले की आँख और कलमें वाली अँगुली में दिमाग के ज़रिये तालमेल पैदा करना।

**तरीका—** 'भर' पोजीशन बनाओ। राइफल काक करो दाहिने हाथ से राइफल दुरुस्त तरीके से मजबूती से पकड़ो और बाँया हाथ गाल के नीचे टिका कर बाईं आँख बन्द करो। दाहिनी आँख से फोरसाइट के आगे नजर आने वाला कोई भी निशान चुनो और केवल फोर साइट की नोक की मदद से निशाना लो। ज्यों ही आँख दिमाग को सूचित करे कि शिस्त मिल गयी है कलमें वाली अँगुली से दूसरा दबाव ले लो। चेक करने के लिये उसी प्रकार "आन" पुकारा जाय या किसी और आवाज द्वारा सही-सही शिस्त मिल जाना सूचित किया जाय। (T.O.E4) का एक ही नमूना दिया जाय।

**ट्रिगर अभ्यास (T.O.E)5 का अभिप्राय —** सही पकड़ हासिल करते हुए आँख, दिमाग और कलमें वाली अँगुली का वह ताल-मेल जो ट्रि0अ0 4 में किया गया था जारी रखना। अगर फायरर यह समझे कि आँख, दिमाग और कलमें वाली अँगुली का तालमेल टूट गया है तो उसे इस कार्यवाही को फिर करना चाहिए।

**तरीका—** इस ट्रि0अ0 का नियम ट्रि0अ04 के अनुसार ही होता है केवल बांये हाथ की पकड़ इसमें और शामिल कर दी जाती है और राइफल के चैम्बर से राउन्ड वापस मैगजीन में डालकर मैगजीन राइफल से अलग कर दी जाय। अभ्यास करते समय राइफल की कन्धे में कोई हरकत भी न हो और जवान, जैसा पकड़ के दौरान सिखाया जा चुका है साँस पर भी नियंत्रण रखें। इस प्रकार इन तब्दीलियों के साथ ट्रि0अ0 4 का काफी अभ्यास हो जाने के बाद इस अभ्यास में राइफल की कोई भी हरकत उस समय नहीं

मालूम होनी चाहिए जब ट्रिगर पर दूसरा दबाव लिया जाय। इस अभ्यास में ध्यान देने योग्य निम्नलिखित बातें हैं—

(1) इस अभ्यास को “लिम्बर अप” भी कहते हैं।

(2) राइफल की पकड़ तथा आँख और कलमें वाली अँगुली के तालमेल को चेक करने में मदद लेने के लिए आउटर बैन्ड पर एक सिक्का रखकर सहायता ली जा सकती है।

(3) यह अभ्यास धीरे-धीरे कराया जाय जिससे कोई गलत आदत न पड़ने पाए।

(4) क्योंकि दुरुस्त पकड़ और दुरुस्त तालमेल बहुत देर तक कायम रखना कठिन है। इसलिए अभ्यास में समुचित विश्राम दिया जाना आवश्यक है।

(5) औसत दर्जे के जवान के लिये इस अभ्यास के लिये प्रतिदिन 15 मिनट का समय लगातार 6 दिन तक आवश्यक है।

(6) जब तक रिफ्रूट इस अभ्यास में माहिर न हो जाय उसे जिन्दा राउन्ड नहीं फायर करने दिया जाय।

(7) यदि कोई नया जवान इस अभ्यास को थोड़ी-थोड़ी अवधि के अन्तर पर 2-3 बार दुरुस्त तरीके से कर सके तो उससे आगे चलकर बहुत अच्छा फायरर बनने की आशा करनी चाहिए।

(8) फायर से पहले इस अभ्यास के करने से बहुत ही अच्छा नतीजा प्राप्त होगा।

### 13. अभ्यास—

अ. ट्रि0अ0 5 को सिक्का रखकर टेस्ट करो।

ब. पूरे पाठ का जोड़ियों में अभ्यास लो।

14. संक्षेप—पाठ की मोटी-मोटी बातें दोहराओ।

15. अन्तिम कार्य—स्क्वाड का निरीक्षण और स्वस्थान।

व व व

**पाठ 7**  
**गोली फायर करना**  
(FIRING A SHOT)

---

---

**1. प्रारम्भिक कार्य—** स्क्वाड और राइफल का निरीक्षण करो।

**प्रबन्ध—** स्टिक रेस्ट तीन कदम पर गड़े हुए, एक प्रशिक्षक के लिये और एक अतिरिक्त होना चाहिये। 1'X1' तारगेट 25 गज पर लगा हुआ।

**2. दोहराई—** अच्छे फायर के बुनियादी उसूलों और शिस्त के कायदों पर प्रश्नोत्तर द्वारा। स्क्वाड, राइफल अपने-अपने स्टिक रेस्ट के पास रखे और आधे दायरे में बैठ जाय।

**3. उद्देश्य—**अच्छे फायर के मूल सिद्धान्तों को कायम रखते हुए गोली फायर करने की कार्यवाही सिखाना।

**4. सामान—**राइफल, एमिगडिस्क, स्टिक रेस्ट और 1'X 1'तारगेट।

**5. बयान—**अच्छे फायर के तीनों सिद्धान्तों को सीख चुकने के बाद सिखलाई के असली लक्ष्य अर्थात् फायर करने की शिक्षा देना आवश्यक है। इसलिये आवश्यक है कि जवान को रेंज पर ले जाने से पहले परेड ग्राउन्ड पर ही तीनों मूल सिद्धान्तों को मिलाते हुए गोली फायर करने की तरतीब सिखा दी जाय ताकि रेंज पर समय की बचत हो और रिक्रूट अच्छा परिणाम हासिल कर सके। परम आवश्यक है कि परेड ग्राउन्ड पर सूखा फायर करते समय हर उन बातों का विशेष ध्यान रखा जाए जिससे कि यदि फायर जिन्दा राउन्ड के साथ होता तो गोली कारगर रूप से बुल में लगती।

**6. सिखलाई का क्रम—**पाठ 3 भागों में सिखाया जायेगा।

**7. भाग एक—** स्टिक रेस्ट का प्रयोग—

**अ. स्टिक रेस्ट का बयान—** स्टिक रेस्ट इसलिए बनाई गई है कि राइफल को बगैर हिले पकड़े रखने में मदद मिले और फायर करने वाले की पकड़ में भी ढीलापन न आए। यही कारण है कि स्टिक रेस्ट दाहिनी तरफ रखा जाता है ताकि उसमें और आड़ के बगल से फायर करने में अन्तर किया जा सके। यह मजबूत लकड़ी या लोहे का बना होता है, इस पर 12 इन्च चौड़ा टाट का एक टुकड़ा मजबूती से लपेट कर बाँध दिया जाता है जिससे राइफल पर रगड़ न लगे। जमीन से रेस्ट की ऊँचाई 18" होनी चाहिये। यदि जमीन सख्त हो तो इसे किसी बाक्स या सैंड बैग आदि के साथ बाँधकर स्थिर कर दिया जाय।

**ब. प्रयोग—** (नमूना बयान से) 'मर' पोजीशन बनाओ। राइफल को स्टिक रेस्ट के बाईं तरफ रखते हुए राइफल की बैकसाइट और आउटर बैड के बीच वाला भाग स्टिक रेस्ट के साथ लगा हो। स्टिक रेस्ट का प्रयोग करते समय केवल इससे सहारा लो (देखो चित्र 9) इस पर किसी प्रकार का दबाव न पड़े अन्यथा जवान को राइफल गलत पकड़ने की आदत पड़ जायेगी।



चित्र न०-९

(प्रशिक्षक सेपटी कैच लगाए और राइफल दरी पर रख कर खड़ा हो जाय।)

**8. अभ्यास—** जवानों को अभ्यास कराने के लिये उन्हें अपनी-अपनी दरी पर खड़ा करो। आदेश दो “पोजीशन” “स्टिक रेस्ट का प्रयोग करो” अब प्रशिक्षक जवानों की पोजीशन देखे और विश्वास करे कि उनका संकेत तारगेट की तरफ है और बदन लाइन ऑफ फायर से तिरछा है। राइफल स्टिक रेस्ट (Stick Rest) पर ठीक जगह पर मिली हुई है और उस पर दबाव तो नहीं है। अभ्यास के बाद राइफल नीचे करवाओ। सेपटी कैच लगवाओ और राइफलें उनकी दरी पर रखवाकर जवानों को पहले की तरह अपनी दरी के पास आधे दायरे में बिठा दो।

### 9. भाग दो—कूदरती सिधाई (Automatic Alignment) प्राप्त करना—

(नमूना बयान से) बताओ कि यदि फायर करने वाले की पोजीशन का संकेत सीधा तारगेट की तरफ न हो तो राइफल ठीक निशाने पर जमाए रखने में अनावश्यक ताकत लगाने की जरूरत पड़ेगी। अर्थात् जब वह राइफल को एमिंग पोजीशन में लायेगा तो उस समय जिस्म में तनाव पैदा होगा। इसलिए सिखलाई और रेंज पर फायर करने से पहले सिधाई चेक करने के लिये कार्यवाही इस तरह की जाय कि दुरुस्त फायरिंग पोजीशन प्राप्त हो सके।

**नमूना—** ‘भर’ पोजीशन बनाओ और राइफल को कन्धे में ले जाओ। (जब राइफल कन्धे में हो, सेपटी कैच आगे हो) सही पकड़ कायम करते हुये दुरुस्त शिस्त लो। कोहनियों को हिलाए बिना सावधानी के साथ अँगुलियां खोल कर राइफल पर से दबाव हटा दो। बट कन्धे में ही रहे। अब देखो कि



राइफल की शिस्त किधर है। यदि शिस्त निशाने से हट जाय तो समझ लो कि फायर करने वाले की पोजीशन सही नहीं है और उसकी राइफल की सिध्दाई ठीक नहीं है। जो गलती मालूम हो उसे दूर करके राइफल को ठीक तारगेट की सीध में लाओ। यदि एलीवेशन में कोई बड़ा परिवर्तन करना हो तो उसके लिए यथा सम्भव कोहनियों को हिलाए बिना बदन को आगे या पीछे करो। यदि एलीवेशन में मामूली गलती मालूम हो तो उसे दूर करने के लिए बांये हाथ की कोहनी हिलाए बिना हाथ को थोड़ा आगे या पीछे सरकाओ। यदि राइफल की दिशा में परिवर्तन करना हो तो बदन को दाहिने के लिए दाहिने और बांये के लिए बांये तरफ खिसकाओ। यह कार्यवाही करते समय दोनों ही कोहनियाँ न हिलने पाए। पोजीशन दुरुस्त करने के बाद फिर सही पकड़ कायम करो और शिस्त लो। शिस्त ठीक हो जाने पर बट कन्धे से नीचे लाओ। (प्रशिक्षक खाली करके अपनी राइफल जमीन पर रख कर खड़ा हो जाय।)

**10. अभ्यास—** स्कवाड के जवानों से सिध्दाई कायम करने का अभ्यास लो और बांये-बांये ऊपर-नीचे की गलती का अनुभव करवाओ। अनुभव करने के लिए उनको आदेश दो। अब आप सब पकड़ ढीली छोड़ें “अब सबकी शिस्त ज्यादा ऊपर नीचे है” कार्यवाही करो। अब प्रशिक्षक चेक करे और प्रश्न करे इसी प्रकार अभ्यास कराओ। अभ्यास के बाद राइफलें खाली करवाओ। स्कवाड को अपनी दरी के बांये और दाहिने बैठाओ।

### **11. भाग तीन— फायर करने का क्रम—**

**(अ) पक्का इरादा—** बताओ कि फायर उस समय तक भली प्रकार से नहीं किया जा सकता जब तक फायर करने वाला पूरा ध्यान लगाकर फायर न करे। फायर करने वाला हर गोली फायर करते समय अपने दिल में ठान ले कि जो गोली फायर करेगा वह सही निशाने पर अवश्य जायेगी।

**(ब) गोली फायर करने का समय—** बताओ कि यदि फायर के तीनो मूल सिद्धान्तों की सिखलाई ठीक ढंग से हुई और जवान की पोजीशन ठीक बन गई है तो सही पकड़ व दुरुस्त शिस्त के समय एक गोली फायर करने में अधिक समय नहीं लगाना चाहिये। निशाना या पकड़ ठीक करने में देर लगाने से आँख और रंग पुट्टे थक जाते हैं। गलत फायर का कारण अधिकतर यही है। यदि 5 सेकेन्ड में निशाना या पकड़ ठीक न की जा सके तो राइफल को नीचे लाओ। फिर आराम करो और फिर प्रयत्न करो। बदन को ढीला छोड़कर हरी-हरी चीजों पर नज़र जमाओ। क्योंकि यह रंग आँखों को आराम देता है।

### **(स) रेंज का आदेश मिलने पर कार्यवाही—**

बताओ कि रेंज का आदेश मिलने पर बताया हुआ रेंज लगाओ। तारगेट, बताए जाने की प्रतीक्षा करो।

**आदेश—** “भर 200 गज सामने तारगेट, फायर।”

**(द) गोली फायर करने का क्रम—** इस कार्यवाही के प्रत्येक भाग को तरतीब वार बताओ और उनका नमूना दो।

(1) आरामदेह पोजीशन बनाओ और पोजीशन दुरुस्त बन जाने पर दिया हुआ रेंज साइट पर लगाओ।

(2) “लिम्बर अप” की कार्यवाही करो और ट्रि0अ0इ0न0 5 को दुरुस्त करो।

(3) 'भर' के आदेश पर राइफल लोड करो।

(4) फायर करने की पोजीशन एक बार फिर चेक करो और उसके बाद ध्यान दो कि बाँई कोहनी अपने स्थान से न हिले। जहाँ तक हो सके "लिम्बर अप" की कार्यवाही के बाद ही बाँई कोहनी अपने स्थान पर जम जानी चाहिए।

(5) शरीर को ढीला छोड़ो, लम्बी साँस लो और आँखों को यथा शक्ति आराम दो। यदि सम्भव हो तो हरी चीजों को देखो क्योंकि यह रंग आँखों को आराम देता है। यदि कोई हरी चीज़ नजदीक न हो तो कुछ देर के लिए हल्के से आँख बन्द करके आराम करो।

(6) पक्का इरादा कायम करो। इरादा पक्का हो जाने पर नजर को एक बार निशान पर जमाओ जिससे लक्ष्य का चित्र आँखों में उत्तर आये। अब राइफल को कंधे में ले जाओ ट्रिगर पर पहला दबाव लो और जितनी तेज़ी से हो सके उतनी तेज़ पकड़ दुरुस्त करो। सीखे हुए जवान को पकड़ दुरुस्त करने में एक या दो सेकेण्ड से अधिक समय नहीं लगाना चाहिए। पकड़ दुरुस्त करते समय साँस पर काबू करो और निगाह को गौर से फोर साइट पर जमा दो। यह दोनों कार्यवाही अत्यन्त आवश्यक हैं।

(7) पकड़ और पोजीशन दुरुस्त हो जाने पर शिस्त दुरुस्त करो, जैसे ही सही शिस्त का चित्र आँख को नजर आये दाहिने हाथ की कलमे वाली अँगुली के द्वारा ट्रिगर अपने आप दब जाये। इस कार्यवाही में 5 सेकेण्ड से अधिक समय नहीं लगना चाहिए।

(8) अगर प्रारम्भिक सिखलाई सही हुई है तो फायर करने वाले को फायर हो जाने का आभास उसके बाद ही होगा। अगर उसका इरादा पक्का और सिखलाई सही है तो गोली कारगर होगी। फायर करने के तुरन्त बाद पकड़ में ढिलाई नहीं आने देना और ट्रिगर पर से अँगुली का दबाव कम नहीं होने देना चाहिये। ऐसा करने से फायर करने वाले को सही अन्दाज लगेगा कि उसकी शिस्त, पकड़ और पोजीशन फायर होते समय कैसी थी।

(9) "फालो थू"— फायर हो जाने पर राइफल पर पकड़ और शिस्त को उस समय तक कायम रखो जब तक गोली अपने निशान तक न पहुँच जाय।

(10) गोली के निशाने का अन्दाज लग जाने पर राइफल को कंधे में ही दुबारा लोड करो। इसके लिए तेज़ी से बोल्ट को खोलो और एक ही झटके में बन्द करो।

(11) अब मोटी तौर पर फिर शिस्त सही करो।

(12) अगर तुरन्त ही दूसरी गोली फायर करने की आवश्यकता न हो तो फायरर राइफल की पकड़ ढीली करे और राइफल को कंधे से नीचे लाए। जिस्म को ढीला छोड़ दे और ईमानदारी से बयान करे कि उसकी गोली कहाँ लगी है। अगर उसके ख्याल से ठीक लगी है तो कुछ बयान न करे वरना दाहिने, बांये ऊपर, नीचे आदि के जरिये जहाँ उसकी शिस्त थी जगह बताये।

**13. फायर की रफ्तार—** राइफल से दुरुस्ती कायम रखते हुए व दिमाग और शरीर पर बिना किसी किसम का अनुचित जोर दिये हुए एक मिनट में 5 राउन्ड आसानी से फायर किए जा सकते हैं इसलिये राइफल की स्लो (Slow) फायर की रफ्तार एक मिनट में 5 राउन्ड मानी जाती है।

**14. अभ्यास—** (पूरे पाठ का अभ्यास ) जवानों को अपनी-अपनी दरी पर भेंजो और पूरे काम (मय लिम्बर अप) का अभ्यास लो।

**आदेश—** पोजीशन 200 गज (लिम्बर अप हो चुकने के बाद फिर आदेश दो) ड्रिल कार्ट्रिज भर, सामने 1'X1' तारगेट फायर। रोक फायर, खाली कर (स्कवाड को बीच में आधे दायरे में बिठा दो)।

**15. संक्षेप—**(अ) पाठ की मोटी-मोटी बातें दोहराओ।

**(ब) प्रारम्भिक शिक्षा की परीक्षा—**(T.O.E.T.) बताओ कि ट्रिगर पर काबू पाने के लिए एक टेस्ट लिया जाता है। ट्रिगर पर काबू रखने का टेस्ट देते समय जवान भरने की पोजीशन बनाये और प्रशिक्षक की आँख पर निशाना बाँधे (प्रशिक्षक एक गज आगे हो और प्रशिक्षक के पास एमिंग डिस्क होगा) प्रशिक्षक देखे कि राइफल लगभग उसकी आँख के बीच में है या नहीं और ट्रिगर दबाने पर भी राइफल करीब-करीब निशाने की सीध में रहती है या नहीं। टेस्ट देते समय ड्रिल कार्ट्रिज हरगिज प्रयोग नहीं किया जायेगा पास होने की शर्त -पाँच में चार बार ट्रिगर सही तरीके से दबाया जाना आवश्यक है।

**अन्तिम कार्य—**स्कवाड का निरीक्षण करो और स्वस्थान।

व व व

## पाठ 8

# तान शस्त्र की पोजीशन लेना और राइफल को कूल्हे में जमाकर फायर करना।

**प्रारम्भिक कार्य**—स्क्वाड को लाइन बनाकर गिनती कराओ और स्क्वाड व राइफल का निरीक्षण करो। राइफल काक और सेफटी कैच आगे रहने दो। (प्रारम्भ में सेफटी कैच लगाया भी जा सकता है) संगीन लगाओ। सिलिंग ढीली की हुई हो (टोपी उतरवाओ)।

**स्क्वाड खोलने का तरीका**—स्क्वाड को दो गुपो में बांटो। आदेश दो” संगीन सिखलाई के लिये खुल” (For Bayonet Training Move) इस आदेश पर नं0 1 गुप 8 कदम दौड़ कर आगे जायेगा और पीछे मुड़ेगा। नं0 1 गुप का हर जवान दाहिने वाले जवान के बाँये पाँच कदम पर खुल जायेगा। नं0 2 गुप के जवान नं0 1 गुप के जवानों के सामने हो जायेंगे। आदेश होगा—“फार्म अप (Form up)” इस आदेश पर नं0 1 गुप के बाँये वाले और नं0 2 गुप के दाहिने वाले जवान तेजी से अन्दर को हो जायेंगे (प्रशिक्षक की पोजीशन दोनो गुपों के मध्य और बाहर वाले जवान की लाइन में हो।)

**2. दोहराई**— मुठभेड़ की लड़ाई पर प्रश्न उत्तर।

**3. उद्देश्य**— तान शस्त्र की पोजीशन बनाना, कूल्हे से फायर करना सिखाना है।

**4. सामान**— राइफल, संगीन, पुतले या खड़ी डमी।

**5. बयान**— वर्तमान लड़ाई में भी ऐसे मौके आ जाते हैं जब कि लड़ाई के अन्तिम चरण में संगीन का वार या उसके वार की धमकी बड़ी कारगर सिद्ध होती है। एक पक्के इरादे वाले जवान के हाथ में नंगी संगीन की धमकी देखकर बहुत से दुश्मनों का हौसला पस्त हो जाता है।

ऐसे अवसर उन दशाओं में भी आते हैं, जबकि जंगल, गाँव, घिरी हुई जगहों में या रात के समय दुश्मन की टोलियों से अचानक मुठभेड़ हो जाती है।

संगीन घोंपने वाले जवान के लिए सफलता के तीन गुण होते हैं। जोश, तेजी और सिधार्ई।

**6. भाग**— यह पाठ तीन भागों में सिखाया जायेगा।

**7. भाग 1**— “तान शस्त्र” और “आराम की पोजीशन”—

(नमूना बयान से स्क्वाड साथ में नकल करे)

स्क्वाड खुला और फार्म अप (Form up) की दशा में। प्रशिक्षक का मुँह और पोजीशन ऐसी जगह हो जहाँ से प्रशिक्षक पूरे स्क्वाड को, और स्क्वाड प्रशिक्षक को देख सके।

**(अ) तान शस्त्र**— का नमूना दो, सब जवान नकल करें। आदेश “तान शस्त्र—इस आदेश पर बाँये पैर को चलती हालत में आगे लो और साथ ही राइफल को उछाल कर बदन के सामने लड़ने की ऐसी पोजीशन में लाओ जिसमें दुश्मन की संगीन के वार को रोकने और अपनी राइफल से गोली या संगीन के प्रयोग की सहूलियत और तैयारी रहे। इसके साथ ही यदि जवान चाहे तो जोश पैदा करने व दुश्मन को डराने के लिये कोई भी फौजी या धार्मिक नारा या आवाज पैदा कर सकता है।

**दशा**— इस दशा में राइफल मजबूती से दोनो हाथों से पकड़ी हुई, बाँया हाथ आउटर बैड के



निकट कलाई कुछ ऊपर से। बाँई कोहनी में थोड़ा खम, दाहिना हाथ स्माल ऑफ दि बट पर ऐसे स्थान पर हो जहाँ से अगर फायर करना पड़े तो हिलाये बिना फायर किया जा सके। राइफल का बट जवान के दाहिने कूल्हे पर मजबूती से जमा हुआ ताकि दुश्मन पर संगीन घोंपते समय शरीर के बल का पूरा प्रयोग किया जा सके। निगाह दुश्मन पर, चेहरे पर गुस्सा और पक्का इरादा दाहिनी टाँग सीधी और पैर चलती हालत में। बाँई टाँग में खम। बदन का वजन अगले पैर पर होना चाहिये। (देखो चित्र-10)



चित्र नं०-10 तान शस्त्र

**(ब) "आराम कर"(REST)-**

"आराम कर" के आदेश पर राइफल को दाहिने हाथ से आउटर बैड के निकट पकड़ते हुए बट को दोनों पैरों के बीच में लाओ और आहिस्ता से जमीन पर टिका दो। बदन को ढीला छोड़ो और सीधा खड़े हो जाओ।

(इसका नमूना दिखाओ और अभ्यास कराओ )

**8. अभ्यास-** जवानों से खड़े-खड़े अभ्यास कराओ।

(अ) पहले जवान अपनी खुशी से अभ्यास करें (प्रशिक्षक चेक करें)

(ब) फिर आदेश से अभ्यास कराओ। उसमें प्रशिक्षक सब की गलती दूर करें।

(स) इशारे से अभ्यास कराओ। इसमें प्रशिक्षक सीटी और बदन के किसी भी भाग से (पैर या हाथ से) इशारा दे। इस पर जवान "तान-शस्त्र और 'आराम कर" करें (स्क्वाड को फिर से एक लाइन में करो) आदेश दो "एक लाइन बन।"

## 9. भाग 2— राइफल ले जाने का नियम—

बताओ कि दुश्मन के करीब पहुँच कर उस पर हमला करने के लिये “तान—शस्त्र करते हैं। परन्तु यह पोजीशन देर तक सही कायम नहीं रखी जा सकती। इसीलिये दूर तक जाने के लिये राइफल को ऐसे तरीके से उठाना चाहिये कि राइफल को लेकर चलने में असुविधा या थकावट महसूस न हो। इसके दो तरीके हैं। दोनों तरीके मौके के अनुसार अपनाये जा सकते हैं।

**(अ) तोल—शस्त्र—** (पहले नमूना दिया जाय और स्क्वाड देखे) बताओ कि तोल—शस्त्र साधारणतया तेज चाल की हालत में बनाया जाता है, संगीन लगी होने के कारण राइफल का तोल बिन्दु साधारण से कुछ भिन्न हो जाता है। इसलिये इसमें दाहिने हाथ की पकड़ को भी आवश्यकतानुसार बदलना होगा।

**(ब) वाक—अप पोजीशन—** (बयान से नमूना) जब जवान तान शस्त्र की पोजीशन पर न हो तो चलते समय राइफल को “वाक—अप” पोजीशन में रखते हैं। “वाक—अप पोजीशन करने के लिये दाहिने हाथ से राइफल को उछाल कर बदन के सामने दोनों हाथों से पकड़ो सिलिंग और मैगजीन सामने हो। संगीन बांये कन्धे की लाइन में और दाहिना हाथ सीधा रहे। राइफल पर बाँया हाथ आउटर बैड पर लपेट कर पकड़ा हो। दाहिना हाथ स्माल ऑफ दि बट पर और बाजू सीधा हो। दोनों पैर मिले हुए, निगाह सामने। (देखो चित्र 11)



चित्र नं०-11 वाकअप पोजीशन  
राइफल तथा बैनट // 38

### (स) "वाक-अप" पोजीशन-से "तान शस्त्र"-

यदि इस पोजीशन से 'तान शस्त्र' करने की आवश्यकता हो तो बाँया पैर कद के अनुसार आगे लो और बट को कूल्हे पर मजबूती से जमाओ। (दिखाओ) यदि "तानशस्त्र" से वाक-अप-पोजीशन करना हो तो पीछे वाले पैर को आगे वाले पैर से मिलाओ और 'वाक-अप' की दशा बना लो।

#### 10. अभ्यास:

(अ) खड़े-खड़े- (स्क्वाड एक लाइन में) 'तानशस्त्र' और 'वाक-अप' पोजीशन का अभ्यास आदेश देकर कराओ।

(ब) चलते-चलते- (तेज चाल में) आदेश मध्य से "तेज चल" 'वाक-अप' पोजीशन ओर 'तान शस्त्र' कराओ।

(स) दौड़ते हुए इसी काम का अभ्यास कराओ। स्क्वाड को फीगर तारगेट या डमी के दाहिनी तरफ एक लाइन में खड़ा करो।

#### 11. भाग-3-कूल्हे से फायर करना-

(नमूना बयान से) बताओ की हरकत के दौरान में सम्भव है कि दुश्मन पर बहुत नजदीक मसलन 10 गज की दूरी से ही फायर करना पड़े। क्योंकि गोली की चोट अधिक कारगर होती है अतः संगीन के इस्तेमाल के साथ जब भी अवसर मिले गोली का प्रयोग करने से कभी भी नहीं चूकना चाहिये।

पुतले या डमी के सामने खड़े होकर नमूना दो। बयान करो कि 'तान शस्त्र' की पोजीशन लेने से राइफल की मजल दुश्मन की ओर हो जाती है और अगर जवान को फौरन फायर करना हो तो कलमें वाली अँगुली ट्रिगर पर आ जाती है। आगे बढ़ो। लगभग 10 गज पर पहुंचने के बाद बाँयी कोहनी के खम को निकालो और नजर तारगेट पर रखते हुए ट्रिगर को एक ही दबाव में दबा कर फायर करो और चलती हालत में "फिर से भर" की कार्यवाही करो। बताओ कि संगीन का वार करना बाद में बताया जायेगा।

12. अभ्यास- (अ) जवानों को ठहराव के साथ आदेश दो "आगे बढ़ सामने दुश्मन इस पर जवान बताये तरीके के अनुसार पूरी कार्यवाही करें। गलती दूर करो।

(ब) तेज चलते हुए-आदेश दो "आगे बढ़" (वाक-अप) पोजीशन से आगे बढ़ो) 'सामने दुश्मन' तानशस्त्र-फायर, चलते-चलते 'फिर भर' की कार्यवाही करो।

(स) गुप्तों में अभ्यास।

#### 13. संक्षेप-(अ) तानशस्त्र-व दो अच्छे जवानों का नमूना।

(ब) संगीन की सिखलाई का उद्देश्य-(1) जवानों को अपने आप पर पूरा भरोसा पैदा करना है।

(2) जवानों का इकट्ठा अभ्यास करा कर उनमें एक टीम की तरह काम करने की क्षमता पैदा की जाती है।

(स) अभ्यास के दौरान संगीन की नोक दुश्मन की पेट की लाइन में रखी जाय।

नोट- चलते-चलते यदि बोल्ट बार-बार खुल जाय तो सेपटी कैच लगाने की इजाजत दो।

14. अन्तिम कार्य- स्क्वाड का निरीक्षण और स्वस्थान।

## पाठ 9 संगीन घोंपना (THE POINT)

**1. प्रारम्भिक कार्यवाही—** स्क्वाड व राइफल का निरीक्षण करो फिर राइफल काक करके संगीन मय म्यान लगवाओ और टोपी उतरवाओ।

**2. दोहराई—** 'तानशस्त्र' और 'आराम कर' पोजीशन की।

**3. प्रबन्ध—** बताओ कि "डमी के दाहिने लाइन बन" के आदेश पर सबसे दाहिने वाला जवान डमी के दाहिने तीन कदम पर और उसकी सिध्दाई में जाकर खड़ा हो जायेगा। शेष सब जवान उसके दाहिने एक लाइन बन जायेंगे। आदेश दो "डमी के दाहिने लाइन बन"। यदि स्क्वाड की संख्या अधिक हो तो उसको दो लाइन में करो।

'म्यान उतार' के आदेश पर सब जवान बाँये हाथ से म्यान उतार कर बैनेट फ्राग में डाल लें। (एक से अधिक स्क्वाड हों तो खड़ी डमियाँ 1 लाइन में लगभग 5 कदम के अन्तर पर हों।)

**4. उद्देश्य—** खड़े और लेटे दुश्मन पर संगीन घोंपना सिखाना है।

**5. सामान—** राइफल, संगीन, खड़ी और पड़ी डमी (दुश्मन)।

**6. बयान—** जवान दुश्मन पर संगीन से वार करने में तभी सफल हो सकता है जब उसे अपने आप पर पूरा भरोसा हो व वह दुश्मन को जान से मार डालने का पक्का इरादा किये हुए हो। यह तभी सम्भव है जब हर जवान इस काम की तकनीक पूरी तरह से जानता हो।

**7. सिखलाई का क्रम—** पाठ दो भागों में सिखाया जायेगा।

**8. भाग 1—** खड़े दुश्मन पर संगीन घोंपना।

(नमूना ठहराव से) सबसे पहले प्रशिक्षक स्क्वाड के बाँये मिलकर बताए कि "डमी के सामने लाइन बन" का आदेश मिलने पर 'वाक—अप' पोजीशन बनाकर दौड़कर डमी के सामने लगभग 10 गज पर खड़े हो जाओ। (प्रशिक्षक स्वयं आदेश देकर डमी के सामने आए)।

**नोट—** प्रशिक्षक बाँये से लाइन तोड़ेगा तथा नमूना देगा, लेकिन प्रशिक्षार्थी यह कार्यवाही दाहिने से करेंगे क्योंकि नम्बर 1 दाहिने है। ज्योंही नम्बर 1 डमी के सामने आने के लिए लाइन तोड़ता है स्क्वाड के शेष जवान दो कदम दाहिने लेंगे। यह कार्यवाही एक साथ की जायेगी। संगीन घोंप की कार्यवाही के उपरान्त जवान क्रमशः स्क्वाड के पीछे से स्क्वाड के बाँये स्थान लेते जायेंगे।

प्रशिक्षक तान शस्त्र के बारे में प्रश्नोत्तर करे और वही पोजीशन बनाए और संगीन घोंपने का नमूना दे।

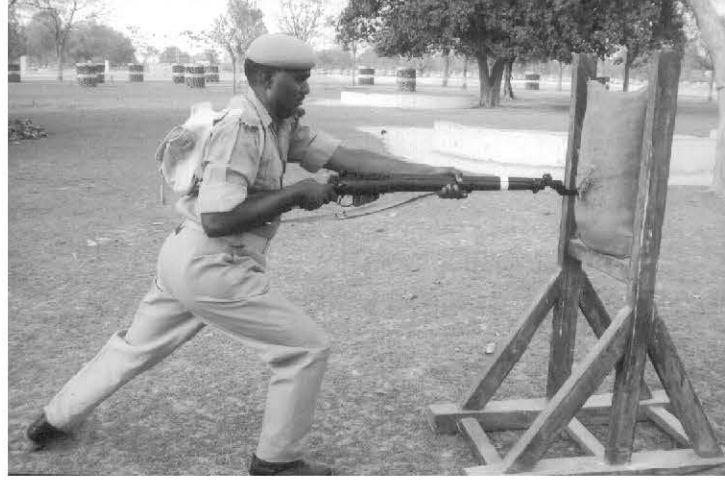
(अ) "रेडी" (तैयार हो) के आदेश पर तेज चल कर आगे आओ और इतनी दूर पर आकर रूक जाओ, जहाँ से कूद कर संगीन घोंप सको।

प्रशिक्षक "रेडी" का आदेश देकर डमी से 4' या 5' कदम की दूरी पर रूक जाय।

(ब) "घोप—ठहरो—घोंप" के आदेश पर पीछे वाले पैर को आगे बढ़ाते हुए पूरे जिस्म की ताकत से दुश्मन के पेट में संगीन घोंप दो (प्रशिक्षक आदेश देकर संगीन घोंपे और बताये)

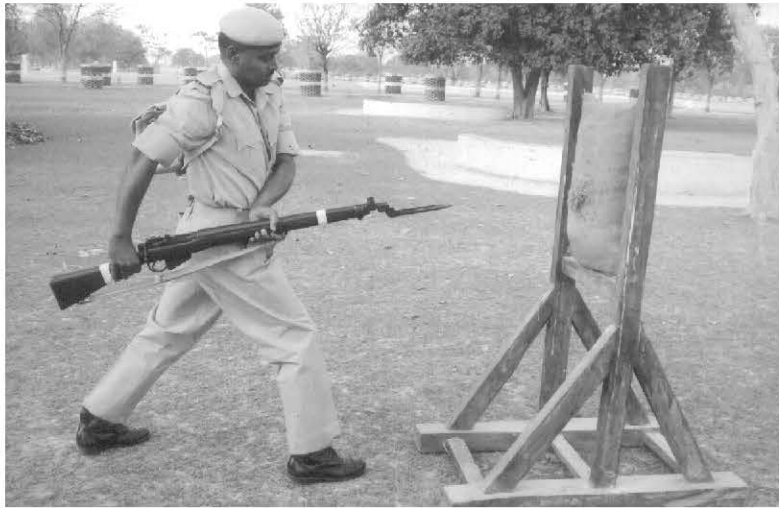
संगीन करीब आधी घुस जाय। यह कार्यवाही करते समय बाँया बाजू सीधा तथा पीछे वाला पैर सीधा, आगे वाले पैर में खम, निगाह दुश्मन की नजर से मिली हुई तथा चेहरा गुस्से से भरा हुआ। (संगीन घोंपते समय दाहिना पैर आगे हो) (देखो चित्र—12)





चित्र 12- खड़े दुश्मन पर संगीन घोंपना

(स) "निकाल-ठहरो-निकाल-" के आदेश पर राइफल को दोनों हाथ से सीधा पीछे खींचो। (आदेश) नमूना देते हुए बताओ बाँया हाथ बदन से मिला हुआ। दाहिना हाथ पीछे को सीधा, संगीन की नोक दुश्मन की घाव के लाइन में। निगाह दुश्मन पर। बाकी शरीर की दशा पहले की तरह।



चित्र 13- खड़े दुश्मन पर निकाल पोजीशन

(द) "तानशस्त्र" के आदेश पर संगीन की नोक और आगे वाले पैर के पंजे का रूख, बाँयी तरफ बदली करते हुए पीछे वाले पैर को आगे लेकर "तान शस्त्र" की पोजीशन बनाओ।

(र) "सीधा गुजर" (Pass Through) के आदेश पर बाँयी तरफ से तीन कदम सीधा जाओ, चौथा कदम जमीन पर पड़ते ही "वाक अप" पोजीशन बनाओ और तीन कदम और पूरा करके दौड़ चाल में

जाओ। दाहिने मुड़ों और स्क्वाड के बाँये मिल जाओ। (प्रशिक्षक अपनी राइफल डमी के एक तरफ रख कर स्क्वाड के सामने आ जाय) यदि स्क्वाड दो लाइन में है तो एक लाइन बनाओ।

**9. आदेश—** बताओ तान—शस्त्र, तैयार, घोंप, ठहरो घोंप, निकाल ठहरो निकाल, तानशस्त्र, सीधा गुजर। इन तमाम आदेशों पर कार्यवाही उसी प्रकार की जायेगी जैसे नमूना दिया गया है।

**10. अभ्यास—**स्क्वाड से ठहराव के साथ एक—एक करके अभ्यास लो। यदि डमी ज्यादा हो तो उनके अनुसार जवानों से इकट्ठा अभ्यास लो।

**11. नमूना—** चलते हुए (इसके लिये स्क्वाड के बाँये जाने की आवश्यकता नहीं है।)

**प्रश्न—** प्रशिक्षक इतना पाठ प्रश्नोत्तर द्वारा दोहराये।

**आदेश—** “चल कर एक अनी घोंप”। प्रशिक्षक नमूना दे और बताये कि इस आदेश पर संगीन घोंपने का सीखा हुआ काम बिना किसी और आदेश की प्रतीक्षा के किया जायेगा। नमूने का पूरा कार्य करने के बाद राइफल को अलग रख कर स्क्वाड को एक लाइन में खड़ा करें।

**12. अभ्यास—** (अ) तेज चाल में चलते हुए एक अनी घोंपने का अभ्यास लो।

**(ब) दौड़ते हुए—** एक अनी घोंपने का अभ्यास लो। इसके लिय आदेश “दौड़कर एक अनी घोंप” होगा। अब पड़ी डमी लगवा कर उसके बाये दो लाइन में स्क्वाड को खड़ा करो।

**13. भाग 2—** जमीन पर लेटे दुश्मन पर संगीन घोंपना—

(नमूना बयान से) बताओ कि लड़ाई में दुश्मन लेटा हुआ या मोर्चे के अन्दर पड़ा भी मिल सकता है। उसे भी उसी जोश से बर्बाद करना होगा जैसे खड़े दुश्मन को बर्बाद करना सीखा है।

अब लेटे दुश्मन पर ठहराव से संगीन घोंपने का नमूना दो (प्रशिक्षक को स्क्वाड के बाँये जाने की आवश्यकता नहीं है) सीधा डमी के सामने जाओ प्रश्नोत्तर से “तान शस्त्र और “तैयारी” तक दोहराओ यहाँ तैयारी की पोजीशन में बाँया पैर आगे हो ताकि पीछे वाले पैर को आगे बढ़ा कर संगीन घोंप सकें। (बयान से नमूना)

**(अ) “घोंप ठहरो”**— के आदेश पर संगीन की नोक चटकी से नीचे झुकाओ ताकि नोक लेटे हुए दुश्मन की लाइन में आ जाय। बाँये बाजू का खम न निकालो

**(ब) घोंप—** के आदेश पर पीछे वाले पैर को आगे लेते हुए बदन की ताकत से डमी में संगीन घोंपो। ध्यान रहे कि जमीन पर लेटे दुश्मन पर संगीन घोंपते समय पैर डमी से अलग रहे अन्यथा हो सकता है कि चोट लग जाय। इस दशा में भी संगीन लगभग आधी दुश्मन के पेट में घुसी हो। बाँये हाथ का खम निकला हुआ बट कूल्हे में जमा, कोहनी ऊपर जमी हो। आगे वाले पैर में खम, पीछे वाला पैर थोड़ा बाँये पीछे और खम निकला हुआ। निगाह घाव पर चेहरे पर गुस्सा और पक्का इरादा।

(देखो चित्र 14)



चित्र-14 लेटे हुए दुश्मन पर संगीन घोपना

(स) "निकाल ठहरो— निकाल" के आदेश पर संगीन को निकालने से पहले बाँये पैर को दुश्मन के बदन पर संगीन के नजदीक उटाकर ताकत से मारते हुए संगीन को बाहर खींच लो। पैर लगाने से संगीन आसानी से बाहर निकल जायेगी। (देखो चित्र 15)



चित्र-15 लेटे हुए दुश्मन पर निकाल पोजीशन

(द) इस दशा में बाँया बाजू पेटी से मिला हुआ परन्तु पकड़ पहले की तरह। दाहिना बाजू पूरा पीछे खम निकला हुआ। संगीन की नोक दुश्मन के घाव की सीध में। बाँया पैर डमी पर और उसमें खम, दाहिना पैर पीछे और सीधा। बदन का बोझ आगे वाले पैर पर हो।

(य) "तान-शस्त्र"— के आदेश पर बाँये पैर को डमी पर दोबारा मारते हुए पीछे वाले पैर को आगे लेते हुए कहकर "तानशस्त्र करो।

(र) "सीधा गुजर"— के आदेश पर पहले की कार्यवाही करो।

14. अभ्यास—(अ) अभ्यास तहराव से।

(ब) चलते हुए। (स) दौड़ते हुए।

(द) पूरे काम का अभ्यास गुप्तों में कराओ स्क्वाड को दो गुप्तों में बाँटो एक खड़ी और दूसरा पड़ी डमी पर अभ्यास करे।

15. संक्षेप—प्रश्नोत्तर और दो अच्छे जवानों का नमूना।

नोट— तेजी और जोश से काम करने वालों की छोटी-छोटी और साधारण गलतियों पर ध्यान न दिया जाय।

16. अन्तिम कार्य— निरीक्षण और स्वस्थान।

व व व



## निशाना बाँधना द्वितीय ;साइटों में परिवर्तन करना

(AIMING II ALTERATION OF SIGHT)

**1. प्रबन्ध—** एमिंग रेस्ट एक लाइन में लगे हों।

200X गज पर 4X4' तारगेट व फिगर 11 व 12 तारगेट

300X गज पर 4X4' तारगेट व फिगर 11 व 12 तारगेट

400X गज पर 300X की तरह एक जवान अभ्यास किया हुआ हो। राइफलें एमिंग रेस्ट पर और स्क्वाड की जगह पर रेन्ज और फीगर तारगेटों का एक सेट होना चाहिये।

**2. प्रारम्भिक कार्य—** राइफल ड्रिल कार्टरिज और स्क्वाड का निरीक्षण। देखो की साइटें ढीली तो नहीं है साइटें काली और राइफलें काक करो।

**3. दोहराई—** रेन्ज और फिगर तारगेटों पर शिस्त लगाने का अभ्यास लो और फिर तारगेटों के सेट के पास उठाओ।

**4. उद्देश्य—**एलीवेशन की गलती को ठीक करने के लिए साइटों में परिवर्तन करना तथा निशाने का और अभ्यास करना है।

**5. सामान—** राइफल, एमिंग रेस्ट, 200 गज, 300 गज पर 4X4 फीट क्लासीफिकेशन तारगेट और फीगर नं० 11 तारगेट लगे हुए। नजदीक 4X4 फीट, 6X6 फीट, फीगर तारगेट और 22 इंच स्नैप शूटिंग तारगेट लगे हुए। स्पार्टिंग डिस्क, सिग्नलिंग डिस्क, एलीवेशन टेबुल, लाल झन्डी (Miss Flag) हर तरह के रेन्ज और फिगर तारगेट, अभ्यास किया हुआ जवान, साइट काला करने का सामान और संकेतक।

**6. बयान—** यदि फायर करने के समय यह ज्ञात हो जाय कि राइफल की बैरल के एलीवेशन में फर्क है और समय उपलब्ध हो, तो बैक साइट को पुनः सेट करना आवश्यक है।

7. यह पाठ दो भागों में सिखाया जायेगा—

**8. भाग 1—** तारगेटों के नाम और इशारे।

(अ) 4'X4' क्लासीफिकेशन तारगेट

(i) नाम 4'X4' क्लासीफिकेशन (रेन्ज) तारगेट इसकी लम्बाई व चौ० दोनों 4' है इसीलिये 4'X4' क्लासीफिकेशन तारगेट कहते हैं।

(ii) **नाप—** अड़्डों के हिसाब से होने वाले भिन्न भिन्न भागों के नाम और नाप बताओ। आउटर के बाहर शेष भाग पर प्वाइंट (अंक) नहीं दिये जाते हैं

(iii) अंक हर भाग में गोली लगने पर मिलने वाले अंक बताओ।

(iv) **इशारा—** विभिन्न भागों में गोली लगने पर उसे जाहिर करने का तरीका सिग्नलिंग डिस्क द्वारा बताओ।

**5. मिस फ्लैग (Miss Flag) और सिग्नलिंग डिस्क (Signalling Disk) का प्रयोग—**

(अ) जब गोली तारगेट पर न लगे और इशारा देने वाले को पता न चले कि गोली कहाँ से

गई है तो तारगेट के सामने झन्डी को हिलाया जाय। यदि गोली तारगेट के ऊपर, नीचे दाहिने या बांये से निकल जाय तो झन्डी को उसी तरफ निकाला जाय। यदि अंक न मिलने वाले स्थान (Non Scoring Surface) में गोली लगे तो झन्डी को वहाँ लगा दो। अगर फायर 300 गज से कम हो रहा हो तो डिस्क की लकड़ी के सफेद किनारे से गोली की मार की जगह दिखाओ। इससे फायर करने वाले को सहायता मिलेगी। यदि गोली लाइन काटती है तो अन्दर वाले घेरे का संकेत दिया जायेगा।

(ब) फीगर तारगेटों के नाम और इशारा देने का नियम बातओ।

(स) नाम व नाप—

(i) फीगर नं० 11 नाम फीगर नं० 11

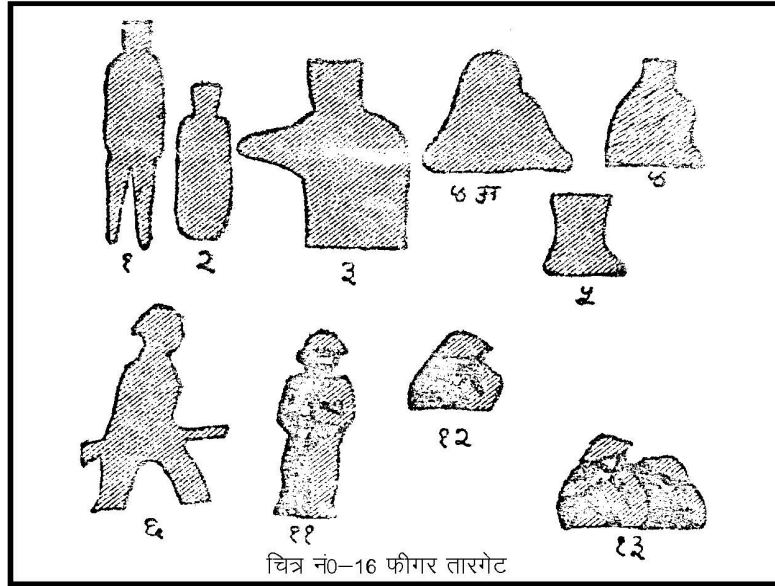
लम्बाई 3'-9" चौड़ाई - 1'-6"

(ii) फीगर नं० 12 नाम फीगर नं० 12

लम्बाई 1'-" चौड़ाई 1'-10"

(iii) फीगर नं० 13 नाम फीगर नं० 13

लम्बाई 1'-10" चौड़ाई 3' अन्य फीगर तारगेटों के नाम बताओ। (देखो चित्र 16)



(द) अंक— फीगर तारगेटों पर दायरे के अन्दर गोली लगाने पर पूरे अंक मिलते हैं।

(ह) मार दिखाने का तरीका— गोली लगने पर तारगेट को हिलाया जाय।

9. अभ्यास—प्रश्नोत्तर से अभ्यास कराओ और स्क्वाड को एलीवेशन टेबुल के पास बैठाओ।

10. भाग दो— एलीवेशन टेबुल का बयान—

अगर फायर करते समय राइफल की गोली निशाने की जगह के ऊपर या नीचे लगे तो बैक साइट पर इतना सुधार करना चाहिये कि दुबारा फायर करने पर गोली ठीक निशाने पर जा सकें। यह परिवर्तन एलीवेशन टेबुल के अनुसार किया जाता है। इस टेबुल में बताया गया है कि किस रेन्ज पर

कितना साइट कम या ज्यादा करने से गोली कितना ऊपर या नीचे लगेगी। इस टेबुल को जुबानी याद कर लेना चाहिये।

### एलीवेशन टेबुल (ELEVATION TABLE)

रेन्ज जिससे फायर किया जा रहा हो	50 गज के परिवर्तन से हासिल	100 गज के परिवर्तन से हासिल	200 गज के परिवर्तन से हासिल
200X 200 X	3''	6''	12''
300X 300X	6''	12''	24''
400X 400X	9''	18''	36''
500X 500X	12''	24''	48''
600X 600X	15''	30''	60''

स्क्वाड को यह चार्ट अच्छी तरह समझाओ और प्रश्नोत्तर करो (एक ही बार में 200 गज के लिहाज से परिवर्तन मत करो )

जवानों को समझाओ की पुतलों पर फायर करते समय गोली ऊपर या नीचे से निकल जाय तो 100 गज के लिये आवश्यक परिवर्तन करो। यदि फिर ऐसा हो जाता है तो 100 गज के लिए फिर परिवर्तन करो।

(स्क्वाड को एमिंग रेस्ट पर ले जाओ)।

**11. अभ्यास—** क्लासीफिकेशन और फीगर तारगेटों पर सहायक से सहायता लेते हुए। पहले क्लासीफिकेशन पर फिर फीगर तारगेटों पर अभ्यास लो।

**आदेश—** “सामने 200 अप्लीकेशन तारगेट पर शिस्त लो।” शिस्त लगा चुकने के बाद कहीं “सामने इशारा देखो” अब मददगार स्पार्टिंग डिस्क को इशारे के अनुसार लगाये। अब स्क्वाड को बताओ कि उनकी गोली उस जगह लगी है। वह अगली कार्यवाही करें।

अब जवान उसके अनुसार रेन्ज बढ़ाकर या कम करके फिर शिस्त लगाये। प्रशिक्षक उसका रेन्ज और शिस्त देखे कि ठीक है और प्रश्नोत्तर करे। इसी का उदाहरण देकर पुतलों पर अभ्यास लो।

**12. संक्षेप —**प्रश्नोत्तर से। परन्तु संक्षेप से पहले राइफलें जवानों के पास हों।

**13. अन्तिम कार्य—** निरीक्षण व स्वस्थान।

व व व

## दो बार संगीन घोंपना (TWO POINTS)

**1. प्रारम्भिक कार्य—** निरीक्षण, राइफल काक, संगीन चढ़ी हुई। अभ्यास करने के लिये खड़ी डमी एक लाइन में और बेतरतीब डमी पहले से ही रखी हुई हों। स्क्वाड डमी के बांये एक लाइन में म्यान उतारे हुए और प्रशिक्षक की राइफल जमीन पर, टोपी उतरवाओ।

**2. दोहराई—** खड़े दुश्मन पर एक अनी घोंपने का अभ्यास लो। अभ्यास के बाद दो दो डमी लगवाओ।

**तरीका—** दाहिनी वाली डमी के बांये लगभग एक फुट और उसके पीछे वाले फ्रेम के बराबर बाईं वाली डमी का आगे वाला फ्रेम हो। हर दो डमी के बीच लगभग 3 या 4 कदम का फासला हो। स्क्वाड डमी के बांये एक लाइन में (प्रशिक्षक अपनी राइफल उठाए)

**3. उद्देश्य—** लगातार मिलने वाले एक से अधिक दुश्मन पर संगीन घोंपना सिखाना है।

**4. सामान—** राइफल संगीन, खड़ी और पड़ी डमी (दुश्मन)।

**5. बयान—** हाथ की लड़ाई में संगीन से लड़ते समय हो सकता है कि जवान को लगातार दो दुश्मनों पर जल्दी से वार करना पड़े। इसके लिए आवश्यक है कि जवान दो दुश्मनों पर थोड़े ही अन्तर से संगीन घोंपने में दक्ष हो।

**6. सिखलाई का क्रम—**सबक दो भागों में सिखाया जायेगा।

**7. भाग एक—** दो खड़े दुश्मनों पर संगीन घोंपना—

(अ) दो खड़े दुश्मनों पर संगीन घोंपने का नमूना ठहराव से।

(i) **बयान—** जवानों को बताओ कि दो बार संगीन उसी वक्त घोपी जाती है जब पहले दुश्मन पर प्वाइंट घोप कर निकाल करने के बाद “तान शस्त्र” करने से पहले ही दुश्मन ऐसी दशा में मिल जाय कि निकाल पोजीशन से ही संगीन घोंपनी पड़े।

**नमूना—** अब प्रशिक्षक डमी के सामने आये और प्रश्नोत्तर करे, अन्त में “तान शस्त्र” बनाए। अब बताओ कि आदेश मिलेगा—

“चलकर दो अनी घोंप, निकाल ठहरो, घोप” इस आदेश पर दाहिने वाली डमी में सीखे हुये तरीके से संगीन घोप कर और निकाल कर रुक जाओ। नमूना देते हुए आदेश— “चल कर दो अनी घोप निकाल ठहरो घोप” के आदेश पर तेजी से एक बार संगीन घोपकर “निकाल की पोजीशन में रुक जाओ।

स्क्वाड से प्रश्न करो कि इतनी कार्यवाही में उन्हें कोई शक तो नहीं है अब बयान करो कि अगर इससे दाहिने या बांये दूसरा दुश्मन सामना करने के लिए आता है तो निकाल पोजीशन से ही रुख बदलते हुये संगीन घोपो आदेश “घोप” पर आगे वाले पैर से अगले दुश्मन की ओर रुख बदलो और पीछे वाले पैर को आगे बढ़ाते हुए पूरी ताकत से संगीन घोपो। बाकी काम पहले की तरह।

**8. अभ्यास—** (अ) ठहराव से आदेश होगा—“चल कर दो अनी घोप निकाल ठहरो घोप”।

(ब) तेज चाल से चलते हुए— “चलकर दो अनी घोप”।

(स) दौड़ते हुए— “दौड़कर दो अनी घोप”।



बताओ कि दूसरा दुश्मन दाहिने या बांये कहीं भी मिल सकता है। इसलिए जवान को दूसरी बार संगीन घोंपने में दोनों तरफ की दक्षता होनी चाहिए। (अभ्यास के दौरान दोनों तरफ डमी लगवा कर अभ्यास कराओ)।

**9. भाग दो के प्रबन्ध—** बेतरतीब डमियाँ लगवाओ। कहीं लेटी कहीं खड़ी कोई दाहिने पहलू पर, कोई बांये हो। स्क्वाड को जहाँ से डमी शुरू होती है वहाँ से एक फाइल में खड़ा कर दो। तमाम डमियाँ एक दायरे की शकल में हों।

**आदेश—** पहला जवान आगे बढ़ा दिया जाय (सुरक्षा के लिये दो जवानों के बीच एक डमी खाली हो)।

**10. अभ्यास—** ग्रुपों में अभ्यास कराओ। स्क्वाड के ग्रुप बाँट दो।

**11. संक्षेप—** (अ) प्रश्नोत्तर से।

(ब) दो जवानों का नमूना ।

**नोट—पहले जवान के लिये—** “आगे बढ़” बाकी अपने आप चलते जायें। अन्त में राइफल अनकॉक।

**12. अन्तिम कार्य—** स्क्वाड का निरीक्षण और स्वस्थान।

१ १ १

## बोल्ट चलाना

### (BOLT MANIPULATION)

**1. प्रारम्भिक कार्य—** स्क्वाड, राइफल व ड्रिल कार्टरिज का निरीक्षण करो।

**2. प्रबन्ध—** स्क्वाड की दरियाँ आधे दायरे में लगी हों। प्रशिक्षक की दरी आगे और बीच में। प्रशिक्षक और स्क्वाड के लिए फीगर नं० 12 तारगेट लगभग 50X पर लगे हुए। साफ कपड़ा भरी हुई तेल की बोतल, स्क्वाड को आधे दायरे में बैठाओ। प्रशिक्षक मध्य में खड़ा हो।

**3. उद्देश्य—** बोल्ट पर मुनासिब तेल लगाना और उसे चलाने का सही नियम सिखाना है।

**4. सामान—** राइफल, भरी हुई तेल की बोतल, कपड़ा, ड्रिल कार्टरिज, फीगर नं० 12 तारगेट 75 गज पर लगा हुआ तथा दरियाँ।

**5. बयान—** जल्दी और सही प्रकार से फायर करने के लिये यह आवश्यक है कि फायर करने वाला बोल्ट से काम लेने की ऊँचे दर्जे की योग्यता रखता हो। यदि जवान बोल्ट से अच्छी तरह काम ले सकता है तो उसे अपने आप पर विश्वास हो जाता है कि वह राइफल के इस्तेमाल में पूर्ण दक्षता प्राप्त कर चुका है। अच्छा बोल्ट चलाने के लिये तीन चीजें आवश्यक हैं—

1. राइफल की दुरुस्त सफाई और बोल्ट में सही तेल का प्रयोग।
2. दाहिनी कलाई का झटका।
3. फायर करने वाले की हरकतों में पूरा ताल मेल।

यह तीनों बातें सही सिखलाई से हासिल की जा सकती हैं।

**6. सिखलाई का क्रम—** पाठ तीन भागों में सिखाया जायेगा।

**7. भाग एक—बोल्ट पर तेल लगाना—** (बयान से नमूना और नकल)

**(अ) राइफल को तैयार करना—** आदेश दो कि “राइफल को तैयार करो और साफ करो।” बोल्ट और मैगजीन खोलो (प्रशिक्षक भी खोले) राइफल को अच्छी तरह साफ करो विशेषकर बोल्ट को उसके बाद बोल्ट को साफ करो। बोल्ट को लगा दो लेकिन बन्द न करो।

**(ब) बोल्ट पर तेल लगाना—** बताओ कि बोल्ट पर तेल लगाने की भी एक ड्रिल नियुक्त की गई है। नमूना दो जवान नकल करें।

**तरीका—**आरामदायक पोजीशन में बैठ जाओ। राइफल को पैर में इस प्रकार रखो कि कोई भाग जमीन पर न हो, बोल्ट नाब लीवर पैरों के बीच में हो।

अब ऑयल बोतल से बोल्ट पर केवल एक-एक बूँद तेल रेजिस्टिंग शोल्डर के खिलाफ स्टील लग के पास और काकिंग पीस के अगले किनारे के सामने लगाओ राइफल को मामूली खड़ा करो। बोल्ट को आहिस्ता से तीन बार आगे पीछे हरकत दो। अब राइफल को पैर पर इस प्रकार बाईं तरफ घुमाओ कि बोल्ट नाब लीवर ऊपर आ जाय।

पहले की तरह तीनों स्थानों पर तीन बूँद तेल लगाओ और राइफल को मामूली खड़ा करो और पहले की तरह बोल्ट को तीन बार बन्द करो और खोलो अन्त में छः बार तेजी से आगे पीछे चलाओ।

अब बोल्ट को खुला छोड़ो और इन स्थानों को साफ करो (प्रशिक्षक खड़ा होकर बयान करो) रेजिस्टिंग शोल्डर में तेल लगा हो तो साफ करो। रिब और स्टील लग देखो यदि आवश्यकता से अधिक तेल लगा होगा तो उसमें एक नीले रंग का मैल (हरी झिल्ली) सा प्रतीत होगा। उसको साफ करने के लिए फलालैन की चिन्दी को केवल एक दफा हल्के से गुजारो। अब सेपटीकैच के पीछे से तेल साफ करो। सबसे अन्त में बोल्ट बन्द करके मैगजीन लगाओ और सेपटी कैच लगा दो। अब राइफल तैयार हो गई है। (स्क्वाड आराम से बठ जाय)

(स) बयान करो कि साधारणतया जवान के अन्दर यह आदत होती है कि वह बोल्ट पर आवश्यकता से अधिक तेल लगा देता है जिससे निम्नलिखित खराबियाँ पैदा हो सकती हैं—

(1) फायर के शोले से तेल जलकर धुँआ देने लगता है जिससे दुश्मन को फायर की पोजीशन का पता लगा सकता है।

(2) ट्रिगर दबाने पर काकिंग पीस में से फालतू तेल के गरम छीटें फायरर की आँख में पड़ सकते हैं।

(3) फालतू तेल किसी-किसी कार्ट्रिज के केस के साथ चैम्बर तक पहुँच सकता है इससे चैम्बर में दबाव भी ऐसे राउन्डों से ज्यादा हो सकता है। इससे एलीवेशन में भी फर्क आ जायेगा। उदाहरण के लिए 500 गज की दूरी से काफी तेल लगे राउन्ड की गोली “मेगा पाई” तक ऊँची लग सकती है।

## 8. बोल्ट चलाना दर्जा 1—

(लेटने के मोर्चे से फिर भर का नमूना )

स्क्वाड दो भागों में प्रशिक्षक के दाहिने और बाये बैठा हो और स्क्वाड की दरियाँ एक लाइन में हों।

**बयान**—बताओ कि तेजी से “फिर से भरना” बहुत ही आवश्यक है। अपने हाथों, कलाईयों एवं रंग पुट्टों को इतना काबू में रखें कि अपनी राइफल को बार-बार फुर्ती व सफाई से फिर भर सकें। इसके लिये उस समय तक अभ्यास करना चाहिये जब तक कि बदन के रंग पुट्टे एक साथ हरकत न करने लगें।

**नमूना**— प्रशिक्षक लेटने का मोर्चा बना कर ड्रिल कार्ट्रिज राइफल में भरे और बयान करे कि किसी वस्तु पर टिकी हुई राइफल को फिर से भर कैसे किया जाता है (इस काम को दिखाओ)। राइफल को फिर से भरने के लिये दाहिने हाथ के अँगूठे और तर्जनी अँगुली से बोल्ट नाब को मजबूती से पकड़ो (खुद पकड़ो) फिर दाहिनी कलाई के तेज झटके से एक ही हरकत में बोल्ट को खोलो और बन्द करो। ऐसा करते समय इस बात का ध्यान रखो कि बोल्ट हेड इतना पीछे को किया जाय कि रेजिस्टिंग शोल्डर से जा लगे। ऐसा करने से ही राइफल में से राउन्ड पूरी तरह बाहर निकाला जा सकेगा और बोल्ट को पुनः आगे चलाने से मैगजीन का अगला राउन्ड चैम्बर में दाखिल हो सकेगा। अगर कलाई को झटका न दिया जाय तो बोल्ट की हरकत तेज और साफ नहीं होगी। ध्यान रहे कि बोल्ट की पीछे और आगे की हरकत में कोई ठहराव न हो। फिर से भर की कार्यवाही में तेजी लाने के लिये राइफल को दाहिनी तरफ झुकाने या दाहिनी कोहनी को जमीन से उठाने में मदद मिलती है। मगर कोई अनावश्यक हरकत नहीं होने देनी चाहिए। ज्योंही ब्रीच बन्द हो जाय दाहिना हाथ फौरन स्मॉल ऑफ दी बट पर वापस लाओ।

(अब फिर से भर कर नमूना दो) कलमें वाली अँगुली को ट्रिगर गार्ड पर रखो। (इसी का फिर से नमूना दो। उसके बाद सेपटी कैच लगाओ और खड़े हो जाओ। स्क्वाड को अपनी-अपनी दरियों पर भेजो)।

**9. अभ्यास—** (अ) खुशी से और बगैर ड्रिल कार्ट्रिज पहले आराम की पोजीशन में राइफल का बट जमीन पर टिकाकर उसके बाद शिस्त लेने की पोजीशन में। ध्यान रहे अभ्यास में तेजी के लिए दुरुस्तगी को कूर्बान न किया जाय (प्रशिक्षक चेक करें)।

(ब) आदेश के बगैर ड्रिल कार्ट्रिज के। अब प्रशिक्षक आदेश दे जवान काम करें। आदेश दो “फिर से भर” और चेक करो। शुरू में करीब 5 सेकेंड के अन्तर से यह काम कराया जाय। बाद में यह अन्तर घटा कर 2 सेकेंड कर दिया जाय।

(स) आदेश से ड्रिल कार्ट्रिज इस्तेमाल करते हुए आदेश “भर” पर ड्रिल कार्ट्रिज भरे। “सामने देख” इस पर सेपटी कैच को आगे करो” और फिर से भर” का आदेश दो। आदेश कभी कभी शब्द से कभी कभी सीटी के इशारे से (स्क्वाड खाली करे। फिर दरी पर दो भागों में बिठा दो)।

**10. भाग—3 बोल्ट चलाना दर्जा 2—**(शिस्त लेने की पोजीशन से फिर से भरने का नमूना)

ड्रिल कार्ट्रिज इस्तेमाल करते हुए बयान से नमूना।

भर पोजीशन बनाकर सेपटी कैच आगे करो और बताओ कि राइफल कन्धे में जमाये, फिर भर के लिये दाहिने हाथ की पकड़ पर पूरा काबू रखना होता है। राइफल को बताए गए तरीके के अनुसार फिर से भरो। सिर हिलने से रोको तथा दाहिनी कोहनी को कम से कम हरकत दो (साथ साथ कार्यवाही करो) अब दाहिने हाथ को फिर स्माल ऑफ दी बट पर लाओ और राइफल की दुरुस्त पकड़ बनाओ और कलमें वाली अँगुली से राइफल पर पहला दबाव लो। बताओ कि जैसे ही एक राउन्ड फायर हो जाय “फिर भर” की कार्यवाही शुरू हो जानी चाहिए। “फालो थू” की कार्यवाही के बाद से ही बांये हाथ की पकड़ मजबूत बनाओ। कन्धे को बट पर पहले की तरह जमाये रखो जिससे फिर से भरने के दौरान बट कन्धे से अलग न हो जाय और इस हरकत में कोई रूकावट न पड़े। अगर बांये हाथ की पकड़ मजबूत नहीं होगी तो आड़ी तिरछी राइफल का सीधा बोल्ट चलाना नामुमकिन होगा। तेज फायर करने के लिये तालमेल पैदा करने और लय बनाने की तरतीब निम्नलिखित होनी चाहिए—

1. एक राउन्ड फायर करो।
2. बांये हाथ की पकड़ मजबूत करो।
3. फिर से भरो।
4. पकड़ दुबारा दुरुस्त करो।
5. शिस्त दुरुस्त करो।
6. जरूरत के मुताबिक फायर करो।

इस लक्ष्य में तेजी पैदा करने के लिए फिर भर का अंतिम अभ्यास रेन्ज पर जिन्दा राउन्ड के प्रयोग से कराया जाय। इससे एक तो जवान को जिन्दा एम्पूनेशन इस्तेमाल करने से भरोसा पैदा हो जायेगा और उसे राइफल में जिन्दा एम्पूनेशन के वजन का भी पता लग जायेगा। इस अभ्यास में यह भी बता दिया जाय कि फायर किये हुए केस को बाहर निकालने में मामूली राउन्ड की बनिस्पत ज्यादा ताकत



लगती है। क्योंकि केस फ़ैलकर चैम्बर में टाईट बैठा होता है। जान सलामती और अकस्मात फायर से बचने के लिये कारकिंग पीस पर बूट के तस्मे का एक टुकड़ा लपेट देना आवश्यक है। बयान करो कि हर फायरर को चाहिए कि फायर किये हुए राउन्डों को गिने और उचित समय मिलने पर राइफल में और राउन्ड भरें। जब भी मैगजीन में 6 से कम राउन्ड रहें और समय हो तो वह 5 राउन्ड और भरें।

**11. अभ्यास** —इसी काम का जवानों से अभ्यास लो।

**तरीका—**

लेटने का मोर्चा “भर” “शिस्त लो” पहले आदेश और फिर इशारा देकर और बाद में “खाली कर” का आदेश दो।

पूरे काम का गुपों में अभ्यास कराओ। पहला गुप भाग1 का अभ्यास करे और दूसरा भाग 2 का और तीसरा भाग 3 का अभ्यास करे (बाद में इकट्ठा करो और आधे दायरे में बिठा दो)

**12. संक्षेप—(अ)** प्रश्नोत्तर से।

(ब) अभ्यास शनैः शनैः बढ़ाया जाय।

(स) बांये कन्धे में राइफल जमाकर फायर करना—

अगर कोई जवान राइफल को बांये कन्धे में जमाकर फायर करता है तो उसे हमेशा बांये हाथ से ही काम करना चाहिए। इसका तरीका यह है—

राइफल के बट को कन्धे से नीचे लाओ और दाहिने हाथ से राइफल को बाँई तरफ फेर दो। अब बांये हाथ की आखिरी दो अँगुलियों से बोल्ट नाब को पकड़ो व उसे बाँई तरफ को ऊपर उठाते हुये चटकी से पीछे को लाओ। इस हरकत को जारी रखते हुये बोल्ट नाब को बांये हाथ की हथेली से आगे और दाहिनी तरफ नीचे ढकेलो। अब बट फिर कन्धे में जमाओ।

**13. अन्तिम कार्य—** स्क्वाड का निरीक्षण और स्वस्थान ।

व व व

## राइफल की और अधिक सफाई ;ऊँचे दर्जे की सफाईबद्ध (FURTHER CLEANING)

**1. प्रारम्भिक कार्य—** स्क्वाड, राइफल व ड्रिल कार्ट्रिज का निरीक्षण करो।

**2. दोहराई—** राइफल की प्रतिदिन की सफाई के अन्त में राइफल खुली छोड़ो। (स्कवाड आधे दायर में)

**3. उद्देश्य—** राइफल की और अधिक सफाई सिखाना।

**4. सामान—** राइफल, पुलथू चिन्दी, साफ कपड़ा, चैम्बर स्टिक, तेल की बोतल, वायर गेज, अलसी का तेल, गरम पानी, कीप और मग।

**5. बयान—** यदि राइफल को फायर करने के बाद तुरन्त ही साफ कर लिया जाय तो उसकी सफाई करने में आसानी होगी। परन्तु यदि ऐसा न किया गया तो राइफल में नुक्स पैदा हो जायेंगे। और जैसे-जैसे समय गुजरता जायेगा उसे दुरुस्त करना कठिन हो जायेगा।

**6. सिखलाई का क्रम—** पाठ दो भागों में सिखाया जायेगा।

**7. भाग 1— फायर करने से पहले और बाद की सफाई—** (बयान और नमूना)

(अ) फायर से पहले राइफल की बैरल, मैगजीन और बोल्ट को अच्छी तरह से साफ करके खुश्क कर लो। जैसा कि प्रतिदिन की सफाई में बतलाया गया है। इसके अतिरिक्त चैम्बर और गैस निकलने वाले सुराखों और काकिंग पीस को भी साफ करो।

(ब) फायर के बाद की सफाई— राइफल को साफ करने से पहले उसको खोलना पड़ता है इसके बाद बैरल में खौलते हुए पानी का प्रयोग किया जाता है। यदि खौलता हुआ पानी न मिले तो गरम पानी का प्रयोग करो। यदि गरम पानी नहीं मिले तो ठन्डा पानी ही डाल दिया जाय। कीप को राइफल पर लगाओ और 5 से 6 मग तक पानी बैरल में डालो। इस बात का ध्यान रखो कि पानी लोहे और लकड़ी के बीच में से न जाने पाये। इसके बाद राइफल को प्रतिदिन की भाँति साफ करो और ठन्डा हो जाने पर तेल लगाओ। यदि फायर के बाद तुरन्त राइफल की सफाई का समय न मिले तो अच्छी तरह तेल लगा दो और जब समय मिलता है तो साफ करो।

**8. अभ्यास—** इसी काम का अभ्यास लो।

**9. बैरल का पसीजना— (Sweating)—** बताओ कि फायर करने के बाद राइफलों की बैरल में छोटे-छोटे बिन्द-कण पसीने की तरह निकलते रहते हैं। यह पसीना लगातार कई दिन तक निकलता रहता है इसे साफ न किया गया तो यही जंग बनकर राइफल की बैरल को खा जाती है इसलिए यह आवश्यक है कि राइफल को एक ही दिन नहीं बल्कि कई दिन तक लगातार साफ किया जाय।

**10. भाग 2—** वायर गेज का प्रयोग और लकड़ी की सुरक्षा (नमूना और नकल)

(अ) बताओ कि बैरल में यदि अधिक गैल हो तो उसे साफ करने के लिये वायर गेज का इस्तेमाल किया जाता है। परन्तु इसके लिए किसी राजपत्रित अधिकारी की आज्ञा लेना आवश्यक है। लड़ाई के मैदान में यह जाली हर पुलथू पर लगी रहनी चाहिए। और यदि फायर के बाद पानी डालने का

प्रबन्ध हो सके तो सफाई के लिए आज्ञानुसार वायर गेज का प्रयोग किया जा सकता है। इसकी नाप 2. 5"x1.5" होती है। इसको पुलथू पर लगाने के लिए वजन की तरफ से पहले फन्दे में अंग्रेजी के अक्षर S जैसी शकल बनाकर लगा दो। S की शकल में किये हुए गाज के हर आधे हिस्से को फन्दे की लरियों के साथ कस कर लपेट दो। फिर हाथ से मसल कर मिला दो। जो तार निकले हुए हों उन्हें अलग कर दो या अच्छी तरह मसल दो और राइफल में इस्तेमाल करो। प्रयोग से पहले गाज में तेल लगाना आवश्यक है। (प्रशिक्षक न खींचे)।

अभी इसको राइफल में खींच कर मत दिखाओ। बताओ कि यदि यह खींचते समय ढीला हो जाय तो इसमें आवश्यकतानुसार कच्चा सूत या चिन्दी डाल कर मोटा कर सकते हैं।

**(ब) लकड़ी की सुरक्षा—** बताओ कि राइफल में लकड़ी के हिस्से काश्मीरी अखरोट की लकड़ी के बने होते हैं। इसलिए इनकी देखभाल की अधिक आवश्यकता है। इन हिस्सों को ठीक दशा में रखने के लिए हर माह में एक बार अलसी का तेल लगाना चाहिए। सबसे पहले लकड़ी को अच्छी तरह साफ करो फिर सावधानी से साफ कपड़ा लेकर लोहे के हिस्सों को बचाकर केवल लकड़ी पर लगा दो। यदि अलसी का तेल गलती से लोहे पर लग जाय तो उसे साफ करो फिर उस पर ऑयल ए. (Oil'A) लगा दो। अलसी का तेल लोहे पर लग जाने से जंग लग जाता है। पूरी लकड़ी पर तेल लग जाने के बाद राइफल को तीन घण्टे तक छाया में रखो फिर फालतू तेल कपड़े से पोंछ दो और लकड़ी की अच्छी तरह मालिश करो।

**11. अभ्यास—** गुप्तों में एक गुप्त अलसी का तेल लगाये दूसरा पानी डालो। फिर दोनों की बदली करो।

**12. संक्षेप—** पाठ की मोटी बातें दोहराओ।

**13. अन्तिम कार्य—** स्कवाड का निरीक्षण और स्वस्थान।

१ १ १

पाठ 14  
**स्नैप शूटिंग**  
SNAP SHOOTING

- 1. प्रारम्भिक कार्य—** स्क्वाड, राइफल और ड्रिल कार्ट्रिज का निरीक्षण करो।
- 2. दोहराई—** बोल्ट पर तेल लगाना और कन्धे से फिर भर की कार्यवाही करो।
- 3. उद्देश्य—** राइफल को तारगेट की सीध में उठाना और अचानक दिखाई देने वाले और जल्द छुप जाने वाले तारगेट पर तेजी से फायर करना सिखाना है।

**4. सामान—** राइफल, ड्रिल कार्ट्रिज, फिगर नं0 11 व 12 और बड़ा तारगेट स्नैप शूटिंग, पूर्व अभ्यास किये हुए जवान, छोटा पेरिस्कोप, एमिंग डिस्क, स्टाप वाच, सैन्ड बैग और संकेत हेतु झंडी। फिगर नं0 12 तारगेट 100 गज पर, बड़ा स्नैप शूटिंग तारगेट 200 गज पर और फीगर नं0 11 तारगेट 300 गज पर दिखाने वाले जवान आड़ में।

**5. बयान—**गोली फायर करने के पाठ में पहले सिखाया जा चुका है कि पाँच सेकेन्ड के अन्दर ही गोली फायर हो जानी चाहिये और यदि 5 सेकेन्ड में फायर न कर सके तो नीचे लाकर पुनः पक्का इरादा करके फायर करें। परन्तु रणक्षेत्र में ऐसे अवसर भी आ सकते हैं जब दुश्मन थोड़े समय के लिए ही दिखाई दे अतः जवान को इस योग्य होना चाहिये कि दुश्मन को इतने समय में ही फायर करके बर्बाद कर दे। इस प्रकार निकलने वाले शत्रु पर जो फायर किया जाता है उसे स्नैप शूटिंग फायर कहते हैं। इस प्रकार के फायर में कामयाबी हासिल करने के लिये दो अहम बातें हैं—

(1) राइफल की अच्छी हालत और (2) बोल्ट की तेज हरकत। राइफल की देखभाल, रखरखाव, सफाई और तेल का प्रयोग तथा बोल्ट की तेज हरकत करना पहले पाठों में सिखाया जा चुका है। अब इसमें विशेष दक्षता प्राप्त करने के लिए आगे सिखलाई दी जायेगी।

**6. सिखलाई का क्रम—** यह पाठ 5 भागों में सिखाया जायेगा।

**7. भाग एक—** स्नैप शूटिंग दर्जा एक—

राइफल को तारगेट की सीध में उठाना (नमूना बयान से)

(स्क्वाड आधे दायरे में) जवानों में तेजी पैदा करने के लिये उनको उठाओ, बैठाओ, तथा दौड़ने का आदेश दो। फुर्तीले हो जाने के बाद भर पोजीशन कराओ और बीच वाले जवान को एमिंग डिस्क दिखाना बताकर उसको एमिंग डिस्क दे दो। प्रशिक्षक खुद जवानों के बीच में भरने का मोर्चा ले। राइफल काक करे। प्रशिक्षक की पोजीशन जवानों की राइफल की मजल के जितना नजदीक हो सके, हो। अब प्रशिक्षक चटकी से राइफल को कन्धे में ले जाकर सामने वाले जवान की आंख की पुतली को निशाना बनाकर सिध्दाई कायम करें। अब पहला दबाव ले और कन्धे पर जमाकर ठीक पकड़ने की कार्यवाही करे और फिर राइफल को नीचे लाये। अब जवान इसी का अभ्यास करें। प्रशिक्षक की आंख को निशान मान कर काम करें। इस हालत में ट्रिगर किसी हालत में दबाने न दिया जाय। प्रशिक्षक हर जवान के सामने जाकर हर जवान की सिध्दाई चेक करे। अब इसी प्रकार एमिंग डिस्क से अभ्यास कराओ।



बताओ कि जब एमिंग डिस्क दिखाया जाय तो राइफल को सीधा पास के रास्ते से कन्धे में ले जाया जाय। राइफल को उठाते समय पहले मजल और बाद में बट न उठाओ। इस प्रकार देरी होती है।

**8. अभ्यास—** अभ्यास के दौरान जवान प्रशिक्षक की आँख पर सिध्दाई कायम करें। कभी कभी एमिंग डिस्क का प्रयोग किया जाय। बैनट के दस्ते में बने सूराख को कभी इस्तेमाल न करो। यह छेद बड़ा होता है और चेक करने वालों को इसके बीचो बीच आँख लगाना कठिन होता है।

**9. भाग दो—** स्नैप शूटिंग दर्जा दो— ठीक पकड़ रखते हुये राइफल को तारगेट की सीध में उठाना और ट्रिगर दबाना। (नमूना बयान से) स्क्वाड पहले की तरह। प्रशिक्षक के पास राइफल। प्रशिक्षक राइफल को एमिंग डिस्क या जवान की आँख की सीध में शिस्त लेकर ट्रिगर दबाये और मार पुकारे प्रशिक्षक तेजी की बजाय दुरुस्ती का अधिक ध्यान रखे। हिट या मिस। अब जवानों से यही कार्यवाही कराओ।

**10. अभ्यास—**प्रशिक्षक एमिंग डिस्क का प्रयोग करते हुए आरम्भ में इसकी परवाह न करे कि समय कितना लगता है क्योंकि तेजी की अपेक्षा सही कार्य पर अधिक बल देना चाहिये।

अभ्यास के दौरान—

(i) प्रशिक्षक एमिंग डिस्क को अपनी आँख से दूर रखे और शिस्त चेक न करके राइफल की सिध्दाई में उठाये जाने को चेक करे जैसा भाग एक में सिखाया गया है।

(ii) किसी भी जवान को भाग दो का अपने आप अभ्यास न करने दें जब तक उसे सन्तोष न हो जाय कि जवान भाग एक की कार्यवाही में माहिर हो गया है।

(iii) आरम्भ का अभ्यास, “अप” और “डाउन” के आदेश से कराया जाय। बाद में डिस्क का उठाना ही संकेत समझा जाय।

(iv) अभ्यास के दौरान शुरू में जवान को एक राउन्ड के लिये 7 सेकेन्ड का समय दिया जाय, बाद में यह समय धीरे-धीरे घटा कर 4 सेकेन्ड कर दिया जाय।

(v) अभ्यास के दौरान प्रशिक्षक ट्रिगर दबाने के बाद मार पुकारने और फिर से भर की कार्यवाही से पहले कुछ देर तक पकड़ और शिस्त कायम रखने की आवश्यकता पर जोर दे।

**11. भाग-3 स्नैप शूटिंग दर्जा तीन—**100 गज पर फिगर तारगेटों पर अभ्यास। स्क्वाड को सैन्ड बैग की आड़ के पास ले जाओ और आड़ फिट करना बताओ। एक जवान “भर” पोजीशन बनाये प्रशिक्षक बोले 200 आड़ फिट है। प्रशिक्षक बताये कि यदि आड़ आवश्यकता से अधिक ऊँची हो तो कार्यवाही इस प्रकार करो। सेपटी कैच लगाओ, राइफल खड़ी, आँख बन्द करो और मुँह उस तरफ करो जिधर से हवा चल रही हो। यदि हवा सामने से आ रही हो तो मुँह नीचे करो। अब प्रशिक्षक आड़ चेक करने को कहे। जवान को आड़ के पीछे खड़ा करो और एक दो में गिनती करा लो। नं0 1 प्रशिक्षक का काम और नं0 2 जवान आड़ फिट करे। फिर बदली करो। सैन्ड बैग की आड़ प्रयोग करते समय निम्नलिखित बातें ध्यान में रखी जायें—

- (1) आड़ के पीछे भी पोजीशन करीब-करीब वैसी ही हो जैसी बिना आड़ के थी।
- (2) बायें हाथ की कलाई व हाथ बोरी के ऊपर हो और आड़ से सहारा लिए हुए हों।
- (3) राइफल का कोई भाग बोरी को न छुए।

(4) फायर करने वाले की पोजीशन यथा सम्भव आगे हो जिससे दाहिने हाथ व दाहिने कन्धे की कार्यवाही में रुकावट न पड़े। अब 100X पर फिगर 11, 12 और 13 तारगेटों पर अभ्यास कराओ। समय पहले 7 सेकेंड बाद 4 सेकेंड (प्रशिक्षक नमूना दे)

**12. भाग 4—** स्नैप शूटिंग दर्जा 4–200 गज पर फिगर 11 स्नैप शूटिंग तारगेट (22") पर अभ्यास। प्रबन्ध दर्जा 3 की तरह। मददगार 200 गज पर फिगर 11 तारगेट निकालेगा जवान उस पर फायर करेंगे।

**तरीका—** भाग 3 की तरह

बयान करो कि 22" के तारगेट पर गोली मारना 4'X4' तारगेट पर बुल या इनर में गोली पहुँचाने के बराबर है। अतः यह कोई कठिन काम नहीं है।

**13. भाग 5—** 300 गज पर फीगर तारगेटों पर अभ्यास— (अ) प्रबन्ध और अभ्यास भाग 3 की तरह।

(ब) मिला-जुला अभ्यास

कभी 100X पर कभी 200X पर और कभी 300X पर तारगेट निकाल कर अभ्यास लो। यदि मददगार मोर्चे में हो तो ड्रिल कार्ट्रिज का भी इस्तेमाल करो।

**14. संक्षेप—** (अ) पाठ की मोटी-मोटी बातें दोहराओ।

**(ब) प्रारम्भिक शिक्षा की परीक्षा (T.O.E.T.)—** जवान भर पोजीशन में राइफल काक। प्रशिक्षक एमिंग डिस्क लेकर जवान के सामने एक गज पर लेटा हुआ। चार सेकेंड के लिये एमिंग डिस्क उठाये। जवान उस पर शिस्त लेकर ट्रिगर दबाये और कन्धे में फिर भर करके दोबारा प्राकृतिक सिध्दाई कायम करे प्रशिक्षक चेक करे कि जवान ने कार्यवाही ठीक की है। टेस्ट शुरू होने से पहले जवान कुदरती सिध्दाई कायम कर सकता है।

पास होने के लिये 5 में से 4 बार कार्यवाही ठीक होनी चाहिये।

**नोट—**(i) जब कभी किसी जवान पर निशाना बाँधा जा रहा हो तो ड्रिल कार्ट्रिज कदापि प्रयोग न किया जाय।

(ii) स्नैप शूटिंग में सफलता प्राप्त करने के लिये जवान को सदैव चौकन्ना रहना चाहिए और इन बातों पर ध्यान देना चाहिये।

कार्य समय के अन्दर किया जाय। (ii) आँख और हाथ के काम में पूरा तालमेल हो।

**15. अन्तिम कार्य—** क्लास का निरीक्षण और स्वस्थान।

व व व

## लगातार स्नैप शूटिंग CONTINUOUS SNAP SHOOTING

**1. प्रारम्भिक कार्य—** स्क्वाड, राइफल और ड्रिल कार्टरिज का निरीक्षण करो। प्रबन्ध पाठ 14 की तरह।

**2. दोहराई—**बोल्ट पर तेल लगाना और स्नैप शूटिंग दर्जा 2 की।

**3. उद्देश्य—**दुरुस्तगी कायम रखते हुए तेज रफतार से लगातार फायर करना सिखाना है।

**4. सामान—** पाठ 14 की तरह। परन्तु फिगर तारगेट एक के स्थान पर दो और एमिंग डिस्क जोड़ियों में एक।

**5. बयान—**लड़ाई में अक्सर ऐसे अवसर आते हैं जबकि राइफल मैन को ज्यादा तादाद में दुश्मनों का सामना करना पड़ता है। इससे पहले कि दुश्मन किसी आड़ में छुप जाय या बहुत निकट आ जाय, यह जरूरी होता है कि अधिक से अधिक दुश्मन को मार गिराया जाय। जब तक दुश्मन सामने रहे, तब तक फायर जारी रहे। इस प्रकार के फायर को लगातार स्नैप शूटिंग कहते हैं जो नियम और सिद्धान्त सिखाये जा चुके हैं उन सबका प्रयोग करना चाहिये। परन्तु तेजी में दुरुस्ती को कभी नहीं भूलना चाहिए। इस प्रकार के फायर में विशेषतः बोल्ट की तेज हरकत का बड़ा महत्व होता है।

हर जवान अच्छा निशाने बाज नहीं होता और कभी कभी अच्छे निशाने बाज की गोली भी मिस हो जाती है। इसलिये नियम यह है कि दुरुस्तगी को कायम रखते हुये अपने समय में तेजी से लगातार फायर किया जाय। इस प्रकार के फायर करने में सफलता प्राप्त करने के लिए फायर करने वाले को ठंडे दिल, दृढ़ता, अच्छे अनुशासन, स्वास्थ्य तथा लगातार अभ्यास की आवश्यकता है।

**6. नमूना—** (स्क्वाड प्रशिक्षक के दाहिने और बायें) एक जवान को सामने लिटाकर उसको एमिंग डिस्क दिखाने का नियम बताओ और फिर एमिंग डिस्क उसी जवान को दे दो और बताओ “अप” के संकेत पर एमिंग डिस्क उठाकर 3” के घेरे में दाहिने बाये ऊपर और नीचे दिखाओ और डाउन पर नीचे लाओ।

जवान ज्यों ही एमिंग डिस्क उठाये, राइफल काक करो लगभग तीन या चार राउन्ड (Round) फायर करके खड़े हो जाओ। और बताओ कि—

(अ) तेजी के लिये दुरुस्तगी को कभी नहीं भूलना चाहिए।

(ब) मार न पुकारी जाय इससे जवान का ध्यान फायर से हट जाता है।

(स) बट कन्धे में ही रखा जाय ताकि दुबारा शिस्त लेने में समय कम लगे।

(द) बोल्ट को तेजी और दुरुस्तगी से चलाओ ताकि फिर भरने में समय खराब न हो।

(य) फायर उस समय तक जारी रखो जब तक ‘रोक फायर’ का आदेश न मिले या दुश्मन नष्ट न हो जाय।

**7. अभ्यास—** स्क्वाड से जोड़ियों में अभ्यास लो।

**तरीका—** जवानों को आमने-सामने लिटा दो। एक के पास एमिंग डिस्क और दूसरे के पास राइफल हो। एमिंग डिस्क वाला जवान एक गोली फायर होने के बाद 3” के घेरे में ऊपर-नीचे दाहिने

और बाये एमिंग डिस्क दिखाता रहे जवान उस पर फायर करे। समय 10 सेकेन्ड से 30 सेकेन्ड तक। प्रशिक्षक देखें कि जवानों ने कितनी गोलियाँ फायर की है और कितनी सही हिट हुई है। शुरू में जवानों की सुविधा के लिये “अप” भी पुकारा जा सकता है। एक बार बदली करवा दो। अब जवानों को सैन्ड बैग की आड़ पर ले जाओ और आड़ फिट करवा लो।

100 गज से लेकर 300 गज तक फिगर तारगेटों पर अभ्यास लो। जवानों को ‘लिम्बर अप’ का अभ्यास कराओ। कभी किसी जगह तारगेट निकले और प्रशिक्षक तारगेट निकलने के समय और बीच के अन्तर को कभी कम कभी अधिक करता रहे।

प्रशिक्षक तारगेट का रेन्ज अवश्य बताये।

**8. संक्षेप—(अ) पाठ की मोटी मोटी बातें दोहराओ।**

**(ब) प्रारम्भिक शिक्षा की परीक्षा T.O.E.T—** पाठ 14 की तरह और प्रश्नोत्तर से दोहराओ।

**9. प्रशिक्षक के लिये नोट—**स्नैप शूटिंग और लगातार स्नैप शूटिंग में अधिक तेजी लाने के लिये अभ्यास के दौरान कुछ काम और मुकाबले के खेल कराने से मदद मिलती है। इसमें से चन्द एक नीचे दिये जा रहे हैं।

**(1) तेज भरना—**यह एक व्यक्तिगत अभ्यास का काम है। शुरू में मैगजीन में राउन्ड भरने का तेज अभ्यास आरामदायक पोजीशन में कराया जाय। जैसे-जैसे अभ्यास में तेजी आती जाय, सही भर पोजीशन का प्रयोग किया जाय। जवानों को कम से कम तीन भरे हुए चार्जर् दो। आदेश मिलने पर जवान एक-एक चार्जर् बारी-बारी से लोड करें और कम से कम समय में खाली करें।

**(2) तेज भरने का मुकाबला—**स्क्वाड को दो भागों में बाँट दो। एक काम करे दूसरा चेक करे। फिर बदली करो।

हर जवान के लिये भरे हुए चार्जर् टोली से 50 गज आगे जमीन पर रखो। आदेश मिलने पर काम करने वाली टोली दौड़ कर अपने-अपने चार्जर् के पास जाय। सही भर पोजीशन बनाये और सही एक चार्जर् भरे। कन्धे में सही पकड़ कायम रखते हुए तेजी से खाली करें। फिर इसी प्रकार दूसरा चार्जर् भरे और खाली करें। काम पूरा करके हर जवान खड़ा हो जाय। सबसे तेज और सबसे दुरुस्त जवान का टाइम नोट करो। अब दोनों टोलियों के सबसे तेज जवानों का मुकाबला इसी प्रकार कराओ।

**(3) तेज हरकत और फायर—**स्क्वाड को दो भागों में बाँटो। दोनों भाग आमने-सामने 6 कदम के फासले पर। एक के पास एमिंग डिस्क, दूसरे का मुँह पीछे कराओ और

- (1) सिलिंग बोल्ट और मैगजीन निकालो।
- (2) मैगजीन प्लेटफार्म सिंग निकला हुआ।
- (3) सेपटी कैच लगा हो।
- (4) साइट 600 गज पर लगी हुई।
- (5) काकिंग पीस गलत पोजीशन में।
- (6) संगीन उतरी हुई।

प्रशिक्षक रेन्ज बताकर “गो” का आदेश दें। उदाहरण के लिये “300 गो” इस आदेश पर जवान राइफल को ठीक तरह जोड़ें। बताई हुई साइट लगायें और संगीन लगाकर सामने



वाले जवान की एमिंग डिस्क पर 10 राउन्ड फायर करें। एमिंग डिस्क वाला जवान हर 3, 4 राउन्ड के बाद पोजीशन बदली करें। वही पोजीशन फायर करने वाला बनाए। अब एमिंग डिस्क वाला जवान फायर करने वाले जवान की मोटी मोटी गलतियाँ नोट करें। प्रशिक्षक अंदाज करें कि सबसे अधिक सही गोली किसकी लगी है। अब जवानों की बदली करें और यही काम कराओ।

**4. लोडर "बनाम" फिलर**—स्क्वाड को दो भागों में बाँटें। एक-एक जोड़ी के पास 5-5 चार्ज्ड ड्रिल कार्ट्रिज के साथ। एक जवान (लोडर) भर पोजीशन से एक चार्ज्ड लोड करें। कंधे में राइफल ले जाकर तेजी से खाली करें। दूसरा जवान (फिलर) बाहर निकाले हुए राउन्डों को फिर चार्ज्ड में भरकर लोडर को वापस करें। अगर एक चार्ज्ड लोड और खाली करने से पहले लोडर को चार्ज्ड की कमी पड़ जाय तो वह जीता हुआ माना जाय और अगर फिलर लोडर को बिना इन्तजार कराये चार्ज्ड भर कर दे तो वह जीता हुआ माना जाय। इसी प्रकार जवानों की बदली कराओ।

प प प

## ट्रेनिंग स्टिक (TRAINING STICK)

**1. प्रारम्भिक कार्य**— निरीक्षण, राइफल काक, संगीन और म्यान रस्सी में बंधी हुई स्क्वाड एक लाइन में। एक प्रशिक्षक के लिए और हर जवानों के लिये ट्रेनिंग स्टिक। टोपी उतरवाओ।

**2. दोहराई**—तान शस्त्र और हवा में एक और दो अनी घोंपने की। अन्त में राइफल एक जगह रखवा दो। प्रशिक्षक और स्क्वाड के पास ट्रेनिंग स्टिक हो और स्क्वाड आधे दायरे में।

**3. उद्देश्य**—ट्रेनिंग स्टिक का प्रयोग सिखाना है।

**4. सामान**—राइफल, संगीन, ट्रेनिंग स्टिक और डोरी।

**5. बयान**— ट्रेनिंग स्टिक, प्रशिक्षण में जवानों की हरकतों में तेजी लाने के लिये इस्तेमाल की जाती है।

**6. सिखलाई का क्रम**—पाठ तीन भागों में सिखाया जायेगा।

**7. भाग एक**— ट्रेनिंग स्टिक का बयान और पकड़ना—

**10. अन्तिम कार्य**—स्क्वाड का निरीक्षण और स्वस्थान।

(नमूना बयान के साथ और नकल )

**(अ) बयान**— इसके एक सिरे पर गद्दी लगी होती है जिसका व्यास 2" है जो दुश्मन की संगीन की नोक को प्रकट करता है। जिस जवान को यह गद्दी दिखायी जाय उसका काम है कि तान शस्त्र करके इसके पास आ जाये। दूसरे सिरे पर छल्ला है जिसका व्यास 3" है। यह दुश्मन के बदन के नाजुक भाग (पेट) को प्रकट करता है। इसकी कुल लम्बाई 5'-9" होनी चाहिये और हल्की लकड़ी या बाँस की बनी होती है। (स्क्वाड को 5-5 गज एक दूसरे से खोल दो, प्रशिक्षक बीच में और थोड़ा आगे हो)

**(ब) ट्रेनिंग स्टिक पकड़ने का नियम**—(नमूना बयान के साथ और नकल) ट्रेनिंग स्टिक बाँये हाथ से लगभग बीच में पकड़ी जाय। दाहिनी कोहनी छल्ले के साथ मिलाते हुये इस प्रकार पकड़ा जाय कि छल्ला खड़े रूख रहे। बाँये पैर को कद के अनुसार आगे लो और तान शस्त्र जैसी पोजीशन बनाओ।

**(स) आराम कर**— आदेश " आराम कर" पर आगे वाले पैर को थोड़ा पीछे हटाओ और खम निकालते हुए गद्दी को आहिस्ता से जमीन पर टिका दो। छल्ला बगल में छुपाओ और बाँये हाथ को पीछे लाओ।

**8. अभ्यास (i)**—जवानों को " तान शस्त्र" और " आराम कर" का अभ्यास कराओ। (जवानों को बीच में इकट्ठा करो, भाग एक पर प्रश्न पूछो और भाग दो बताने के बाद खोल दो) स्क्वाड के पास ट्रेनिंग स्टिक हो।

**(ii) वर्ड ऑफ कमाण्ड (W.O.C.)**— "स्टिक दिखाओ" "आराम कर"

**9. भाग दो**— दाहिनी तरफ छल्ला दिखाना और संगीन घोंपना— (नमूना बयान के साथ और नकल) (अ) दाहिनी तरफ छल्ला दिखाने के लिये पहले की तरह "तान शस्त्र" बनाओ। बाँये बाजू की कोहनी को बाँई बगल से मिलाओ और छल्ले वाला सिरा दाहिनी तरफ आगे बढ़ाओ।

दोनों कोहनियाँ बदन से मिली, ट्रेनिंग स्टिक बदन से अलग, छल्ला खड़े रूख, निगाह छल्ले

पर, आगे वाले पैर में थोड़ा खम और पीछे वाला पैर सीधा हो।

अब यदि दूसरी बार छल्ला दिखाना हो तो कार्यवाही इस प्रकार करो— जब जवान संगीन घोप कर बाहर निकाले तो आगे वाले पैर से एक कदम पीछे लो। इस प्रकार स्क्वाड से भी कराओ। सीधा गुजरने के लिये छल्ले को बगल में छुपाओ जैसा आरामदायक पोजीशन में बताया गया था।

**10. अभ्यास—** दाहिनी तरफ छल्ला दिखाने का अभ्यास लो। (गिनती के साथ)

(ब) स्क्वाड एक लाइन में इकट्ठा करो, आधे जवानों के पास राइफल और आधों के पास ट्रेनिंग स्टिक हो स्क्वाड के दाहिनी वाली लाइन में और प्रशिक्षक राइफल के साथ बांये वाली लाइन में चार या पाँच कदम आगे हो। प्रशिक्षक के आदेश पर जवान स्टिक दिखाये और प्रशिक्षक “तान शस्त्र” हमला करे। प्रशिक्षक जब 5 या 6 कदम पर हो तो जवान छल्ला दिखाये। अब प्रशिक्षक पास आकर पिछले पैर को आगे बढ़ाते हुए छल्ले में संगीन घोपे निकाले और रुक जाये। (देखो चित्र 17)



चित्र नं0 17 दाहिनी तरफ छल्ला दिखाना

बताओ कि जब तक छल्ला छुप नहीं जाता या दुबारा नहीं दिखाया जाता तब तक जवान को वहीं ठहरना चाहिये। अब प्रशिक्षक छल्ला छुपाने के लिये कहे “तानशस्त्र और “सीधा गुजर” कर स्क्वाड में मिल जाय।

**11. अभ्यास —** अभ्यास जोड़ियों में (जिन जवानों के पास राइफलें हैं उनको एक लाइन में 5-5 कदम पर खोल दो) और स्टिक वाले जवान एक-एक करके उनके सामने लगभग 10 गज की दूरी पर। जवान स्वयं अभ्यास करें। यदि कोई जवान खाली हो तो प्रशिक्षक अपने पास लें। (अभ्यास हो जाने के बाद प्रशिक्षक और स्क्वाड के पास ट्रेनिंग स्टिक और प्रशिक्षक स्क्वाड के आगे और बीच में हो।)

**12. भाग 3—** बायें तरफ छल्ला दिखाना और संगीन घोपना। (नमूना बयान के साथ और नकल)  
**(अ) बायें तरफ छल्ला दिखाना—**(स्क्वाड को एक लाइन में 5-5 कदम पर खोल दो। प्रशिक्षक बायें वाले जवान के आगे खड़ा हो) प्रशिक्षक और जवान तान शस्त्र करें। अब बयान करो कि बायें छल्ला दिखाने के लिये बायें पैर से 1 कदम पीछे लो व साथ ही बायें से पीछे मुड़ जाओ। (देखो चित्र 18)  
 (प्रशिक्षक स्क्वाड के आगे और बीच में आ जायें)  
 स्क्वाड की तरफ मुड़ करके बतायें, 'समझो मेरा फ्रन्ट पीछे है' पोजीशन का बयान पहले की तरह बताओ।



चित्र नं0 18 बाँई ओर छल्ला दिखाना

**अभ्यास—** आदेश एक, दो, तीन व चार वगैरह से।

**13. बाँई तरफ राइफल और ट्रेनिंग स्टिक का प्रयोग—** प्रशिक्षक क्लास के बाँई तरफ खड़ा हो जाय, राइफल वाले जवान को सामने खड़ा करो और बताओ कि छल्ला दिखाने पर पूरा काम करेगा। (अब बयान करने की आवश्यकता नहीं) लगातार दो अनी के लिये छल्ला दिखाओ।

**14. अभ्यास—** (अ) जोड़ियो में। स्क्वाड को दो लाइन में खड़ा करो। एक लाइन में राइफल और दूसरी में ट्रेनिंग स्टिक हो। जवानों को सामने 5-5 कदम पर खोल दो। प्रशिक्षक आदेश में बाँई तरफ छल्ला दिखाने और संगीन घोपने का अभ्यास, आपस में बदली करके कराये।

**(ब) पूरे काम का अभ्यास।** इसके लिये पूरे जवानों के पास राइफल और ट्रेनिंग स्टिक। प्रशिक्षक का आदेश, "मेरे चारों ओर एक घेरे में खुल जाओ" इस पर चारों ओर लगभग 10X की दूरी पर जवान



खड़े हो जायें, प्रशिक्षक दाहिने और बायें संगीन घोंपने का अभ्यास करायें। अन्त में एक लाइन में इकट्ठा करें।

**15. संक्षेप—** प्रश्नोत्तर से दोहराई।

**नोट—**(अ) ट्रेनिंग स्टिक हल्की और छल्ला ऐसा हो कि संगीन को नुकसान न पहुंचे।

(ब) ट्रेनिंग स्टिक दिखाने वाला जितनी फुर्ती से स्टिक दिखायेगा राइफल वाले जवान को उतनी ही तेजी करनी होगी।

(स) एक दूसरे की गलती नोट करें और ठीक करें।

(द) अन्त में विशेष अभ्यास के लिये स्क्वाड घेरे में और प्रशिक्षक बीच में होकर अभ्यास कराये।

**16. अन्तिम कार्य—** स्क्वाड का निरीक्षण और स्वस्थान।



चित्र नं0 19 ट्रेनिंग स्टिक पर संगीन घोंपना

व व व

**पाठ 17**  
**निशाना बाँधना तृतीय**  
(AIMING III)

---

---

**हवा का हक रखकर निशाना लेना –**

**1. प्रारम्भिक कार्य—** राइफल, ड्रिल कार्ट्रिज और स्क्वाड का निरीक्षण। (राइफल काक, साइटों का निरीक्षण और अगर आवश्यकता हो तो काला करो। आर0ए0टी0 और एमिंग रेस्ट एक लाइन में) 200 व 300 गज पर 4'X4' एप्लीकेशन तारगेट तथा 200 व 300 गज पर फीगर तारगेट। जवानों की राइफलें एमिंग रेस्ट पर रखवा दो। स्क्वाड को तारगेट सैट के पास आधे दायरे में बिठा दो।

**2. दोहराई—** एलीवेशन टेबुल की प्रश्नोत्तर से।

**3. उद्देश्य—** हवा का हक रखकर निशाना लेने की सिखलाई देना है।

**4. सामान—** राइफल, एमिंग रेस्ट, क्लासीफिकेशन और फीगर तारगेट, सिग्नलिंग डिस्क, नकली बुल, आर0ए0टी0, झंडी, साइट काला करने का सामान, हवा का टेबुल पतली रस्सी या 22" राइफल का राड और अभ्यास किया हुआ सहायक।

**5. बयान—** (अ) हवा गोली की उड़ान पर भी असर डालती है। परन्तु गोली पर हवा का असर बहुत कम होता है। फायर करते समय सदैव हवा का ध्यान रखना आवश्यक है। हवा के असर को दूर करने के लिये शिस्त लेते समय उसका हक रखना पड़ता है। इसका अनुमान रेन्ज या तारगेट की दूरी, हवा के रूख और रफतार पर निर्भर है यह अन्दाज अनुभव और अभ्यास से होता है। (स्क्वाड को आर0ए0टी0 के पास ले जाओ और उसकी मदद से अच्छी तरह समझाओ।

**समझाने का तरीका—**

बोल्ट को अलग करो। रस्सी या राड को बैरल में डालो। साकित में रिप्रजेन्टेटिव तारगेट लगाओ। दाहिने से बाँये या बाँये से दाहिने को चलती हवा का प्रभाव दिखाने के लिये प्रशिक्षक राड को ढकेले। ऐसा करने से राड तारगेट के बीच में लगेगा। बताओ कि हवा नहीं है इसलिये गोली बीच में लगी। यदि हवा होती तो— (अब जवान इशारे पर तारगेट को दूसरी तरफ खिसकाये) प्रशिक्षक राड ढकेले, ऐसा करने से तारगेट मिस हो जायेगा) गोली निशाने पर नहीं लगती इसलिये आवश्यक है कि जिस तरफ से हवा चल रही हो, उस तरफ को हटकर शिस्त ली जाय तो गोली ठीक निशाने पर लगेगी।

**ब. हवा के असर का अन्दाजा—**

(i) **दिशा—**गोली के रास्ते पर हवा का सबसे अधिक प्रभाव उस दशा में पड़ता है जब कि हवा तारगेट के दाहिने से बाँये या बाँये से दाहिने को चलती हो। ऐसी हवा को बगली हवा (Cross Wind) कहते हैं। यदि हवा तिरछे रूख चलती हो तो उसका प्रभाव बगली हवा का आधा पड़ेगा जो हवा सामने से पीछे या पीछे से सामने को चलती हो उसका गोली के निशाने पर कोई असर नहीं पड़ता।

(ii) **गति**— (रफ्तार) जिस प्रकार हवा की दिशा का पता लगाया जा सकता है उसी प्रकार उसकी गति का भी अनुमान लगाया जा सकता है। परन्तु गति का ठीक अनुमान कुछ कठिन होता है। (झन्डी की शक्ल दिखा कर बताओ) हवा गति के लिहाज से तीन भागों में बाँटी गई है।

हल्की (Mild) तेज (Fresh) और बहुत तेज (Strong)।

(अ) हल्की हवा— झन्डा गिरा हुआ होगा या धीरे-धीरे लहरायेगा और धुआँ ऊपर और मामूली तिरछा जायेगा। गर्दा ऊपर उठेगा, पत्ते मामूली हरकत करेंगे। इसकी गति लगभग 5 मील प्रति घन्टा होती है।

(ब) तेज हवा— झन्डा लगभग 45 से 90 अंश तक लहरायेगा। धुआँ जमीन से तिरछे रूख उड़ेगा और पत्ते तथा टहनियाँ हिलेंगी। चेहरे पर हवा मालूम होगी। इसकी गति लगभग 10 मील प्रति घन्टा होती है।

(स) बहुत तेज हवा— झन्डा 90 अंश के कोण पर या इससे भी अधिक लहरायेगा। धुआँ जमीन के साथ जायेगा। दरख्तों की टहनियाँ बहुत हिलेंगी। चेहरे पर हवा बहुत तेज लगेगी। इसकी गति लगभग 20 मील प्रति घन्टा होती है।

प्रशिक्षक हवा के रूख का बयान घड़ी की मदद से करे जिसमें तारगेट 12 बजे की लाइन में हो उसकी मदद से भिन्न-भिन्न दिशाओं से आने वाली हवा का असर निम्नलिखित होता है।

(1) 6 और 12 बजे से चलने वाली हवा का कोई प्रभाव नहीं होता।

(2) 1, 5, 7 व 11 बजे से आने वाली हवा का आधा असर होता है।

(3) 2, 4, 8 व 10 बजे से आने वाली हवा का 4/5 असर होता है।

(4) 3 और 9 बजे से आने वाली हवा का पूरा असर होता है।

(iii) दूरी—तारगेट का रेन्ज जितना अधिक होगा उतना ही हवा का प्रभाव अधिक पड़ेगा।

सिखलाई का क्रम— पाठ दो भागों में सिखाया जायेगा।

**7. भाग 1— हवा का हक क्लासीफिकेशन तारगेट पर —**

(200X से 400X तक 4'X4' तारगेट पर समझाओ)

रेन्ज तारगेट पर शिस्त लेने की तीन जगहें हैं। जिन पर हवा का हक रख कर निशाना बाँधने में आसानी होती है। 4'X4' क्लासीफिकेशन तारगेट पर बताओ। निशाने की पहली जगह बुल का किनारा दूसरी जगह बुल के बाहरी किनारे व तारगेट के मध्य व तीसरी जगह तारगेट के किनारे। देखो चित्र 20)

**हवा का हक रखना**— नीचे हवा का हक रखने की एक तालिका दी गई है यह टेबुल दाहिने से बांये या बांये से दाहिने (Cross wind) चलने वाली और तेज हवा के लिये दिया गया है। सिखलाई में इसे मशवरे के तौर पर प्रयोग करना चाहिए। जवान फायर करने में जैसे-जैसे पक्के हो जायेंगे वह स्वयं अधिक हिसाब लगा सकेंगे।

तारगेट का रेज	4'X4' क्लासीफिकेशन तारगेट पर निशाना बाँधने की जगह
200X	निशाने की पहली जगह (बुल का किनारा)
300X	निशाने की दूसरी जगह (तारगेट का सेन्टर)
400X	निशाने की तीसरी जगह (तारगेट का बाहरी किनारा)
तारगेट का रेज	6'X6 क्लासीफिकेशन तारगेट पर निशाना बाँधने की जगह।

300X	निशाने की पहली जगह का बुल का किनारा
400X	निशाने की दूसरी जगह मेगपाई का किनारा
500X	निशाने की तीसरी जगह तारगेट किनारा

जब हवा बहुत तेज हो तो निशाने के निश्चित स्थान से एक निशाने की जगह बाहर निशाना बाँधो जब हवा हल्की हो तो निश्चित निशाने के स्थान से एक निशाने की जगह अन्दर निशाना बाँधो। 200X तक तिरछी हवा के हक रखने की विशेष आवश्यकता नहीं होती।

**एलीवेशन—** बताओ कि हवा का हक रखने के लिए जब तारगेट के बीच से हट कर दाहिने या बांये निशाना लिया जाता है तो जवानों से एलीवेशन में गलती हो जाती है। इसलिए इस बात पर विशेष ध्यान दो कि जवान एलीवेशन ठीक कायम रखें। (स्क्वाड को एमिंग रेस्ट पर ले जाओ)।

**8. अभ्यास—** स्क्वाड से निशाने की इन जगहों पर निशाना बाँधने का अभ्यास कराओ। तरीका—जवानों को हवा की दिशा, गति और रेन्ज बताओ। जवान शिस्त ले चुकें तो मददगार को संकेत दो, वह नकली बुल तारगेट पर लगायें। अब स्क्वाड की शिस्त चेक करो। स्क्वाड को तारगेट के सेट के पास आधे दायरे में बिठाओ।

**9. भाग दो—** फीगर तारगेट पर हवा का हक—बताओ कि फीगर तारगेटों पर निशाने की जगह कहाँ होगी (फीगर नं0 11 तारगेट पर समझाओ)

निशाने की पहली जगह तारगेट का किनारा, निशाने की दूसरी जगह दूसरे तारगेट का मध्य और निशाने की तीसरी जगह दूसरे तारगेट का बाहरी किनारा (देखो चित्र 21)

तेज हवा के लिये इससे इस प्रकार काम लिया जाय—

200X के रेन्ज पर निशाने की दूसरी जगह

300X और 400X पर निशाने की दूसरी जगह

बहुत तेज और हल्की हवा का हक रखने का वही तरीका है जो क्लासीफिकेशन पर बताया गया है।

**10. अभ्यास—**स्क्वाड को एमिंग रेस्ट पर ले जाओ और निशाने की इन जगहों पर निशाना लेने का अभ्यास कराओ। इसके लिये जवानों को कोई समस्या देकर निशाना लेने का आदेश दो। उसके बाद मददगार को संकेत देकर आवश्यकतानुसार फीगर नं0 11 तारगेट भी लगवाओ और शिस्त चेक करो।

**11. अभ्यास—** मिलाजुला अभ्यास रेन्ज और फीगर तारगेटों पर ।

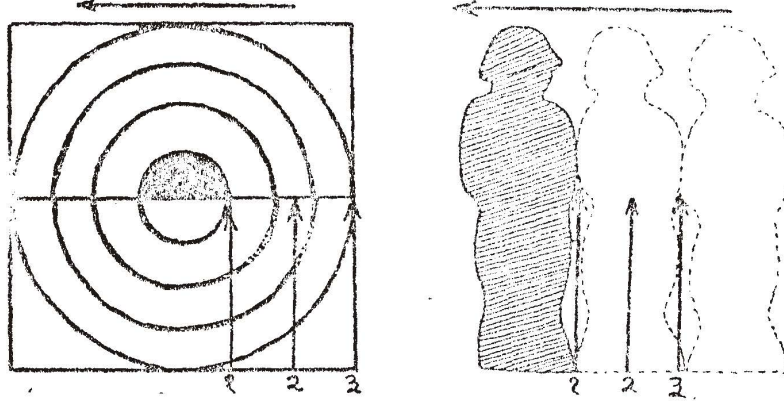
**12. संक्षेप—**(अ) प्रश्नोत्तर से अभ्यास।

**(ब) प्रारम्भिक शिक्षा की परीक्षा—T.O.E.T.**

**तरीका—** राइफल एमिंग रेस्ट पर। जवान पहली, दूसरी और तीसरी जगह बारी-बारी से निशाना बाँधें। फीगर नं0 11 तारगेट 300X गज की दूरी पर खड़े किये जायें। दूसरी और तीसरी निशाने की जगह का निशाना चेक करने के लिये 1 या 2 सहायक (Auxiliary) तारगेट खड़े किये जायें। पास होने के लिये तीन में से दो निशाने ठीक होने चाहिये।

**नोट—** (अ) हवा का एक टेबुल दिया जा रहा है जिससे जवानों को ठीक निशाने पर गोली लाने में मदद मिलेगी। इस टेबुल को हवा का एडवॉंस टेबुल (Advanced Table) कहते हैं।





चित्र नं०-20-21 रेंज तथा फीगर तारगेटों पर हवा का हक और निशाने की जगह

गोली पर हवा के असर की तालिका (Wind Table Chart)–

रेन्ज	धीमी	तेज	बहुत तेज
200X	से कम पर कोई हक नहीं		
200X	3"	6"	12"
300X	6"	12"	24"
400X	9"	18"	36"
500X	12"	24"	48"
600X	15"	30"	60"

(ब) जब 400 पर निशाना बाँधना हो तो 4'x4' तारगेट पर बहुत तेज हवा की समस्या मत दो और इसी प्रकार 6'x6' तारगेट पर अभ्यास कराया जा रहा हो तो 500 गज पर बहुत तेज हवा की समस्या मत दो अन्यथा तारगेट से बाहर निशाना चेक करने में कठिनाई होगी।

**13. अन्तिम कार्य**– निरीक्षण व स्वस्थान।

१ १ १

## निशाना बाँधना 'चतुर्थ' :Aiming IV)

### ऊपर नीचे निशाना बाँधना (OTHER POINT OF AIM)

**1. प्रारम्भिक कार्य—** स्क्वाड, राइफलों व साइटों का निरीक्षण करो, राइफल काक। आवश्यकतानुसार साइट काला कराओ और राइफल एमिंग रेस्ट पर रखवाओ। तारगेट पाठ 17 की तरह और मददगार अभ्यास किये हुए। रेन्ज व फीगर तारगेटों का 1 सेट, स्क्वाड को आधे दायरे में बिठा दो।

**2. दोहराई—** एलीवेशन टेबुल पर प्रश्नोत्तर से कराओ।

**3. उद्देश्य—** तारगेटों के अन्य स्थानों पर निशाना लेना सिखाना है।

**4. सामान—** राइफल, एमिंग रेस्ट, रेन्ज व फीगर तारगेट, नकली बुल, झन्डा, स्पार्टिंग, डिस्क, सिग्नलिंग डिस्क, साइट काला करने का सामान और अभ्यास किया हुआ मददगार।

**5. बयान—** अभी तक फायर करने वालों को यह परामर्श दिया गया था कि वह एलीवेशन की गलती को ठीक करने के लिये बैक साइट को फिर से ऐडजस्ट करें परन्तु ऐसा करना सदैव सम्भव नहीं होता। कुछ दशाओं में जवानों को निशाने की जगह बदलनी पड़ती है।

### निशाने की जगह बदली करने की आवश्यकता—

स्नैप शूटिंग या लगातार स्नैप शूटिंग के समय शायद ही इतना अवसर मिले कि वह अपनी बैक साइट पर फिर से साइट लगा सके। इसलिये अपने फायर को सफल बनाने के लिये निशाने की जगह बदलनी पड़ती है।

दूसरे जब 200X से फायर हो रहा हो और गोली ऊपर लगे तो उस समय साइट 200X से कम करना सम्भव नहीं है। ऐसे अवसरों पर भी निशाना नीचे लेना पड़ेगा।

**6. सिखलाई का क्रम—** पाठ तीन भागों में सिखाया जायेगा।

**7. भाग एक—** रेज तारगेटों पर ऊपर या नीचे शिस्त लेना (जवानों को 4'x4' एप्लीकेशन तारगेट पर समझाओ)

सही निशाने पर गोली पहुँचाने के लिये निशाने की जगह को उतना ही ऊपर या नीचे को खिसकाया जाय जितना कि गोलियाँ ऊपर या नीचे को लग रही हैं। उदाहरण के तौर पर जब रेन्ज तारगेट पर गोलियाँ निशाने की जगह से लगभग एक फुट ऊपर लग रही हों तो आवश्यकता है कि निशाना लगभग एक फुट नीचे लिया जाय। जवानों को रेन्ज तारगेट पर ऊपर नीचे शिस्त लेने का नमूना दो। (स्क्वाड को एमिंग रेस्ट पर ले जाओ)

**8. अभ्यास—** समस्या देकर स्क्वाड से रेन्ज तारगेट पर अभ्यास कराओ। जवान से शिस्त लगावाओ। मददगार को संकेत दो वह स्पार्टिंग डिस्क लगाकर सिग्नलिंग डिस्क से संकेत दे। अब जवानों को बताओ कि दिखलाये गये स्थान पर आप की गोलियाँ लग रही हैं। जवान उस गोली का हक रखते हुये शिस्त लगायें। जब सबकी शिस्त लग जाय तो मददगार को संकेत दो। वह स्पार्टिंग डिस्क उतारे और इसके विपरीत (यदि एक फुट स्पार्टिंग डिस्क नीचे हो तो) ऊपर एक नकली बुल लगाओ। प्रशिक्षक सबकी शिस्त फिर चेक करे और स्क्वाड की गलतियाँ बताये। स्क्वाड को तारगेट के पास ले जाओ।

**9. भाग दो—** फीगर तारगेटों पर ऊपर-नीचे शिस्त लेना।

बताओ कि पुतले तारगेटों पर फायर करते समय फायरर को निशाने की जगह झट-पट और बेझिझक बदलनी पड़ती है। फीगर तारगेट पर उदाहरण दो कि यदि गोलियाँ तारगेट के ऊपर से जा रही

हो तो तारगेट के नीचे वाले किनारे पर शिस्त लो। इस परिवर्तन के बाद भी यदि गोलियाँ निशाने के ऊपर को लगे तो जवान ऐसी जगह का निशाना ले जो तारगेट के बीच से तारगेट की पूरी ऊँचाई के बराबर नीचे हो।

यदि उसकी गोलियाँ तारगेट के नीचे लग रही हों तो ऊपर लगने के लिये उपरोक्त कार्यवाही के विपरीत पूरी कार्यवाही करे। ऐसे अवसरों पर जमीन पर भी एक ऐसा निशान मिल जाता है जो तारगेट और फायर करने वाले के बीच या तारगेट के पीछे होता है। ऐसे निशान से मदद या एमिंग मार्क (Aiming Mark) का काम लिया जा सकता है।

फीगर नं० 11 तारगेट पर छोटे डन्डे वाले तारगेट की सहायता से ऊपर या नीचे लगाकर निशाना बाँधना समझाओ। स्क्वाड को एमिंग रेस्ट पर ले जाओ।

**10. अभ्यास—** समस्या देकर स्क्वाड से पुतलों पर निशाने की जगह से नीचे व ऊपर निशाना बाँधने का अभ्यास कराओ।

**तरीका—** तारगेट पर शिस्त लगाओ। अब बताओ कि गोली किधर से मिस हुई है। जवान दिशा के अनुसार तारगेट के किनारे पर शिस्त लें। बताओ कि गोली फिर भी उधर से मिस हो गई। अब जवान सिखाये हुये ढँग से दुबारा शिस्त लें। मददगार को इशारा दो कि वह सहायक तारगेट खड़ा करे, प्रशिक्षक चेक करे और गलतियाँ बताये। इस प्रकार अभ्यास कराने के बाद तारगेट सेट के पास आधे दायरे में स्क्वाड को बिठा दो।

**11. भाग तीन—** ऊपर-नीचे और हवा का हक रख कर निशाना लेना।

(अ) बताओ कि कभी-कभी ऐसा होता है कि निशाना नीचे या ऊपर बाँधने के साथ-साथ हवा का भी हक रखना पड़ता है। ऐसा उस समय आवश्यक होता है जब ऐलीवेशन में भी गलती हो गई हो और हवा तिरछी या दाहिने, बाये से चल रही हो (तारगेट पर ठीक से समझाओ) ऐसे अवसर पर पहले हवा का हक रखो फिर ऊपर नीचे की गलती को दूर करो।

**(ब) निशाने की जगह से ऊपर निशाना बाँधना—**

बताओ कि नीचे निशाना बाँधना कुछ आसान है परन्तु ऊपर को निशाना बाँधना कठिन है। कारण कि ऊपर निशाना लेते समय फोर साइट तारगेट को ढक लेती है। स्क्वाड को एमिंग रेस्ट पर ले जाओ।

**12. अभ्यास—**समस्या देकर ऊपर नीचे और हवा का हक रख कर शिस्त लेने का अभ्यास कराओ। समस्या ऐसे दो :

जवानों से शिस्त लगवाओ और मददगार को संकेत देकर स्पॉटिंग डिस्क लगवाओ। स्पॉटिंग डिस्क 1' ऊपर 6" दाहिने लगवाओ। स्क्वाड को कहो कार्यवाही करे। जवान 1' नीचे 6" बाये शिस्त ले। नकलीबुल लगवाकर शिस्त चेक करो। अभ्यास के बाद राइफलें एमिंग रेस्ट से हटाओ और स्क्वाड को आधे दायरे में बैठा दो।

**13. संक्षेप—** (अ) प्रश्नोत्तर से।

**(ब) प्रारम्भिक शिक्षा की परीक्षा—** T.O.E.T राइफल एमिंग रेस्ट पर 300 गज पर फीगर नं० 12 तारगेट। तीन बार ऊपर नीचे शिस्त लेने की समस्या दी जायेगी। जिसमें दो ठीक होनी चाहिये।

**14. अन्तिम कार्य—** निरीक्षण और स्वस्थान।

## पाठ 19

### खुले मैदान में दूसरी पोजीशन से फायर करना (Firing from other positions in the open)

**1. प्रारम्भिक कार्य—** स्क्वाड, राइफल और ड्रिल कार्टरिज का निरीक्षण करो। स्क्वाड के सामने 100X व 200X पर फीगर नं0 12, 300X पर फीगर 11 तारगेट लगे हुए। इसी प्रकार से प्रशिक्षक के लिये भी होना चाहिये। स्क्वाड एक लाइन में हो।

**2. दोहराई—** आड़ के प्रयोग के अन्त में राइफलें भरी रखो। स्क्वाड से लेटने के मोर्चे (Laying position) से भर और खाली करने का अभ्यास कराओ। स्क्वाड आधे दायरे में बिठा दो।

**3. उद्देश्य—** मैदान में उठने, बैठने तथा खड़े मोर्चे से फायर करने की सिखलाई देना है।

**4. सामान—**राइफल ड्रिल कार्टरिज और पुतले (Fig. Targets)

**5. बयान—** राइफल से साधारणतया लेटने का मोर्चा लेकर ही फायर किया जाता है। लेकिन कभी कभी खुले मैदान में दूसरी पोजीशन से फायर करने की आवश्यकता पड़ती है, इस दशा में फायर करने वाले को ऐसे तरीके से काम लेना पड़ेगा जो लेटने के मोर्चे से विपरीत होगा ऐसे हालातों में फायरिंग बहुत सी बातों में स्नैप शूटिंग जैसी होगी।

**6. सिखलाई का क्रम—** पाठ तीन भागों में सिखाया जायेगा।

**7. भाग एक—**घुटने के मोर्चे से फायर करना—

(नमूना बयान से स्क्वाड साथ में नकल करें)

स्क्वाड एक लाइन में खुला हुआ। प्रशिक्षक स्क्वाड के बांये वाले जवान की लाइन में और थोड़ा बांये हों।

बयान करो कि—घुटने का मोर्चा बनाने के लिये बांये पैर से सामने व कुछ दाहिनी तरफ एक कदम लो साथ ही राइफल को बांये हाथ से तौल की जगह पकड़ो। राइफल की मजल ऊपर को सामने को रखो अब दाहिना घुटना जमीन पर टिका दो। घुटना दाहिनी तरफ को काफी निकला हुआ। दाहिने पैर की एड़ी पर बदन को टिकाओ और अगर हो सके तो उस पर बैठ जाओ स्माल आफ दी बट दाहिने हाथ से पकड़ा हुआ और बाईं कोहनी बांये घुटने के पीछे टिकी हो। राइफल का बट दाहिनी रान के अन्दर वाले हिस्से पर, इस दशा में दाहिना घुटना तारगेट की दाहिनी ओर जमीन पर लगा हुआ और एड़ी जमीन पर से उठी हुई। बदन का बोझ एड़ी पर। बाँया पैर आगे तारगेट की सीध में हो। बाँयी कोहनी घुटने से मामूली आगे या पीछे जहाँ आराम मिल सके। दाहिने हाथ से स्माल आफ दी बट पकड़ो। बट दाहिनी रान पर, बैरल जमीन से 45 अंश के कोण पर।

**राइफल को पकड़ना और फायर करना—** रेन्ज के आदेश पर रेन्ज लगाओ। सेपटी कैच आगे करो। बाँयी कोहनी को इतना आगे करो कि बांये घुटने के सामने या पीछे हो जाय साथ ही दाहिनी बाजू को जमीन के समानान्तर उठाते हुए राइफल के बट को कन्धे में जमाओ और राइफल को वैसे ही पकड़ो जैसे लेटने के मोर्चे की पोजीशन में बताई गई थी। फायर के हुक्म पर बाकी सब कार्यवाही जैसे सीखी थी। (खड़े हो जाओ) (देखो चित्र नं0 22)





चित्र नं०- 22 नीलिंग पोजीशन से मोर्चा लेना

**8. अभ्यास—** स्क्वाड घुटने के मोर्चे से फायर करने का अभ्यास अन्त में राइफलें भरी हुई। भाग 2 शुरू करने से पहले स्क्वाड को किसी ढलवान जमीन पर ले जाओ। और अपने दोनों तरफ दो गुप्तों में खड़े करो।

**9. भाग 2— (अ) बैठने के मोर्चे से फायर करना—**

(अ) बैठने के मोर्चे से जवानों को नमूना दिखाकर समझाओ कि बैठकर फायर करना उस दशा में सबसे अधिक लाभदायक होता है जब कि सामने वाली ढलान पर से फायर करना हो। बैठने का मोर्चा बनाने के लिए राइफल को बांये हाथ से तौल के स्थान पर पकड़ते हुए दाहिने हाथ को पीछे जमीन पर लगाते हुये तेजी से बैठक के बल बैठ जाओ। इस दशा में दोनों एड़ियाँ जमीन पर घुटने मुड़े हुए और पजे ऊपर। कोहनियाँ घुटने के आगे पीछे जहाँ आराम मिले। दाहिना हाथ स्माल ऑफ दी बट पर, बट जमीन पर और राइफल जमीन से 45 अंश के कोण पर।

**(ब) राइफल पकड़ना और फायर करना—**

रेन्ज के आदेश पर रेन्ज लगाओ। सेपटी कैच आगे करो। दोनों कोहनियों को घुटने के आगे या पीछे रखते हुये राइफल को कन्धे में ले जाओ। कभी-कभी यह अच्छा होगा कि दोनों कोहनियों को घुटनों के अन्दर की तरफ रखते हुये बट को कन्धे में जमाया जाय व दोनों घुटनों को अन्दर की तरफ दबाया जाय। इस जगह से ऊपर या नीचे शिस्त लेने की आवश्यकता हो तो बांये पैर को आगे या पीछे करो। फायर के आदेश पर बाकी कार्यवाही सीखे हुए तरीके के अनुसार (प्रशिक्षक फायर न करे, सेपटी कैच लगाये और खड़ा हो जाय) (देखो चित्र 23)



चित्र नं0- 23 बैठने की पोजीशन से मोर्चा लेना

**10. अभ्यास**—स्क्वाड को ढलवान जमीन पर एक लाइन में खड़ा करो और अभ्यास कराओ।

**11. भाग तीन**—खड़े मोर्चा से फायर करना (अ) जवानों को बताओ कि जब कोहनियों को टिकाने के लिये किसी मजबूत सतह का सहारा न मिल सके तो मजबूती से बगैर राइफल को हिलाये पकड़े रखना बहुत कठिन होता है।

साधारण तौर पर राइफल का अगला सिरा जरूर हरकत करता रहता है। खास कर जब फायर करने वाला चल कर या दौड़कर आया हो। ऐसी दशा में फायर को कारगर बनाने का सबसे अच्छा तरीका यह है कि हरकत को एक दिशा में स्थिर किया जाय। ऐसा करने से इस हरकत पर काबू पाया जा सकता है और फायर करने वाला, ठीक अवसर पर एक राउन्ड फायर करने के लिये तैयार हो सकता है। (स्क्वाड को एक लाइन में खोल दो। और प्रशिक्षक स्क्वाड के बांये वाले जवान की लाइन में और थोड़ा पीछे हो)

**(ब) (पोजीशन लेना—)** (नमूना बयान के साथ नकल)

बयान करो कि खड़ा मोर्चा लेने के लिये आधा दाहिने मुड़ो और बांये पैर को उठाकर इतना बाँई तरफ ले जाओ कि बदन का बोझ दोनों पैरों पर बराबर हो जाय। अब राइफल को आगे उछालो और बांये हाथ में इस तरह पकड़ो कि मजल ऊपर को रहे और बट दाहिने कूल्हे के ठीक सामने। अब दाहिना हाथ बट पर हो।

**(स) राइफल पकड़ना**— रेन्ज के आदेश पर रेन्ज लगाओ। सेपटी कैच आगे करो। राइफल को दाहिने हाथ से उसी प्रकार पकड़ो जैसा सिखाया गया है दाहिने हाथ का काम पहले जैसा ही। लेकिन बांये हाथ की पकड़ कुछ भिन्न होगी। बांये हाथ से राइफल को आसानी से जितना ज्यादा आगे हो सके पकड़ो। पकड़ पहले से ज्यादा मजबूत हो। टुड्डी बट पर दबाव डालती रहे, सिर की पोजीशन पहले जैसी हो और पैरों के बीच का फासला कद के अनुसार हो। (देखो चित्र नं0 24)



चित्र नं0- 24 स्टैंडिंग पोजीशन

बांया पैर थोड़ा आगे को, कन्धा मुड़ा हुआ और थोड़ा आगे की ओर झुका हुआ हो। और दाहिना बाजू जमीन के समानान्तर हो।

#### **(द) निशाना बाँधना और फायर करना—**

राइफल को अनुमान से आदमी के पैर की सीध में तानकर ट्रिगर पर पहला दबाव डाला जाय। इसके बाद फोर साइट को आदमी के जिस्म की सीध में लाया जाय। ज्यों ही फोर साइट बीच में आय शिस्त दुरूस्त मानकर गोली फायर कर दी जाय। फायर करने की बाकी सब कार्यवाही पहले जैसी ही। स्क्वाड से अभ्यास कराओ। राइफले खाली कराओ और खुद भी खाली करो।

**12. अभ्यास—** पूरे काम का अभ्यास—(जिसमें ड्रि0 कार्ट्रिज का प्रयोग न करें) तमाम पोजीशनों से फायर करने का स्क्वाड से अभ्यास कराओ। (अभ्यास के बाद बैठा दो)

#### **13. संक्षेप— (अ) प्रश्नोत्तर से।**

(ब) तारगेट का सेट 100X200X300X के फासले पर लगवाओ।

(स) फायरिंग का अभ्यास करने से पहले जवानों की पोजीशन अच्छी तरह चेक कर लो।

(द) भर के आदेश का मतलब है कि जमीन पर लेट कर राइफल भरना। इसलिये अगर जवान को किसी और मोर्चे से राइफल भरना हो तो हुक्म के साथ पोजीशन को भी जरूर बताओ। उदाहरणार्थ “खड़ा मोर्चा ले, ‘भर’ खाली करने के आदेश पर राइफल को खाली करे और बिना किसी अगले आदेश के खड़ा होकर विश्राम पोजीशन बनाये।

व व व

राइफल तथा बैनट / / 75



## पाठ 20

### अपना बचाव (Self Defence)

1. **प्रारम्भिक कार्य**— निरीक्षण, राइफल काक, संगीन म्यान के साथ चढ़ी हुई और रस्सी बंधी हुई।

2. **दोहराई**— ट्रेनिंग स्टिक का अभ्यास (स्क्वाड को गोलाई में करके) ट्रेनिंग स्टिक दाहिने और बांये एक-दो अनी घोंपने का अभ्यास लो। अभ्यास के बाद प्रशिक्षक और स्क्वाड के सभी जवानों के पास राइफलें होंगी। स्क्वाड आधे दायरे में खड़ा करो।

3. **उद्देश्य**— अपना बचाव करना सिखाना है।

4. **सामान**— राइफल, संगीन, रस्सी और ट्रेनिंग स्टिक।

5. **बयान**— जवानों के लिये यह तो जरूरी है कि वह अपने बचाव के लिये कुछ तरीका सीख ले लेकिन उसे अच्छी तरह समझ लेना चाहिये कि उसका असली उद्देश्य अपना बचाव करना नहीं अपितु दुश्मन पर वार करना और उसे ठिकाने लगाना है।

6. **सिखलाई का क्रम**— पाठ चार भागों में सिखाया जायेगा।

7. **भाग एक**— बाँये वार बचना, कुन्दा मारना और अनी घोंपना—

(अ) **बयान**— दुश्मन के वार को रद्द करने के बाद फौरन दुश्मन पर हमला कर देना चाहिये। दुश्मन के वार को रद्द करने के लिये 'वार' बचाव' एक ऐसा तरीका है जिससे दुश्मन के किये हुए वार को बचा सकते हैं और अपने वार को सफल बनाकर उसे मौत के घाट उतार सकते हैं।



चित्र नं0- 25 वार और बचाव

(ब) **नमूना साथ नकल**— इसका नमूना दिया जाय। जवान साथ-साथ नकल करें। स्क्वाड को एक लाइन में करो। हर जवान में पाँच-पाँच कदम का फासला हो। प्रशिक्षक लगभग बाँये वाले जवान की लाइन में हो। तान शस्त्र बनाओ और बताओ कि अगर दुश्मन बदन के बाँये हिस्से पर वार करता है तो दुश्मन के वार को बचाने के लिये बाँये बाजू का खम निकालते हुए बाँये हाथ से राइफल को बाँई तरफ इतना आगे झटक कर बढ़ो कि दुश्मन का वार खाली हो जाय।



इस दशा में हम दुश्मन के इतना नजदीक होंगे कि आसानी से संगीन घोंपने के लिये जगह नहीं मिलेगी। ऐसी दशा में संगीन घोंपने से पहले दुश्मन को बट का कुन्दा मार कर जमीन पर गिरा दो। इसके लिये पीछे वाले पैर को उछाल कर आगे बढ़ाओ और राइफल को पड़े रूख रखते हुए जल्दी से जल्दी इस तरह घुमाओ कि बट का निचला हिस्सा दाहिनी कोहनी पर जमा कर दुश्मन की तुड़ड़ी पर लगे, (इस तरह आप भी करें)।

इस दशा में बदन का बोझ आगे वाले पैर पर और उसमें खम, पीछे वाला पैर सीधा और मजबूत मैगजीन आगे की तरफ, निगाह बट के ऊपर से दुश्मन पर हो। (देखो चित्र 26)



चित्र नं० 26 कुन्दा मारना

अब गिरे हुए दुश्मन पर संगीन घोंपने के लिये कट किया जाता है। इस कार्यवाही को करने के लिये राइफल को जिस्म के सामने से, दाहिने हाथ से दाहिने नीचे और बायें हाथ से आगे करो। ध्यान रहे कि संगीन की नोक कन्धे की लाइन से ऊपर न आये। इस प्रकार तान शस्त्र पोजीशन बन जाय।

अब गिरे हुए दुश्मन पर संगीन घोंपने के लिये सीखे हुए तरीके से घोंप, निकाल, तान शस्त्र और सीधा गुजर जाओ।

(इस जगह प्रशिक्षक कार्यवाही न करे, अपनी राइफल जमीन पर रख कर स्क्वाड को संगीन घोंपने का आदेश दे)

घोप पर जवान पीछे वाले पैर को आगे बढ़ा कर संगीन घोपे। यह कार्य हवा में करें। फिर स्वयं निकाल, तान शस्त्र और सीधा गुजर कर 3 कदम आगे जाकर रूक जायें।

**8. अभ्यास—** (अ) आदेश (Word of Command) द्वारा जवान से बाँये वार बचाकर ठहराव से अभ्यास कराओ।

(ब) अभ्यास लगातार आदेश “बाँये वार बचा” पर पूरी कार्यवाही करें। (इसी बीच एक जवान के साथ प्रशिक्षक “बाँये वार बचा” का ट्रेनिंग स्टिक के साथ अभ्यास कर लें) स्क्वाड के जवानों के पास ट्रेनिंग स्टिक और एक जवान के पास राइफल हो जिससे प्रशिक्षक ने अभ्यास किया है। प्रशिक्षक के पास भी ट्रेनिंग स्टिक हो। स्क्वाड को बीच में एक लाइन में इकट्ठा करो।

**9. भाग दो—** बाँये वार बचाने के साथ ट्रेनिंग-स्टिक का प्रयोग—(एक जवान के साथ बयान से नमूना)

**(अ) तरीका—** जवान के पास राइफल, प्रशिक्षक के पास ट्रेनिंग स्टिक, प्रशिक्षक स्क्वाड के बाये वाले जवान की लाइन में और राइफल वाला दाहिने वाले जवान की सीध में।

**नमूना—** जवान को बताओ कि जब ट्रेनिंग स्टिक दिखाऊँगा तो तेजी से तान शस्त्र की पोजीशन बनाकर आगे बढ़ो और ट्रेनिंग स्टिक की गद्दी से संगीन की नोक 6” के फासले पर रखते हुये रूक जाओ। अब ट्रेनिंग स्टिक दिखाओ और जवान आदेश के अनुसार काम करे। रोक कर बताओ कि इस पोजीशन में जवान को रोकना नहीं चाहिये परन्तु आपको समझाने और यह बताने के लिये कि ट्रेनिंग स्टिक दिखाने वाले को किन बातों का ध्यान रखना चाहिये, रोका गया जो ये हैं—

- (i) ट्रेनिंग स्टिक का गद्दा संगीन से 6” दूर हो।
- (ii) ट्रेनिंग स्टिक दिखाने वाला जवान कदम आगे न ले।
- (iii) ट्रेनिंग स्टिक का वार सीधा और जोरदार हो

(प्रशिक्षक वार करे और जवान बचाये)

(iv) कुन्दा मार के लिये गद्दा न दिखाया जाय।

(v) संगीन घोपने के लिये छल्ले को जमीन से 1” ऊपर दिखाया जाय। (देखो चित्र नं0 17) जवान संगीन घोप और निकाल करें।

इस पूरी कार्यवाही के साथ जवान भी कार्य करे। जब संगीन से हमला हो जाय तो ट्रेनिंग स्टिक को छुपा दिया जाय। जवान सीधा गुजर जाय।

**10. अभ्यास—** (अ) केवल ट्रेनिंग स्टिक का। सभी जवानों के पास ट्रेनिंग स्टिक हो और वह पाँच-पाँच कदम एक लाइन में खुले हों। प्रशिक्षक के पास भी स्टिक हो।

**आदेश—** तान शस्त्र “बाँया वार बचा-एक” इस पर जोर से स्टिक आगे करे। “दो” पर आगे वाला पैर पीछे लें ओर दाहिनी तरफ दिखायें निगाह छल्ले पर। “तीन” पर छल्ला छुपायें। पहली बार प्रशिक्षक स्वयं करें और फिर उनसे काम ले।

**(ब) अभ्यास जोड़ियों में—** “बाँये वार बचा” का अपने आप। अब आधे जवानों के पास राइफल और आधों के पास ट्रेनिंग स्टिक हों। दोनों लाइन आमने सामने 10 कदम के फासले पर और आपस में पाँच कदम का बगली अन्तर हो। प्रशिक्षक के आदेश से आपस में बदली करके अभ्यास कराओ। प्रशिक्षक इसी बीच एक जवान को लेकर दाहिने बार बचा का अभ्यास कर ले।

### 11. भाग तीन— तीन-दाहिने वार बचाना और संगीन घोंपना।

स्क्वाड एक लाइन में और प्रशिक्षक स्क्वाड के दाहिने वाले जवान की लाइन में पीछे हो। ट्रेनिंग स्टिक वाला जवान बाँये वाले जवान की लाइन में थोड़ा आगे हो। ताकि स्क्वाड प्रशिक्षक की नजर में रहे। प्रशिक्षक के पास राइफल।

**नमूना—** जवान स्टिक दिखाये, प्रशिक्षक हमला करे। प्रशिक्षक दाहिने वार बचाकर रूक जाय और जवान भी दाहिने कन्धे पर स्टिक फेंक कर रूक जाय। बताओ कि जब दुश्मन तुम्हारे दाहिने कन्धे पर वार करे तो उसके वार को रोकने के लिये दाहिनी तरफ बाँयी कोहनी का खम निकाल दिया जाता है और राइफल का दबाव दाहिने को डाला जाता है। यहाँ से दुश्मन को कुन्दा नहीं मारा जा सकता क्योंकि दुश्मन राइफल के दाहिनी तरफ है और उसकी राइफल अपने दाहिने है। अगर हम कुन्दा मारेंगे तो दुश्मन की संगीन की नोक से जख्मी हो जायेंगे। यहाँ पर कार्यवाही इस प्रकार करनी चाहिये।

दुश्मन पर संगीन घोंपने के लिये पहले सिध्दाई लो। इसके लिए तान शस्त्र की पोजीशन में आओ फिर सीखे हुए तरीके से एक अनी घोंप कर गुजर जाओ परन्तु जवान हमारा है इसलिये इस पर संगीन नहीं घोंपी जायेगी। इस काम को पूरा करने के लिए जो जवान स्टिक फेंकता है उसको चाहिए कि एक कदम बाँई तरफ ले और दाहिने मुड़कर खड़ा हो जाय। ट्रेनिंग स्टिक को छुपाये। ट्रेनिंग स्टिक वाले जवान को संकेत दो वह अपनी कार्यवाही करे। जब जवान बाँये कदम ले तो प्रशिक्षक हवा में एक अनी घोंप की कार्यवाही करे।

**12. अभ्यास—** (अ) जोड़ियों में आधे जवानों के पास राइफल और आधे के पास ट्रेनिंग स्टिक, बदली करके दाहिने वार बचाव का अभ्यास। इसी बीच प्रशिक्षक एक जवान के साथ हमले के दूसरे तरीके का अभ्यास कर लें।

(ब) प्रशिक्षक के आदेश से पूरे काम का अभ्यास। गोल दायरे में जवानों से दाहिने और बाँये वार बचा का अभ्यास लो। तमाम जवानों के पास राइफल हों। स्क्वाड को एक लाइन में इकट्ठा करो। प्रशिक्षक के पास ट्रेनिंग स्टिक हो और वह आगे बीच में हो।

### 13. भाग चार—हमले के दूसरे तरीके—

(नमूना ट्रेनिंग स्टिक और राइफल का प्रयोग करते हुये)

**(अ) गुत्थम गुत्था—** राइफल वाला एक जवान स्क्वाड के दाहिने वाले जवान की सीध में और दाहिने। प्रशिक्षक बाँये वाले जवान की लाइन में बाँये हो। प्रशिक्षक स्टिक दिखाये। जवान “तान शस्त्र” करके हमला करे, साथ ही प्रशिक्षक भी स्टिक लेकर आगे बढ़े (इसके लिये दोनों आगे बढ़ेंगे) इस हमले का मिलाप स्क्वाड के ठीक बीच में होना चाहिये। प्रशिक्षक जवान के दाहिने कन्धे पर वार करेगा अर्थात् दाहिने वार बचा होगा। अब स्टिक और राइफल दोनों आपस में मिली रहें और दोनों जोर से राइफल और ट्रेनिंग स्टिक भिड़ाये रहे।

**बयान—** इस तरह दोनों तरफ से हथियार फँस जाय तो ऐसी दशा में (राइफल की संगीन और स्टिक का रूख दोनों के बीच होगा) वार करना कठिन हो जाता है। ऐसी दशा में दुश्मन की आँख से आँख मिला कर धोखा देते हुए, व पहल करते हुये अपनी राइफल छोड़ कर दुश्मन का गला पकड़ें और नाजुक हिस्से पर घुटने या बूट की टों से वार करें। परन्तु इस काम का अभ्यास नहीं होगा।

**(ब) फायर के साथ वार बचाना—** इस काम के लिये प्रशिक्षक के पास राइफल और जवान के पास ट्रेनिंग स्टिक हो। प्रशिक्षक स्क्वाड के दाहिने से आए। स्टिक वाला बाँये जवान की लाइन में हो। बताओ कि दुश्मन अचानक 10 या 15 गज पर निकल आए तो बजाय करीब पहुँच कर वार करने के आवश्यक है कि पहले उस पर गोली फायर करके बर्बाद करने की कोशिश की जाय। ऐसा करने से दुश्मन हमला करने से पहले ही बर्बाद हो जायेगा अन्यथा उसका साहस अवश्य ही टूट जायेगा जिससे संगीन की कार्यवाही करने में और भी सुविधा होगी।

(इस काम का नमूना दिखाओ) अब ट्रेनिंग स्टिक वाले जवान को ट्रेनिंग स्टिक दिखाने वाली जगह पर भेज दो। जवान स्टिक दिखाये, प्रशिक्षक तान शस्त्र में आगे बढ़े और 10 गज पर आते ही ट्रिगर एक ही दबाव से दबाये और आगे बढ़ता रहे। स्टिक वाला बाँये कन्धे पर वार करे। प्रशिक्षक बाँये वार बचा की कार्यवाही करते हुए सीधा गुजर कर निकल जाय। यदि राइफल वाला जवान फायर करने के बाद यह समझता है कि दुश्मन बर्बाद हो गया है तो फिर से भरे। यदि बर्बाद न हुआ हो तो संगीन से दुश्मन को बर्बाद करे। इसके बाद जैसा उचित हो कार्यवाही करे।

**14. अभ्यास—** फायर करने के साथ बाँये वार बचाने का अभ्यास गोल दायरे में।

**15. संक्षेप—** दो अच्छे जवानों का नमूना प्रश्नोत्तर से।

**16. अन्तिम कार्य—** स्क्वाड का निरीक्षण और स्वस्थान।

व व व



## नीची आड़ से फायर करना

(Firing Form Low Cover)

**1. प्रारम्भिक कार्य—** स्क्वाड, राइफल और ड्रिल कार्ट्रिज का निरीक्षण। आवश्यकतानुसार आड़ें बनाई जायें जिसमें सैन्ड बैग की आड़, सख्त ईट या पत्थर की आड़, मिट्टी का ढेर और मिट्टी की लम्बी आड़ हो, सबक टूटी-फूटी जमीन पर चलाया जाय।

**2. दोहराई—** विभिन्न पोजीशनों से भरने का अभ्यास। (स्क्वाड को एक लाइन में खोल दो) अन्त में राइफल काक (स्क्वाड को जहाँ आड़ें बनी हों उनके पास आधे दायरे में बैठा दो)

**3. उद्देश्य—** नीची आड़ से फायर करना सिखाना है।

**4. सामान—** राइफल, ड्रिल कार्ट्रिज फीगर तारगेट व मुनासिब आड़।

**5. बयान—** यदि आड़ से ठीक-ठीक काम लिया जाय तो जवान इतना छुपाव हासिल कर सकता है कि वह दुश्मन पर फायर डाल सके लेकिन वह स्वयं दुश्मन की नजर और गोलियों से ज्यादा ज्यादा बचा रहे। सबसे अच्छी आड़ वह है जो जवान को चारों ओर व ऊपर से भी दुश्मन की नजर और गोलियों से बचा सके। साथ ही जवान उस आड़ से काफी बड़े इलाके में तारगेटों पर अच्छी तरह से फायर कर सके। परन्तु ऐसी आड़ का मिलना हमेशा मुमकिन नहीं होता है। साधारणतया ऐसी आड़ ही मिलती है जो केवल दुश्मन की नजर से बचा सकती है। आड़ से जवान कितना बचाव हासिल कर सकता है यह उसकी योग्यता पर निर्भर है वह जितनी जल्दी देखभाल करके जमीन की प्राकृतिक बनावट से जितना अधिक फायदा उठा सकेगा, उतना ही अधिक बचाव प्राप्त कर सकता है। अच्छी आड़ में विशेषतायें होनी चाहिये—

- (1) आड़ न मशहूर हो न किसी मशहूर निशान के पास हो।
- (2) फील्ड आफ फायर साफ हो।
- (3) जहाँ से आगे बढ़ने या पीछे लौटने का रास्ता छुपा हुआ हो
- (4) आड़ गोली से बचा सकती हो।
- (5) आरामदेय हो।
- (6) हथियार का प्रयोग आसानी से किया जा सके।

इस पाठ में सिर्फ नीची आड़ से फायर करना बताया जायेगा।

**6. सिखलाई का क्रम—** पाठ 3 भागों में सिखाया जायेगा।

**7. भाग एक—** आड़ के अनुसार पोजीशन लेना तथा नरम कठोर आड़ का प्रयोग (बयान से नमूना)

**(अ) आड़ के अनुसार मोर्चा लेना—**

नरम मिट्टी के ढेर के पीछे मोर्चा लो, स्क्वाड को आगे भेजो। स्क्वाड को पहले गलत नमूना दिखाओ। स्क्वाड को पीछे मोड़ो और पोजीशन सही बनाओ। स्क्वाड को फिर पीछे मोड़ कर दिखाओ। लगभग 30 गज से जवान दो गुप्तों में देखें। एक लेटने के मोर्चे से दूसरा घुटने के मोर्चे से। अब स्क्वाड को अपने दोनों तरफ खड़ा करो तथा पूछो कि उन्होंने दोनों बार क्या देखा। सिर और राइफल के बारे

में प्रश्न करो। जोर देकर बताओ कि साधारणतः फायर करने वाले को आड़ व मोर्चा के अनुसार अपने बदन की पोजीशन बनानी चाहिये। जैसा कि नमूना दिया गया है। हर दशा में जवान को यह प्रयत्न करना चाहिये कि परिस्थिति को देखते हुए वह ऐसी पोजीशन बनाये जिसमें उसे अधिक आराम मिल सके। प्रशिक्षक लेटे हुये यहीं से दूसरी आड़ के पीछे जाय।

**(ब) नरम आड़ का प्रयोग—** (स्क्वाड दाहिनी तरफ खड़ा मोर्चा में, नमूना बयान से) बताओ कि यदि राइफल से किसी नरम आड़ के ऊपर से फायर करना हो तो जवान साधारण पोजीशन लेकर राइफल पकड़े। फिर अपने शरीर को ढीला छोड़कर आगे की तरफ इतना बढ़े कि उसकी कलाई आड़ को छूने लगे। ऐसा करने से राइफल की पकड़ को अच्छी प्रकार कायम रखने में सहायता मिलती है। बाकी बातें वैसी ही जैसी सैन्ड बैग के पीछे से फायर करने के सिलसिले में बताई गई हैं।

**(स) कठोर आड़ का प्रयोग—** यदि आड़ कठोर हो या उसका किनारा मजबूत हो तो राइफल को साधारण ढंग से पकड़ कर आड़ पर टिकाया जा सकता है राइफल को आड़ पर टिका दो। बायें हाथ से राइफल दबाये रखें। उचित होगा कि राइफल की सिलिंग राइफल के नीचे रहे। यदि हाथ आड़ पर होगा तो चोट लगने का डर है। बदन की पोजीशन आड़ के अनुसार बनाओ। प्रशिक्षक सेपटी कैच लगा कर खड़ा हो जाय।

**8. अभ्यास—** इसी काम का अभ्यास कराओ। (स्क्वाड को आड़ों के पीछे लाइन बनाओ) (अभ्यास के बाद जहाँ भाग दो चलाना हो वहाँ स्क्वाड को ले जाओ।)

#### **9. भाग दो—** टूटी फूटी जमीन का प्रयोग—

(बयान से नमूना)

बताओ कि जब लहर—दार जमीन की आड़ के पीछे से फायर करना हो तो जवान इस प्रकार मोर्चा लें— वह जमीन पर आम ढंग से लेट जाय। उसका शरीर और राइफल ऊँचे किनारे (Crest) के पीछे हो और राइफल की मजल कम से कम ही ऊपर हो, ताकि गोलियाँ किनारे पर न लगे और अधिक से अधिक बचाव हासिल हो सके। अब स्क्वाड को आगे भेजो और दिखाओ। प्रश्नोत्तर करो। यदि सिर दिखाई देने का सवाल पैदा हो तो छद्म की याद दिलाओ।

(प्रशिक्षक खड़ा हो जाय)

#### **10. अभ्यास—** जवानों से इसी काम का अभ्यास कराओ।

**तरीका—** स्क्वाड के सभी जवानों को क्षेत्र बाँट दो। पोजीशन लेने का आदेश दो फिर स्क्वाड के एक जवान को पास बुलाओ। वहाँ प्र०—उ० से पोजीशन पर बात—चीत करो। अब उस जवान को खड़ा करो। स्क्वाड के और जवानों का क्षेत्र बता कर पोजीशन में भेजो। अब स्क्वाड को बारी—बारी से दूसरे जवानों के पास ले जाओ। इसी प्रकार पूरे स्क्वाड को अभ्यास दो। (अभ्यास के बाद स्क्वाड को नीची आड़ के दाहिने एक लाइन में खड़ा करो)

**11. भाग तीन—नीची आड़ का प्रयोग —** (बयान से नमूना) बताओ कि साधारणतया सेक्शन कमान्डर ही सेक्शन के फायर पर काबू रखता है। परन्तु जब सेक्शन कमान्डर न हो तो जवान को अपनी सूझ—बूझ से काम लेना पड़ता है। फायर पर काबू रखने के लिए जो आदेश दिए जाते हैं और जो उन पर कार्यवाही की जाती है उस काम का नमूना दो। “सामने मकान, आगे—बढ़”के आदेश पर आगे बढ़ो। “लेट जाओ” के आदेश पर तेजी से लेट जाओ। रूको (एक या दो सेकेंड) फिर जल्दी से सबसे

नजदीक वाली उपयुक्त आड़ के पीछे चले जाओ। राइफल को शरीर के दाहिने और आड़ के पीछे रखते हुये देखभाल पोजीशन बनाओ। बताओ कि इसे देखभाल पोजीशन कहते हैं। रेन्ज के आदेश पर साइट को लगाओ। साइट लगाने के लिए शरीर थोड़ा पीछे करो। यदि राइफल नं0 1 हो तो उसी जगह राइफल को रखते हुए साइट लगाओ। यदि राइफल नं0 4 हो तो उसको बदन के सामने यानी थोड़ा आगे लाओ। साइट लगाओ और लगाने के बाद राइफल को सावधानी के साथ फायरिंग पोजीशन में लाओ और सेपटी कैच आगे करो। यह तैयारी की पोजीशन कहलाती है। तारगेट के बयान का इन्तज़ार करो। (देखो चित्र-27)



चित्र नं0 27 नीची आड़ का प्रयोग

**फायर—** इस आदेश पर जो तारगेट बताया गया हो उस पर बताई हुई रफ्तार से फायर करो। यदि कोई और आदेश न मिला हो तो आम रफ्तार से ही फायर करो।

**रोक फायर— (Stop Fire)** का आदेश मिलते ही फायर बन्द करो। परन्तु सेपटी कैच आगे और राइफल को फायरिंग पोजीशन में ही रहने दो। यदि राइफल में और राउन्ड भरने की आवश्यकता हो तो भरो।

**जारी फायर (Go-on)—**के आदेश पर दुबारा फायर उसी तारगेट पर जारी करो। यदि तारगेट बदली किया गया हो तो उस पर फायर करो। “आगे बढ़ने को तैयार (Prepare to Advance)” के आदेश पर सेपटी कैच लगाओ, साइटों को नीचे करो। सावधानी के साथ राइफल को आड़ के पीछे लाओ और आड़ से चार-पाँच कदम पीछे और दाहिने या बांये खिसको, “आगे बढ़” के आदेश मिलने का इंतज़ार करो।

**आगे बढ़—** के आदेश पर तेजी से आड़ को छोड़ कर आड़ के दाहिने या बांये से आगे निकल

जाओ। यदि ऊपर से जगह हो तो ऊपर जा सकते हो। (प्रशिक्षक वापस आकर, बयान करे) अगर आगे बढ़ते-बढ़ते अचानक आड़ लेनी पड़े, और इस बात का जरा भी संदेह हो कि दुश्मन ने आपको आड़ लेते हुए देख लिया है तो अपनी फायरिंग पोजीशन उस स्थान से जहाँ आड़ के पीछे गये थे ज्यादा से ज्यादा दूर चुनो। यह भी फायदेमन्द होगा की जब भी सम्भव हो आप फायरिंग के दौरान में थोड़ी-थोड़ी देर के बाद अपने मोर्चे की जगह बदलते रहो।

**12. अभ्यास—** आदेश से अभ्यास (स्क्वाड को 10X या 15X दूर लाइन बन कराओ) आदेश देते हुये फायर कराओ इसके लिये आदेश हरकत का रूख, आगे बढ़, लेट जाओ, रेन्ज, तारगेट का बयान और रोक फायर (Stop) जारी फायर (Go-on) हरकत के लिये तैयार, आगे बढ़, अन्त में स्क्वाड को इकट्ठा करो और बिठा दो।

**13. संक्षेप—**प्रश्नोत्तर से।

**नोट—**(अ) इस पाठ के लिये ऐसी जगह चुनी जाये जहाँ हर प्रकार की नीची आड़े हों।

(ब) नरम आड़-रिक्रूट के लिये यह निश्चय करना कठिन हो जाता है कि नरम आड़ का प्रयोग कैसे करें। इसका एक अच्छा उदाहरण दो-प्रशिक्षक मैदान में ठीक तरह से जमीन पर लेट जायें और राइफल को मजबूती से निशाने की पोजीशन में पकड़े। अब एक जवान हैवरसेक प्रशिक्षक की बाँई कलाई के नीचे मिला दे। ऐसा करने से प्रशिक्षक राइफल को बिना हिलाये पकड़ सकेगा। अब राइफल के नीचे से झोला निकाल कर दिखाओ कि इसमें न तो प्रशिक्षक की पकड़ में कोई परिवर्तन है न राइफल की पकड़ ढीली हुई है।

**14. अन्तिम कार्य—** निरीक्षण और स्वस्थान।

१ १ १



**पाठ 22**  
**अन्य प्रकार की आड़ों से फायर करना**  
(Firing From Other Types of Cover)

---

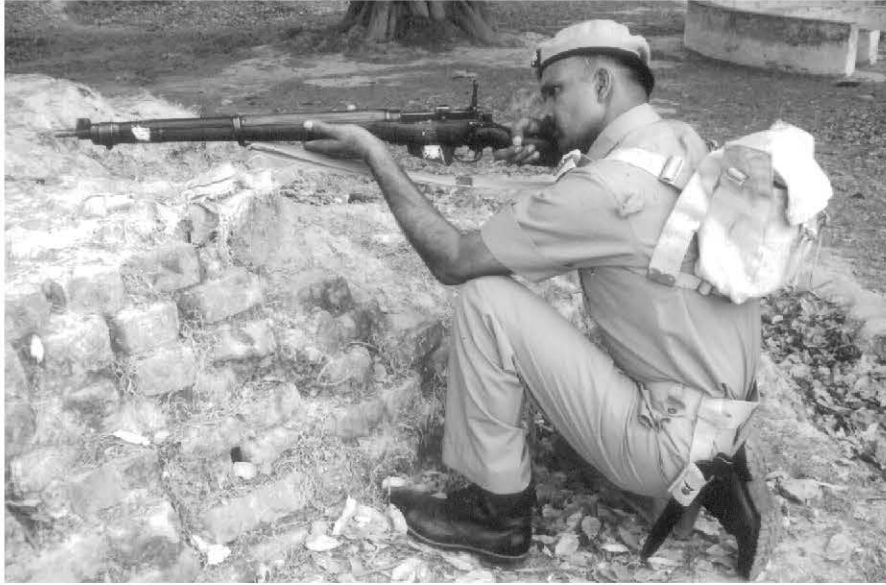
---

**1. प्रारम्भिक कार्य—** निरीक्षण, राइफल काक। पाठ ऐसे स्थान पर चलाया जाय जहाँ हर प्रकार की ऊँची और नीची आड़ें मिल सकें।

**2. दोहराई—** नीची आड़ से फायर करने की। अन्त में राइफल काक। स्क्वाड को आधे दायरे में बिठा दो।

**3. उद्देश्य—** हर प्रकार की आड़ों से फायर करना सिखाना है।

**4. सामान—** राइफल और फीगर तारगेट।



चित्र नं० 28 घुटने के मोर्चे से फायर करना

**5. बयान—** किसी आड़ को ही देखकर यह निर्णय किया जा सकता है कि कौन सी पोजीशन लेकर उसके पीछे से फायर किया जाय। इस पाठ में उन आड़ों का बयान किया गया है जो अभी तक नहीं बताई गई हैं।

**6. सिखलाई का क्रम—** पाठ तीन भागों में सिखाया जायेगा।

**7. एक भाग—** (अ) घुटने के मोर्चे (Kneeling Position) या बैठने के मोर्चे (Sitting position) का प्रयोग —(बयान से नमूना) स्क्वाड घुटने की और बैठने की आड़ के पास दाहिनी तरफ और प्रशिक्षक आड़ के पीछे हो।

(i) घुटने का मोर्चा (Kneeling position) बताओ कि जब आड़ इतनी ऊँची हो कि जवान उसके पीछे लेटे तो कुछ न दिखाई दे और खड़ा हो तो दुश्मन को नजर आ जाये इसलिए आवश्यक है कि वह

एक या दोनों टॉगों के बल या बैठने के मोर्चे से बैठ जाय। प्रशिक्षक घुटने का मोर्चा (Kneeling Position) बनाये और स्क्वाड को लगभग 50X आगे भेजे। स्क्वाड मोर्चा देखे (देखो चित्र 28)। वापस बुलाओ और पोजीशन पर बहस करो। बताओ की आड़ के अनुसार हमको यह निर्णय करना होगा कि उसके पीछे घुटने का मोर्चा या ऊँचा घुटने का मोर्चा ले। ऊँचे घुटने के मोर्चे के लिये दोनों घुटनों को जमीन पर टिकाया जायेगा। इससे आप काफी दूर तक देख सकते है। इसे "क्राउच पोजीशन" (Crouch Positon) भी कहते है।

(ii) बैठने का मोर्चा (Sitting Position) यदि आड़ घुटने के मोर्चे से छोटी और लेटने के मोर्चे (Laying Position) से ऊँची हो तो उस समय बैठने का मोर्चा ग्रहण करते है।

नमूना दो और बताओ कि बैठने या घुटने के मोर्चे में वैसी ही पोजीशन ली जाय जैसे खुले मैदान में। परन्तु फायर करने वाला पोजीशन लेते समय पकड़ में मजबूती पैदा करने के लिए आवश्यकतानुसार अपने शरीर को आड़ पर टेक दे। (देखो चित्र 29)। प्रशिक्षक खड़ा हो जाय और अपनी राइफल जमीन पर टेक दे।



चित्र नं0 29 बैठने के मोर्चे से फायर करना

**8. अभ्यास** — स्क्वाड से अभ्यास कराओ। अभ्यास के लिये नीची आड़ से फायर करने की तरह पूरा आदेश दो। (बाद में स्क्वाड को ऊँची आड़ के दाहिने खड़ा करो)।

**9. भाग दो**—खड़ा मोर्चा (Standing Positon) से फायर करना— (बयान से नमूना) बताओ कि खड़ा मोर्चा उस समय लिया जाता है जब ऊँची आड़ के पीछे से अर्थात किसी दीवार या ऊँचे



चित्र नं0 30 खड़े मोर्चे से फायर करना

बाँध के पीछे से फायर करना हो। इस पोजीशन में भी आड़ में वैसे ही काम लिया जाता है जैसे घुटने के मोर्चे से। परन्तु इस पोजीशन में फायर करने वाला जहाँ तक सम्भव हो अपनी राइफल की पकड़ मजबूत बनाने के लिये अपना शरीर आड़ से टिका दे। उसे अपने शरीर और घुटने को आड़ पर जोर देकर रखना चाहिये। यदि यह सम्भव न हो तो शरीर को थोड़ा दाहिने मोड़ो। बाँया कूल्हा और बाँई टाँग का बाहरी भाग आड़ पर सख्ती से बिठाओ। यह ध्यान रहे कि पोजीशन कैसी भी हो मगर दोनों कोहनियाँ आड़ पर टिकी होनी आवश्यक है।

प्रशिक्षक आड़ के पीछे मोर्चा ले। स्क्वाड को लगभग 50X आगे भेज कर अपनी पोजीशन दिखाये और स्क्वाड को बुलाये फिर प्रश्नोत्तर करे। (स्क्वाड को आड़ के पीछे ले जाओ)

**10. अभ्यास—** स्क्वाड से अभ्यास कराओ तरीका भाग एक की ही तरह। भाग तीन शुरू करने से पहले किसी दीवार या जहाँ आड़ के बगल से फायर करना बताना हो वहाँ खड़ा करो।

**11. भाग तीन—** आड़ के बगल से फायर करना—

(बयान से नमूना ) बताओ कि जब आड़ के बगल से फायर करना हो, जैसे सख्त चट्टान वगैरह, तो साधारणतया उसके दाहिनी तरफ से फायर करना चाहिये इसका तरीका—

प्रशिक्षक लेटने का मोर्चा बनाये। स्क्वाड लगभग 50X आगे भेजो और लेटने का मोर्चा दिखाओ। प्रश्नोत्तर से पोजीशन के बारे में बहस करो। बताओ कि राइफल को बांये आड़ के साथ उस स्थान से टिकाओ जहाँ पर बांये हाथ से पकड़ी हुई हो।

(अ) बाँया हाथ जहाँ तक हो सके आड़ के पास हो।

(ब) राइफल का बाँया पहलू आड़ से लगा हुआ हो।

(स) यदि राइफल नं01 हो तो बैक साइट आड़ के पीछे और अलग हो। अन्यथा साइट गिर जाने





चित्र नं0 31 आड़ के बगल से लेटकर फायर करना



चित्र नं0 31 क- आड़ की बगल से घुटने को मोर्चा से फायर करना

का डर रहेगा।

(द) आड़ की चौड़ाई के अनुसार खड़ा मोर्चा, घुटने का मोर्चा या बैठने का मोर्चा बनाओ।

(य) पोजीशन आड़ की चौड़ाई के अनुसार लो। (पैरों का खास ध्यान रखे) अब जवानों को फिर से भरने के विषय में नमूना दो। इसमें दाहिनी कोहनी कम से कम हरकत करे आड़ का पकड़ना और फायर करना पहले की तरह। (देखो चित्र-31)

(फ) जवानों के दिमाग में यह बात जोर देकर बिठाओ कि आड़ के प्रयोग से गोली फायर करने



की तरतीब और तरीके में कोई फर्क नहीं आता। आड़ इस्तेमाल करने के साथ दुरुस्त पकड़, सही शिस्त और दुरुस्त "फिर भर" की कार्यवाही में कोई ढिलाई न आने पाये।

**12. अभ्यास—** स्क्वाड से अभ्यास कराओ।

**13. अभ्यास—** पूरे काम का—यह अभ्यास पाठ 21 के भाग 3 की तरह आदेश से कराओ।

**14. संक्षेप—** (अ) प्रश्नोत्तर से।

**(ब) प्रारम्भिक शिक्षा की परीक्षा (T.O.E.T.)—**

हर प्रकार की आड़ के पीछे फायर पोजीशन लेने का तरीका, इस परीक्षा में जवान बताई हुई आड़ों के पीछे से तीन बार फायर करें। आड़ हर बार अलग प्रकार की होगी। यदि जवान बड़ी गलती करे तो उसे अनुत्तीर्ण समझो।

**नोट—**यदि खिड़की दरवाजे से फायर करना हो तो काफी पीछे पोजीशन लेना चाहिये और यह भी ध्यान रखा जाय कि वह किसी खिड़की या खुली जगह के आगे न खड़ा हो अन्यथा दुश्मन को उसका छाया दिखाई देगा। राइफल टिकाने के लिये सैन्ड बैग, मेज, कुर्सी और बिस्तर आदि का आड़ के स्थान पर प्रयोग करो।

**15. अन्तिम कार्य—**स्क्वाड का निरीक्षण व स्वस्थान।

व व व

**पाठ 23**  
**हरकत करने वाले तारगों पर फायर करना**  
(Firing At Moving Target)

---

**1. प्रारम्भिक कार्य—** राइफल का निरीक्षण करो। आखिर में राइफल काक रहेगी।

**2. दोहराई—** खुले में सिटिंग, नीलिंग या स्टैंडिंग पोजीशन से फायर करने की।

**3. उद्देश्य—** हरकत करने वाले तारगों पर फायर करना सिखाना है।

**4. सामान—** राइफल, एम करेक्टर, एमिंग रेस्ट, आर.ए.टी., मद्दगार जवान, मोटर गाड़ियाँ (यदि उपलब्ध हों), रिप्रजेन्टिव फीगर तारग, झण्डे, 22" बोर राइफल का राड।

**5. बयान—** दाहिने से बांये या बांये से दाहिने को जाते हुए तारगों को बर्बाद करने के लिये हरकत का हक रखना (Aim off) आवश्यक होता है। परन्तु जो तारग फायर करने वाले की तरफ सीधा आ रहा हो या दूर जा रहा हो उस पर फायर करने के लिये एम आफ (Aim off) करने की आवश्यकता नहीं होती। उन पर फायर करने का तरीका खड़े तारगों की तरह ही है।

**6. सिखलाई का क्रम—** पाठ तीन भागों में सिखाया जायेगा।

**7. भाग एक—** लीड कायम करना और फायर का क्रम—

(बयान से नमूना)

(अ) बताओ कि चलने वाले तारग पर फायर करने के लिये आवश्यक है कि तारग के थोड़ा आगे शिस्त रख कर फायर किया जाय।

(ब) आर0ए0टी0 पर नमूना दिखाओ। यदि चलने का ठीक अन्तर रख कर फायर नहीं किया जायेगा तो यह परिणाम मिलेगा "दिखाओ" इसके लिये बांये हाथ से प्रशिक्षक साकिट में तारग को हरकत दे और दाहिने हाथ से राड को ढकेले। राड मिस हो। राइफल को न हिलाए, गोली पीछे से मिस हो जायेगी। परन्तु जब चलने का ठीक अन्तर रखकर फायर किया जायेगा तो परिणाम यह मिलेगा।

"दिखाओ" अब भी पहले के अनुसार बांये हाथ से तारग को हरकत दो और दाहिने हाथ से राड को ढकेलो, राड ठीक तारग के बीच में लगे। तारग ठीक बर्बाद होगा।

(स) लीड— बताओ कि चलते हुए तारगों पर शिस्त कुछ आगे ली जाती है क्योंकि गोली के तारग तक पहुँचने तक के समय में तारग भी कुछ आगे बढ़ जाता है। इसी फासले का अन्दाज करके शिस्त आगे रखी जाती है। जिसे लीड (Lead) कहते हैं। यह लीड निम्न बातों पर निर्भर करती है।

(i) तारग की गति।

(ii) मजल से तारग की दूरी।

**फायर का क्रम** —जवानों को फायर के क्रम का आर0ए0टी पर नमूना दिखाते हुए बताओ।

(i) शिस्त लगाओ तारग पर शिस्त लेने से एलीवेशन प्राप्त होता है।

(ii) स्विंग (Swing) लो अर्थात् राइफल को तारग के साथ चलाओ, जिससे तारग की गति का पता चलेगा।

(iii) पास (Pass)— शिस्त को तारगेट से आगे ले जाओ, चाल को मामूली अधिक करते हुए शिस्त लो। तारगेट के आगे ले जाओ जिससे आवश्यक लीड प्राप्त हो जाय।

(iv) फायर—चाल को जारी रखते हुये फायर करो जिससे तारगेट बर्बाद होगा। फिर भरो।

(v) पुकारना— (फालो थ्रू) (Follow Through) मार पुकारो। यदि ठीक हो तो मत पुकारो, मिस हो तो मिस पुकारो।

बैठने के मोर्चे या घुटने के मोर्चे से फायर करने का नमूना दो। स्क्वाड को अपने पीछे V के आकार में खड़ा करो और बैठने या घुटने के मोर्चे से सहायक की सहायता से नमूना दो और साथ-साथ पूरी कार्यवाही बताते जाओ। नमूने के बाद बताओ कि इस प्रकार चलते हुए तारगेटो पर 300X से अधिक लम्बे रेन्ज पर फायर करना कारगर न होगा।

**9. अभ्यास—**स्विग और फालो थ्रू का अभ्यास करे मददगार 100, 200, और 300 गज पर पहले तेज चाल और फिर दौड़ चाल से चलें।

**10. भाग दो—** हरकत करने वाले तारगेट जो थोड़े समय के लिये दिखाई दें।

बताओ कि लड़ाई में साधारणतया तारगेट अधिक देर तक नजर के सामने नहीं रहते इसलिये उस पर फायर डालने के लिये स्नैप शूटिंग और चलते तारगेटो पर फायर करने के लिये मिले जुले नियमों से काम लेने की आवश्यकता पड़ सकती है फायर करने वाले को प्रयत्न करना चाहिये कि वह दुश्मन को आड़ में जाने से पहले ही निशाना बना दे। परन्तु यदि ऐसा न किया जा सके तो वह उस जगह को जहाँ शत्रु ने आड़ ली है, सावधानी से देखता रहे और अन्दाज लगाये कि शत्रु की फिर कहाँ से दिखाई देने की आशा है। इससे यह लाभ होगा कि जैसे ही दुश्मन निकलेगा उस पर तेजी और सफलता से फायर डाला जा सकेगा।

**11. अभ्यास—**जवानों से घुटने के मोर्चे, बैठने के मोर्चे तथा खड़े मोर्चे से अभ्यास कराओ, मददगार 100, 200 व 300 गज पर थोड़े समय के लिये चले और छुप जाय और कभी तिरछा चले।

**12. भाग तीन—मोटर गाड़ियाँ—**

(अ) मोटर गाड़ियों पर फायर करना— बताओ कि लड़ाई के मैदान में दुश्मन की गाड़ियों पर भी फायर करना पड़ सकता है।

बख्तर बन्द गाड़ियों के अलावा बाकी गाड़ियों को राइफल के फायर से आसानी से बरबाद किया जा सकता है चलती हुई फौलादी गाड़ियों को राइफल से बर्बाद तो नहीं किया जा सकता परन्तु उनके कार्य में बाधा अवश्य डाली जा सकती है।

राइफल का फायर अगर कारगर होगा तो दुश्मन को अपनी किस्वसक गाड़ियों (ए0एफ0वी0) (Armed Fighting Vehicles) के भी तमाम दरवाजे आदि बन्द करने पड़ेंगे, इस प्रकार राइफल के फायर से टैंक तोड़ हथियारों के काम में सहायता दी जा सकती है। जब दुश्मन की गाड़ियाँ 600X से अधिक दूरी पर चल रही हों तो राइफल मैनों को आमतौर पर, उन पर फायर नहीं करना चाहिये।

स्क्वाड से अभ्यास कराओ। अभ्यास के लिये यदि मिल सके तो गाड़ियों का प्रयोग करो।

### **(ब) हवा का हक और ऊपर नीचे शिस्त लेना—**

बताओ कि हरकत करते हुए तारगेटों पर फायर करते समय हवा का हक रखना अवश्य याद रखें। यह भी देख लें कि निशाने से ऊपर या नीचे को निशाना बाँधने की आवश्यकता तो नहीं है, यदि आवश्यकता पड़े तो हवा का हक और ऊपर नीचे शिस्त भी हरकत के साथ-साथ लेना आवश्यक है ताकि फायर का अच्छा परिणाम मिल सके। सदैव याद रखें कि लीड कायम करते समय एलीवेशन में किसी प्रकार अन्तर न आने पाये।

**13. अभ्यास—** स्क्वाड से अभ्यास कराओ।

**14. संक्षेप—** प्रश्नोत्तर से

**नोट—** अगर हो सके तो पाठ ऐसे समय पर चलाया जाय जहाँ फायर और मदद वाले जवानों के लिये आड़े हों। स्विग और फालो थू का अभ्यास किसी दीवार के ऊपर वाले किनारे या किसी दीवार पर बनी हुई लाइन की सहायता से दे सकते हैं। इससे एलीवेशन कायम रखने में सहायता मिलेगी।

**15. अन्तिम कार्य—** निरीक्षण और स्वस्थान।

व व व



## सी. क्यू. बी. फायरिंग ;मुठभेड़ की लड़ाई में राइफल का प्रयोगद्ध (CLOSE QUARTER BATTLE FIRING)

1. **प्रारम्भिक कार्य**— राइफल और ड्रिल कार्ट्रिज का निरीक्षण और काक।
2. **दोहराई**— खुले मैदान में नीलिंग और स्टैंडिंग पोजीशन से चलते हुए अभ्यास दोहराई खत्म होते ही बैनेट स्केवर्ड के साथ राइफल में लगाओ।
3. **उद्देश्य**— मुठभेड़ की लड़ाई में राइफल का प्रयोग सिखाना है।
4. **सामान**— राइफल, संगीन और सी0क्यू0बी0 तारगेट चारों तरफ।
5. **बयान**— जंगलों और आबादी वाले क्षेत्रों या और दूसरे क्षेत्रों में भी दुश्मन की पोजीशन पर धावा बोलते समय अधिकतर ऐसे अवसर आते हैं कि जवानों को निकट से ही दुश्मन का सामना करना पड़ जाता है। जवान को इस योग्य होना चाहिये कि दुश्मन के वार करने से पहले ही अपना बचाव कर सके और बिजली की तरह तेजी से गोली फायर कर दे। उसका निशाना इतना अच्छा हो कि पहली गोली से ही दुश्मन समाप्त हो जाय। इस प्रकार की लड़ाई में शिस्त लेने का अवसर नहीं होता। इसलिये इस प्रकार के युद्ध में स्वभाविक सिधार्ई (Sense of Direction) का बड़ा महत्व है।

### 6. सिखलाई का क्रम—पाठ दो भागों में सिखाया जायेगा।

7. **भाग एक**—राइफल को ले जाने के तरीके और वाकअप पोजीशन— (बयान से नमूना स्क्वाड साथ में नकल करें) बताओ कि मुठभेड़ की लड़ाई में आवश्यक है कि फायर करने वाला अपने शस्त्र से काम लेने के लिये तैयार हो ताकि ज्यों ही तारगेट दिखाई दे उसको निशाना बना दे।

राइफल को इस प्रकार लेकर चला जाय कि भार भी कम पड़े और समय पड़ते ही फायरिंग पोजीशन में आ सके। वाकअप (Walk Up) की तीन पोजीशन हैं तथा एक तैयारी (Alert) पोजीशन होती है इस बात का निर्णय करना कि कौन सी पोजीशन अपनाई जाय, दशा व समय पर निर्भर है।

(अ) दाहिने कन्धे पर राइफल को ले जाना—

(Right Shoulder Carry)

(स्क्वाड को एक लाइन में खोल दो)

बताओ कि दाहिने हाथ से राइफल के स्माल ऑफ दी बट को पकड़ो। तर्जनी अँगुली ट्रिगर गार्ड के बाहर हो। सेपटी कैच लगा हो और राइफल को दाहिने कन्धे पर इस प्रकार रखो कि मैगजीन ऊपर हो (देखो चित्र 31 'ख') इस पोजीशन से राइफल तेजी से कन्धे में लाई जा सकती है। बाँया हाथ बाकी काम के लिये खाली रहता है। खड़े-खड़े व चलते-चलते इसी का अभ्यास लो।



चित्र नं0 31 'ख'— दाहिने कन्धे पर राइफल ले जाना

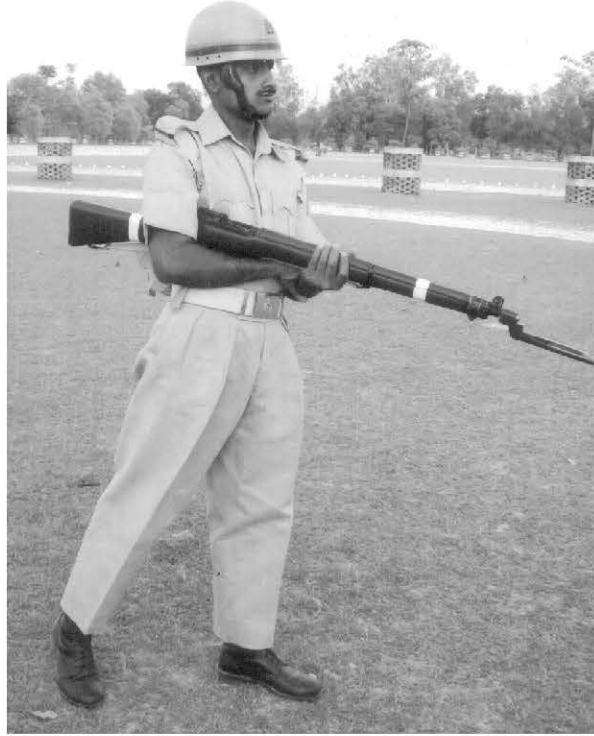
**(ब) बायें बाजू पर राइफल ले जाना (Left arm carry)** (नमूना साथ नकल)

दाहिना हाथ स्माल ऑफ दी बट पर, तर्जनी अँगुली ट्रिगर गार्ड के बाहर राइफल बदन के सामने तिरछी करके बाँई कोहनी के मोड़ पर मैगजीन से जरा ऊपर टिकाओ। राइफल की मजल थोड़ी ऊपर को हो। बायें हाथ की पकड़ दाहिनी कलाई पर होनी चाहिये।

इस पोजीशन में सबसे कम ताकत लगती है। इसी लिये इस पोजीशन से राइफल ज्यादा दूर तक ले जाई जा सकती है। खड़े खड़े और चलते हुए इसी काम का अभ्यास लो।

**(स) हुक पोजीशन (Hook Position)**— (नमूना साथ नकल) हुक पोजीशन बनाने के

लिये दाहिने बाजू से करीब करीब हुक की शकल बना कर राइफल को उस पर सहारा दो। बाँया हाथ बदन के सामने आउटर बैन्ड को सिलिंग कड़ी पर लाओ। अब दाहिने हाथ को राइफल के नीचे लाकर बाँई कोहनी के पास पकड़ो। अब राइफल की मजल कुछ नीची और तिरछी हो। (देखो चित्र 32) इसी काम को खड़े खड़े और चलते चलते अभ्यास लो।



चित्र नं0 32 – हुक पोजीशन

**(द) तैयारी की पोजीशन (Alert position)**– (नमूना साथ नकल) स्क्वाड की राइफल दाहिने कन्धे पर हो। जवानों को बताओ कि जब खतरा पैदा होने की समावना निकट हो तो जवानों को चाहिये कि तैयारी की पोजीशन बनायें।

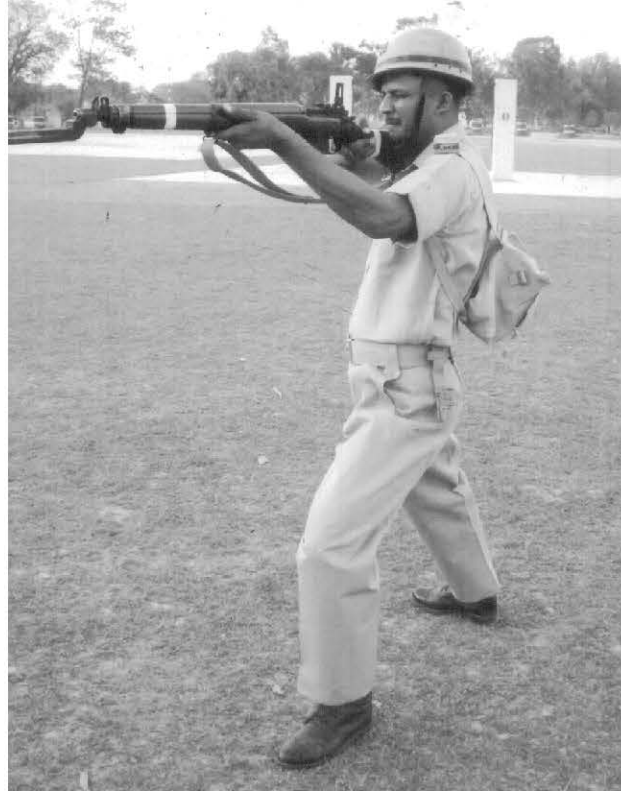
**तरीका**– दोनों हाथों से राइफल को इस तरह पकड़ो जैसे फायर करते समय पकड़ते हैं। दाहिना हाथ स्माल ऑफ दी बट और कलमे वाली अँगुली ट्रिगर गार्ड के अन्दर हो, बाँया हाथ आउटर बैन्ड से भी आगे ले जाओ तो अच्छा है। बट को दाहिने कूल्हे में या दाहिनी बगल में जैसी सहूलियत हो, जमाओ। मजल बदन के आगे तिरछे रूख पर थोड़ा नीचे की तरफ हो, सेफटी कैच आगे हो।

**8. अभ्यास**—पूरे काम का अभ्यास। हर पोजीशन से एलर्ट पोजीशन में आना (खड़े-खड़े और चलते-चलते अभ्यास कराओ।)

### **9. भाग दो**— फायरिंग पोजीशन और फायर करना

(नमूना बयान से) बताओ कि राइफल को ले जाने के बावजूद हर तरीके से फायरिंग पोजीशन लेने के लिये आवश्यक है कि तेजी से हरकत की जाय और जवान का पूरा ध्यान तारगेट पर हो और इतने भरोसे और पक्के इरादे से फायर करे कि पहली गोली ही दुश्मन को समाप्त कर दे।

**(अ) राइफल कन्धे में जमा कर फायर करना— (Shoulder Shot)** (साथ नकल) बताओ कि दुश्मन दूर हो या नजर की आड़ से ऊपर या नीचे हो तो राइफल को कन्धे में जमा कर फायर किया जाय। जवानों की राइफल दाहिने कन्धे पर ले जाने वाली पोजीशन में हो यदि ऐसी दशा में दुश्मन अचानक निकल आये तो राइफल को तेजी से फायरिंग पोजीशन में लाओ। बाये बाजू को बिल्कुल सीधा और दाहिना बाजू जमीन के समानान्तर ऊपर उठाओ। बाँया पाँव आगे रखते हुए तारगेट पर साइटों से काम लिए बिना सिधार्ई कायम करो और एक ही दबाव में ट्रिगर दबाओ। यदि दुश्मन सिधार्ई पर न हो तो फायरर दाहिना घुटना जमीन पर टेक सकता है। इससे यह भी लाभ होगा कि जवान खुद दुश्मन के लिये छोटा तारगेट बनता है यदि जमीन पर घुटना टेकने का मौका न हो तो बैरल को ही ऊपर या नीचे कर लिया जाय (देखो चित्र 33) और फिर चलते-चलते दोबारा भरा जाय।



चित्र नं0 33 राइफल कन्धे पर जमा कर फायर करना

**(ब) कूल्हे से फायर— (Hip Shot)**— (बयान से नमूना) बताओ कि जब दुश्मन फायर करने वाले की सिधार्ई (सतह) पर हो तो झट पट फायर करने के लिये राइफल को कूल्हे में जमाकर बैटल क्राउच (Battle Crouch) पोजीशन से फायर करना अच्छा होता है। फायर करने वाले के पैर बिल्कुल खुले हुए हों, बाँया पैर जितना हो सके आगे और उसमें खम, दाहिना पैर पीछे सीधा और तना हुआ हो,



शरीर कमर से आगे को इतना झुका हुआ कि उसका भार आगे वाले पैर पर हो, कन्धे अन्दर की तरफ झुके हुए हो।

**(स) सिध्दाई प्राप्त करना—** सिध्दाई प्राप्त करने के लिये बाँई कलाई पेटी का बक्सुआ, राइफल और सिर तारगेट की सीध में हो, जहाँ तक हो सके मजल नीचे झुकी हो क्योंकि गोली साधारणतया ऊँची लगती है। विशेष कर जब संगीन चढ़ी हो और जवान संगीन की झलक को देख कर फायर करता है तो राइफल की मजल अधिक ऊपर उठ जाती है।

जब तारगेट दिखाई दे तो जवान को चाहिये कि नजर को पूरी तरह उस पर जमाकर फुर्ती से फायर कर दे। पैर से भी फुर्ती से काम लेना आवश्यक है। यदि दुश्मन दाहिने या बांये दिखाई दे तो चटकी से घूम कर सिध्दाई प्राप्त करके फायर करना चाहिये। यदि दुश्मन पीछे हो तो बांये से पीछे मुड़ो।

**10. अभ्यास—** (अ) दूर दुश्मन पर कन्धे से फायर किया जाय। करीब दुश्मन पर बैटल क्राउच पोजीशन से फायर किया जाय।

(ब) V की शकल में अभ्यास। जवान V की शकल की पोजीशन में हों, प्रशिक्षक अकेले जवान को आगे बढ़कर चेक करे इसके लिये जवान को हरकत का रूख देखकर आगे बढ़ाओ। प्रशिक्षक जिस जवान की ओर संकेत करे वह खड़ा होकर ताली बजाये और फायर होने के बाद फायर की गलती बताये। प्रशिक्षक बदली करवा कर अभ्यास ले।

**11. संक्षेप—** पाठ की मोटी-मोटी बातें दोहराओ।

प्रशिक्षक शार्गिद के तौर पर। अभ्यास करने में प्रशिक्षक बनने वाला गलती बताये। पैर की हरकत में तेजी और फुर्ती पर अधिक ध्यान देना आवश्यक है—

**12. अन्तिम कार्य—** निरीक्षण और स्वस्थान।

व व व

## राइफल की चाल (MECHANISM)

**1. प्रारम्भिक कार्य—**निरीक्षण (राइफल, स्केल्टन राइफल और स्क्वाड का) स्केल्टन राइफल में 5 ड्रिल कार्ट्रिज बरो ट्रिगर दबाओ, सेपटी कैच आगे रहने दो। दूसरी स्केल्टन राइफल की बोल्ट और मैगजीन खोलो। स्क्वाड की राइफलें पीछे रखवाओ। लेकिन बोल्ट जवानों के साथ हो।

**2. दोहराई—** खुली हुई राइफल पर पुर्जों के नाम और काम का।

**3. उद्देश्य—** राइफल की चाल सिखाना है।

**4. सामान—** स्केल्टन राइफल, ड्रिल कार्ट्रिज और यदि उपलब्ध हो तो रेखा चित्र।

**5. बयान—** हर जवान को राइफल के हिस्से पुर्जों की आम जानकारी होनी चाहिए ताकि अभ्यास करते-करते वह इस योग्य हो जाय कि स्वयं ही राइफल के हिस्से पुर्जों की खराबी का पता लगाकर उसे दूर करके मुनासिब कार्यवाही कर सकें। और उसे हर बार अपने अधिकारियों से मदद लेने की आदत न पड़ जाय।

**6. सिखलाई का क्रम—** पाठ चार भागों में तरतीबवार सिखाया जायेगा।

**7. भाग एक—पीछे की चाल—**पीछे की चाल में काम करने वाले पुर्जों के नाम—खाली केस, एक्सट्रेक्टर, इजेक्टर, शार्ट और लॉग केम ग्रूव, मैगजीन और सहायक स्प्रिंग। बताओ कि पीछे की चाल चार बड़ी हरकतों से पूरी होती है—

अनलाक, एक्सट्रेक्ट, इजेक्ट और फीड।

**(अ) अनलाक (UNLOCK)—** (नमूना बयान से) प्रशिक्षक रेखा चित्र पर संकेतक को अनलाक पर रखे। जब बोल्ट नाब लीवर को उठाया जाता है तो बोल्ट बाँई तरफ को घूमकर काकिंग पीस के स्टड को ढकेलता है, जिससे कि वह स्टड पीछे को हटता है और लॉग केम ग्रुव से हटकर शार्ट केम ग्रुव में लग जाता है।

इससे स्ट्राइकर लगभग 1/8" पीछे हट जाता है (दिखाओ)। साथ ही बोल्ट के नीचे वाला स्टील लग राइफल की बाडी के बाँई तरफ बनी हुई तिरछी झिरी में नीचे को हरकत करता है जिससे बोल्ट लगभग 1/8" पीछे हट जाता है इस कार्यवाही को शुरू का खिंचाव या अनलॉक की कार्यवाही कहते हैं। (दिखाओ)।

**(ब) एक्सट्रेक्ट (Extract)** संकेतक को एक्सट्रेक्टर पर रखो, जब बोल्ट पीछे को खींचा जाता है तो एक्सट्रेक्टर जो खोखे के रिम के दाहिने हिस्से को पकड़े रहता है खोखे को पीछे लाता है। इस तरह एक्सट्रेक्टर की कार्यवाही होती है लेकिन यह कार्यवाही उस समय तक पूरी नहीं समझी जाती है जब तक केस चैम्बर से बाहर न निकल जाय (यह कार्यवाही दिखाओ)

**(स) इजेक्ट (Eject)**—संकेतक को इजेक्ट पर रखो, जब एक्सट्रेक्टर खोखे को पीछे खींचता है तो खोखे पर एक्सट्रेक्टर की पकड़ दाहिनी ओर होने के कारण खोखा बाँई ओर इजेक्टर स्कू से टकरा कर दाहिनी ओर निकल जाता है खोखे को सफाई से बाहर निकलने के लिये बोल्ट तेजी से खींचना चाहिये।

**(द) फीड (Feed)** संकेतक को फीड पर रखो, जब बोल्ट हेड को पूरा पीछे खींच लिया जाता है तो मैगजीन स्प्रिंग ऊपर वाले राउन्ड के पेंदे को बोल्ट हेड के सामने को उठा देती है, ताकि

जब बोल्ट को आगे किया जाय तो वह राउन्ड आगे जाने के लिये तैयार हो।

मैगजीन के अगले भाग पर एक सहायक स्प्रिंग होती है ताकि प्लेटफार्म ठीक सिधार्ई में रहे।

**8. अभ्यास**—स्क्वाड से पीछे की चाल पर प्रश्न—उत्तर करो।

**9. भाग दो**— आगे की चाल और ट्रिगर का कार्यक्रम — आगे की चाल भी चार बड़ी हरकतों में पूरी होती है—लोड, काक, लॉक और फायर।

**काम करने वाले पुर्जे**— बोल्टहेड, फुल बेन्ट, सियर, काकिंग पीस, स्ट्राइकर, बोल्ट रिब, स्टील लग, इन्कलाइन स्लाट, सियर का निचला आर्म, ट्रिगर की दोनों रिब, ट्रिगर, मेन स्प्रिंग, चैम्बर, कालर और रेसिस्टिंग शोल्डर ।

**(अ) लोड (Load)**— संकेतक को लोड पर लाओ —(बयान से नमूना)— जब बोल्ट को आगे ढकेला जाता है तो बोल्ट हेड का निचला हिस्सा सबसे ऊपर वाले राउन्ड के पेंदे पर लग कर उसे आगे ढकेलते हुये चैम्बर में ले जाता है यह कार्यवाही दिखाते समय राउन्ड का बुलट ही चैम्बर में जाना चाहिये। (राइफल काक मत करो)।

**(ब) काक (Cock)**— (संकेतक काक पर करो) बताओ कि बोल्ट को और आगे बढ़ाया तो काकिंग पीस का फुल बेन्ट सियर की नोक से लग जाता है। इस तरह जब तक बोल्ट आगे की तरफ बढ़ता है काकिंग पीस और स्ट्राइकर, रुके रहते हैं और मेन स्प्रिंग चैम्बर के पिछले भाग से कालर के बीच में दबी रहती है। इस कार्यवाही को काक कहते हैं। बोल्ट को दाहिनी तरफ मत घुमाओ।

**(स) लाक (Lock)**— (संकेतक को लॉक पर करो)— बताओ कि जब बोल्ट को बाँई तरफ घुमाया जाता है तो बोल्ट का रिब राइफल की बाडी की दाहिनी तरफ वाले रेसिस्टिंग शोल्डर पर दबाव डालता है जिससे ब्रीच पूरी तरह बन्द हो जाता है। इसके साथ ही बोल्ट का स्टील लग हरकत करके बाँई तरफ तिरछी झिर्से में फँस जाता है और लॉक की कार्यवाही पूरी हो जाती है।

**(द) फायर (Fire)**— (संकेतक को फायर पर करो) जब ट्रिगर दबाया जाता है तो ट्रिगर की दोनों रिब बारी—बारी सियर के निचले आर्म पर दबाव डालती है। जिससे ट्रिगर में दो दबाव होते हैं। पहला दबाव पड़ने पर सियर की नोक फुल बेन्ट के निचले भाग पर पहुँच जाती है और दूसरा दबाव पड़ने पर काकिंग पीस को छोड़ देती है। जिससे काकिंग पीस आजाद हो जाता है। मेन—स्प्रिंग स्ट्राइकर को आगे की तरफ धकेलती है, और वह कारतूस के पेंदे में लगी हुई कैप पर चोट मारता है जिससे फायर हो जाता है।

**10. अभ्यास**—प्रश्नोत्तर से।

**11. भाग तीन**— **(अ) सेपटी कैच का काम**— (बयान से नमूना) (काक की हुई पोजीशन) जवानों को बताओ कि जब राइफल पूरी तरह काक की हुई हो और सेपटी कैच पीछे खींचा जाय तो लाकिंग बोल्ट घूम कर काकिंग पीस की अगली झिर्से में अटक जाता है इस कार्यवाही से फुल बेन्ट सियर की नोक से अलग हो जाता है साथ ही लाकिंग पिन शार्ट केम युव में फँस जाती है।

**(ब) फायर कर चुकने की पोजीशन (Fired Position)**— सेपटी कैच को पीछे करते समय यदि काकिंग पीस फायर कर चुकने की पोजीशन में हो तो लाकिंग बोल्ट पीछे वाली झिर्से में और लाकिंग पिन शार्ट केम युव में ही अटक जाता है।

**(स) सेपटी कैच लगाना**— बताओ कि सेपटी कैच लगा देने से न तो बोल्ट उठाया जा सकता है और न ही काकिंग पीस पीछे किया जा सकता है।